नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन

परी कथा विशेषांक

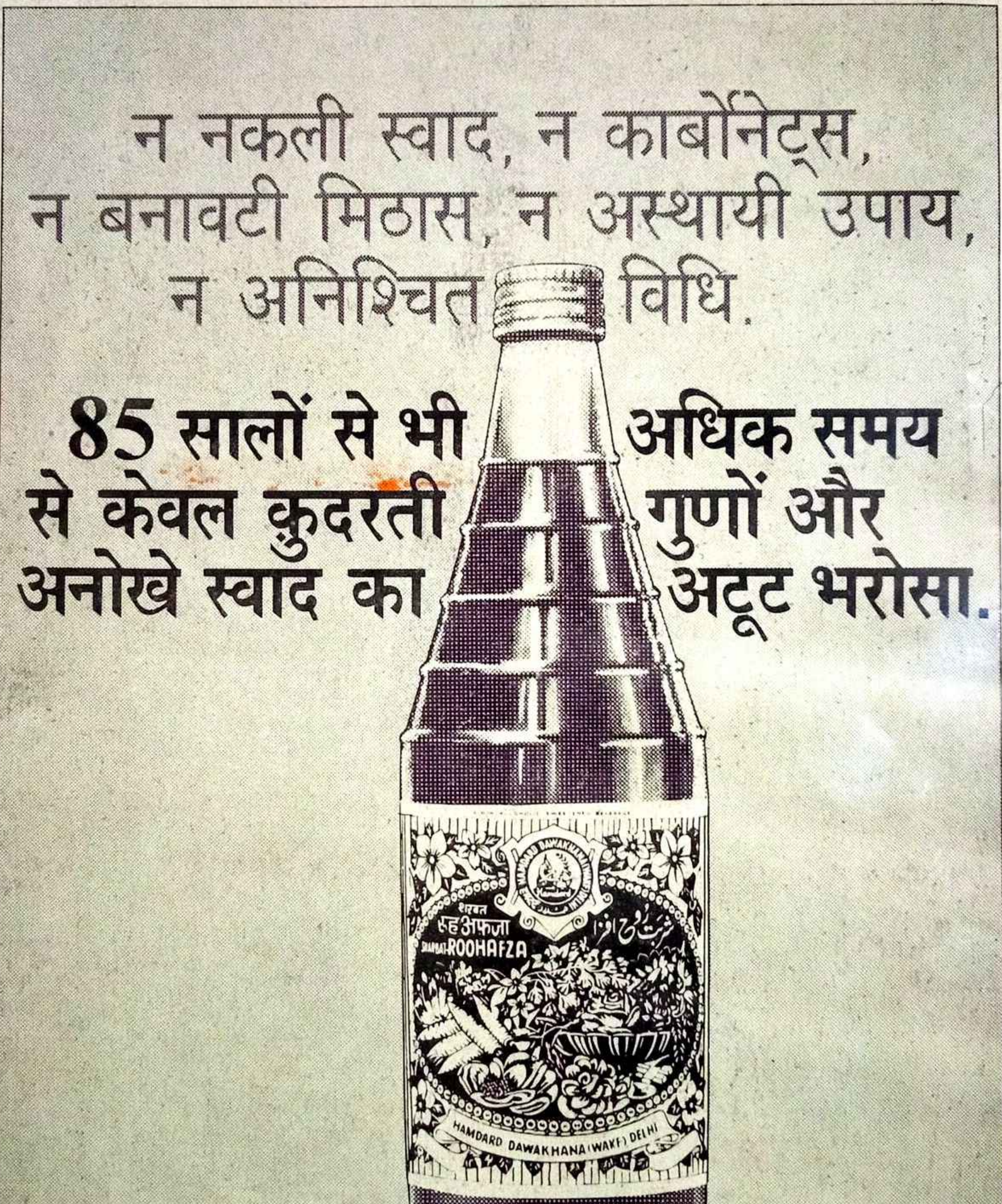
अपना देश प्रतियोगिता
५० पुरस्कार



हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

जुलाई '९३

पांच रुपए


न नकली स्वाद, न कार्बोनेट्स,
न बनावटी मिठास, न अस्थायी उपाय,
न अनिश्चित विधि.
85 सालों से भी अधिक समय
से केवल कुदरती गुणों और
अनोखे स्वाद का अटूट भरोसा.
शरबत
रूह अफ़ज़ा
SHARBAT ROOHAFZA
HAMDARD DAWAKHANA (WAKF) DELHI
शरबत
रूह अफ़ज़ा
हमदर्द



नये जमाने के नये कॉमिक्स
फोर्ट
कॉमिक्स
जून के सैट के कामिक्स
मुफ़्त
पूरे सैट के आठों कॉमिक्स की खरीद पर एक ओडियो कैसेट मुफ़्त
महापिशाचिनी
जाग उठा शैतान
MIDWAY
सिरघौंटा
जीको द ग्रेट
एक लाख की फिरौती
राक्षसी त्रिघटा
षड्यंत्र
आदमखोर आत्मा
प्रकाशक बुक फोर्ट 106-ई, प्रथम मंजिल, कमला नगर, दिल्ली-7
दूरभाष : 2923955, 2916804, 2910805, 2918117, 3715183, 3723771
टैलेक्स : 031-61028
फैक्स : 0091-11-2923955
वाइस मेल नं० : 3715183, 3723771
तार : सीरीहण्डकोस

आओ बात करें

राजा रवि वर्मा कौन थे, कहां के राजा थे ?

इतिहास की पुस्तकों में उनका नाम नहीं मिलेगा। हां, कला के इतिहास में राजा रवि वर्मा का नाम अमर है।

हिंदू घरों में सरस्वती या लक्ष्मी के चित्र तो अक्सर लगे रहते हैं। वीणा बजाती विद्या की देवी सरस्वती, श्वेत वस्त्र पहने, सोने का मुकुट धारण किए या देवी लक्ष्मी कमल के पुष्प पर खड़ी हुई, पास में श्वेत रंग का हाथी, सूंड में माला लिए। ये चित्र राजा रवि वर्मा ने बनाए थे। या आप जो देख रहे हैं उनके चित्रों की किसी कलाकार ने नकल की होगी।

एक समय था— कश्मीर की घाटियों से कन्याकुमारी के ढलानों तक, हर हिंदू घर में उनके चित्रों की फ्रेम कराकर पूजा की जाती थी। वे चित्र, किसी न किसी देवी-देवता या पुराण के प्रसंग पर होते थे।

और यह कैसी अनोखी बात है कि जिस रवि वर्मा को बेजोड़ ख्याति मिली, उसने किसी स्कूल-कालिज में कला की शिक्षा न पाई थी।

धुर दक्षिण में है केरल— त्रिवेंद्रम से कोट्टायम जाते हुए एक कस्बा आता है— किलिमानूर। रवि वर्मा का जन्म यहीं हुआ—२९ अप्रैल १८४८ को। त्रावणकोर के राज परिवार से इनके निकट सम्बंध थे। उन दिनों दरबार की भाषा संस्कृत थी। बालक रवि की शिक्षा भी संस्कृत में ही हुई। उन्होंने रामायण, महाभारत और कालिदास के ग्रंथ पढ़े। वह घर की दीवारों पर खड़िया और कोयले से चित्र बनाने लगे। लेकिन उनके गुरुजन यह सब पसंद न करते। बालक को डांट-डपट भी सहन करनी पड़ती।

तेरह वर्ष के हुए तो अपने मामा राजा वर्मा के साथ त्रिवेंद्रम गए। मामा सदा ही भांजे को बढ़ावा देते थे। त्रावणकोर नरेश, किशोर रवि से प्रभावित हुए। उन्होंने रवि को अपने राज्य में आश्रय प्रदान किया। महल के एक भाग में वह रहने लगे। वहां दीवारों पर धार्मिक चित्र बनाया करते।

प्रसिद्ध अंग्रेज चित्रकार थियोडोर जेनसन त्रावणकोर राज्य में राज परिवार के चित्र बनाने आए। जेनसन तैल रंगों से चित्र बनाया करते थे। यह विधि उन दिनों भारतीय चित्रकार नहीं जानते थे। युवा रवि वर्मा का जेनसन से परिचय कराया गया। किंतु जेनसन ने उन्हें कुछ भी सिखाने या अपनी विधि बताने से साफ इंकार कर दिया। तब रवि वर्मा ने दिन-रात लगन से मेहनत की। सब कुछ देख-सुन या पढ़कर ही सीखा। राजा रवि वर्मा के चित्रों की सराहना होने लगी। उनके बनाए चित्र पर गवर्नर का स्वर्ण पदक मिला। उनके चित्रों की कई प्रदर्शनियां लगीं।

बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने उनके चित्र देखे। महाराजा बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने रामायण पर आधारित चित्र बनाने को कहा। रवि वर्मा के बनाए चौदह चित्रों के लिए गायकवाड़ ने पचास हजार रुपए भेंट किए। सौ साल पहले यह राशि बहुत बड़ी थी।

रवि वर्मा ने देश का दौरा किया। खास तौर से उत्तरी भारत के राज्यों में वह घूमे। उन्होंने अनेक पौराणिक चित्र बनाए। उनकी प्रदर्शनी की। बम्बई में हुई इस प्रदर्शनी में उन्हें भरपूर प्रशंसा मिली। हर ओर से रवि वर्मा के चित्रों की मांग बढ़ने लगी, जिसे पूरा कर पाना सम्भव न था। तब उन्होंने बम्बई के घाटकोपर में लीथो छापाखाना लगाया। इस छापेखाने में रवि वर्मा के रंगीन चित्रों की प्रतियां छपती थीं, ताकि आम आदमी को भी वे मिल सकें। इस तरह धार्मिक चित्रों के बड़े पैमाने पर मुद्रण का युग शुरू हुआ। वह देश के पहले लीथोग्राफर और व्यावसायिक चित्रकार बन गए। जैसे-जैसे उनके पौराणिक चित्र छप-छपकर बाहर आते, उनका यश दिन दूना, रात चौगुना बढ़ता जाता।

राजा रवि वर्मा और रवीन्द्रनाथ— दो ऐसे महापुरुष हैं जो अपने गुरु स्वयं बने। हमारे लिए सीखने को बहुत कुछ छोड़ गए।

परी-कथा विशेषांक आपके हाथों में है, लिखना— कैसा लगा।

—तुम्हारे भइया

जयप्रकाश भारती

नंदन

जुलाई '९३

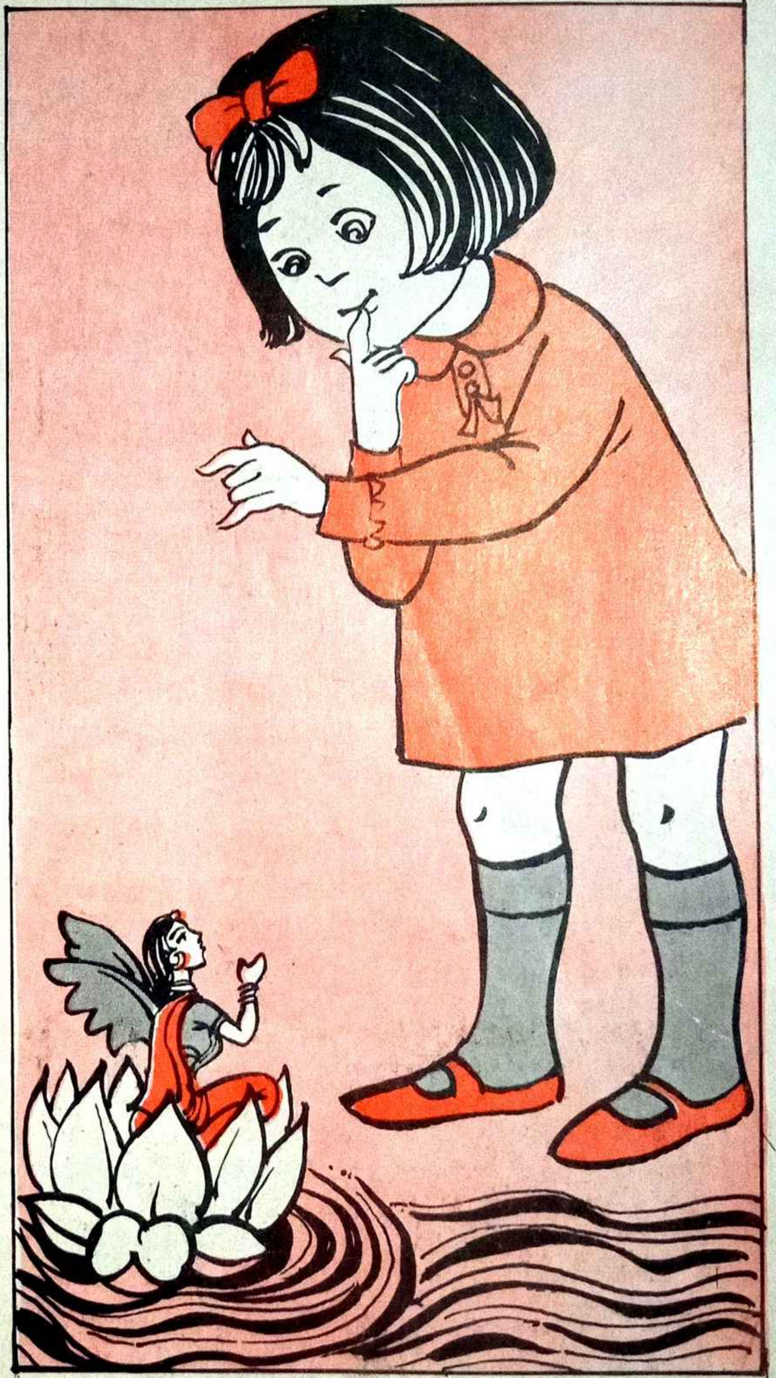
वर्ष : २९ अंक : ९

सम्पादक

जयप्रकाश भारती

परी कथा विशेषांक

कहां क्या है



कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : राजेन्द्रकुमार वधवा, श्यामसुंदर जोशी

एलबम : एस. एस. बृजवासी, इन्द्रजीत जुनेजा

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार

मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील

वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्र कुमार; चित्रकार : प्रशांत सेन

खो गई परी

—चंद्रभूषण

एक थी नन्ही परी। नाम था उसका ज्योति। परी लोक में वह सबसे सुंदर थी। इसलिए सभी परियां उसे बहुत प्यार करती थीं।

एक बार ज्योति, अपनी मां के साथ धरती पर आई। किसी हरी-भरी पहाड़ी के ऊपर से दोनों गुजर रही थीं। सुस्ताने के लिए वे थोड़ी देर के लिए वहीं उतर गईं। इधर-उधर घूमने लगीं।

घूमते-घूमते एक स्थान पर उन्होंने देखा, एक गुफा के पास कोई ऋषि आंखें बंद किए तप कर रहे हैं। कौतूहलवश दोनों छिपकर ऋषि को देखने लगीं। उन्हें ऋषि की पूजा विधि देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वे रोज वहां आने लगीं। पहले छिप-छिपकर ऋषि को देखती थीं। अब वे उनके पास तक आने लगीं, नाचने-गाने लगीं। ऋषि की पूजा में विघ्न पड़ने लगा। रोज वह सोचते—'परियों को यहां आने से कैसे रोका जाए?' भोलीभाली और दयालु होने के कारण, वह उन्हें शाप देना नहीं चाहते थे।

आखिर एक दिन ऋषि ने पूजा के बीच उनसे वहां आने का कारण पूछ ही लिया।

ज्योति की मां ने कहा—"ऋषिवर! हमें यह रमणीक पहाड़ी बड़ी प्रिय है। अतः हम रोज यहां आती हैं।"

ऋषि बोले—"तुम दूसरे लोक की हो, इसलिए धरती की सारी चीजें तुम्हें प्रिय लगती हैं। मैं तुम्हें यहां आने से रोकता नहीं। बस, एक चीज से बचकर रहना। कभी अकेली न घूमना। किसी मनुष्य के सामने न जाना। मुसीबत में फंस जाओगी।"

ऋषि के शब्द 'अकेली कभी न घूमना' ज्योति को अजीब लगे। वह ऋषि से बहुत कुछ पूछना चाहती थी किंतु ऋषि फिर से पूजा में लीन हो गए थे।

मन मारकर वे वापस अपने लोक की ओर उड़ चलीं। बीच-बीच में ज्योति अपनी मां से कहती—"मां! मां! ऋषि ने अकेली घूमने से क्यों मना किया है? क्या धरती के लोग बुरे होते हैं?"

ज्योति की मां बार-बार उसे डांटती—"ऋषि ने मना किया है, तो कोई न कोई तो बात होगी ही।" ज्योति की मां ने ऋषि की बात परी रानी को बता दी।

रानी ने सभी परियों को बुलाकर आदेश दिया—'आज से न कोई परी अकेली धरती पर जाएगी, न किसी मनुष्य के सामने पड़ेगी।'

ज्योति सो न सकी। बराबर सोचती रही कि आखिर ऋषि ने धरती पर अकेली घूमने से क्यों मना किया है? सोचते-सोचते उसे नींद आ गई। नींद में भी वह धरती के सपने देखती रही। कभी उसे राजकुमार मिलता, कभी हाथी। कभी वह फूलों की घाटी में उड़ती, कभी सरोवर में तैरती।

सुबह ज्योति की नींद खुली, तो उसने सपने की सारी बातें मां से कह डालीं। मां ने कहा—"बेटी।



धरती के बारे में सोचना भूल जाओ। वह हमारी दुनिया से भिन्न है।" कुछ देर बाद मां परी दरबार में चली गई। जाते-जाते ज्योति से कहती गई—"खबरदार, धरती के बारे में मत सोचना।" मां के जाने के बाद ज्योति की सहेली रूपा आ गई।

दोनों आंगन में जा बैठीं। मगर धरती के सपने ज्योति भुला नहीं पा रही थी। एकाएक उसने रूपा से कहा—"रूपा! चलो, धरती पर चलते हैं। मैंने सपने में जो कुछ देखा है, उसे दोबारा देखने को मन करता है। मां के आने से पहले ही लौट आएंगे।"

रूपा ने घबराते हुए कहा—"ना, बाबा ना! रानी मां ने धरती पर अकेले जाने से मना किया है।"

"अरे! अकेले कहां हैं? दो तो हैं। एक मैं, दूसरी तू।" — ज्योति ने आखिर रूपा को मना ही लिया।

दोनों तेजी से धरती की ओर उड़ चलीं। वहां एक घने जंगल में उतर गईं। पास ही नदी बह रही थी। नदी में हाथी पानी पी रहे थे। ज्योति ने रूपा को हाथी दिखाए। दोनों कुछ देर जंगल में घूमकर सुरक्षित अपने लोक लौट गईं।

अब तो मां के दरबार जाने के बाद दोनों रोज ही धरती पर घूमने आने लगीं। रोज नए-नए स्थानों पर घूमतीं। नई-नई चीजें देखतीं। नए-नए फल-फूलों का स्वाद लेतीं। कहीं कोई परेशानी न होती।

एक दिन की बात—ज्योति और रूपा धरती पर आईं और एक नए जंगल में उतर गईं। वहां एक झरना था। ज्योति ने रूपा से कहा—"आओ, इस झरने में नहाएं।" मगर रूपा ने मना कर दिया। ज्योति अपने दोनों पंख एक चट्टान पर रखकर, नहाने लगी। रूपा पास ही घास पर लेट गई। तभी एक तीर उसके पास आकर गिरा। वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। ज्योति को पुकारकर सावधान करने ही वाली थी कि घोड़े पर सवार एक राजकुमार को सामने से आते हुए देखा। वह झट से आकाश में उड़ चली। राजकुमार ने दो-तीन तीर उसकी ओर छोड़े, पर उसे न लगे।

ज्योति को इस घटना का पता तब चला, जब वह नहाकर झरने से बाहर निकली। तब तक राजकुमार ने उसके दोनों पंख चट्टान से उठा लिए थे। यह देख ज्योति परेशान हो उठी। पंखों के बिना तो वह उड़ ही नहीं सकती थी। तभी उसे उस रात देखे सपने की





याद आई। सपने में उसने राजकुमार को भी तो देखा था। यह याद आते ही उसके मन का भय कुछ कम हुआ। सामने आकर उसने राजकुमार से अपने पंख मांगे। राजकुमार उसे देखकर बोला—"अब पंख वापस नहीं मिलेंगे। हम तुम्हें राजमहल ले चलेंगे, जहां तुम हमारी रानी बनोगी।"

ज्योति रोने लगी। पर वहां उसे बचाने वाला कोई नहीं था। उसे अपनी मां और ऋषि के वचन याद आने लगे। मां की बात न मानने का नतीजा उसके सामने था।

ज्योति को जबरदस्ती राजमहल में लाकर एक शानदार कमरे में बंद कर दिया गया। कह दिया गया—'या तो शादी के लिए दस दिन में 'हां' कर दो, वर्ना इसी कमरे में बंद रहो।'

इधर रूपा परी लोक जाकर, सीधे ज्योति के घर गई। वहां उसकी मां बहुत परेशान थी। रूपा ने एक सांस में सारी बातें उसे बता दीं। धरती पर ज्योति के पकड़े जाने की खबर से पूरे परीलोक में कोहराम मच गया। ज्योति को मुक्त कराने के लिए तरकीबें सोची जाने लगीं। अंत में फैसला हुआ कि परियां उसी ऋषि के पास जाएं और ज्योति की मुक्ति का उपाय पूछें।

सभी परियां ऋषि के पास पहुंचीं। उन्हें चिंतित देख, ऋषि ने भांप लिया कि ये किसी गहरे संकट में फंस गई हैं। उन्होंने शांति के साथ परियों की बातें सुनीं। आंखें बंदकर देर तक कुछ सोचते रहे। फिर बोले—"तुमने मेरी बात पर ध्यान न देकर बड़ी गलती की है। भविष्य में धरती पर न आने का वायदा करो, तो उपाय बताऊं।"

परियों ने वायदा किया, तो ऋषि ने कहा—"इस पहाड़ी की तलहटी में काले रंग का एक दैत्य रहता है। मेरा नाम बताकर उससे सहायता की याचना करो। वही ज्योति को मुक्त कराएगा।"

परियां पहाड़ी की तलहटी की ओर उड़ चलीं। वहां एक गुफा में उन्हें काले रंग का दैत्य उदास बैठा मिला। परियों ने ऋषि का नाम बताकर उसे आने का कारण बताया, तो दैत्य की आंखों में चमक आ गई। बोला—"मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करूंगा। किंतु मैं अकेला रहते-रहते परेशान हो गया हूं। यदि तुम में से कोई मुझसे विवाह करने पर राजी हो, तो ज्योति को छुड़ा लाऊं।"

परियां असमंजस में पड़ गईं। अब उन्हें लगा कि धरती पर आना कितना महंगा है। किंतु ज्योति को मुक्त कराना आवश्यक था। अतः परियों ने सोच-समझकर दैत्य को आश्वासन दिया—"ठीक है, परी लोक जाते ही हम तुम्हारे विवाह का प्रबंध कर देंगी।"

दैत्य प्रसन्न हो उठा। गुफा से बाहर आकर उसने एक भारी भरकम वृक्ष उखाड़कर कंधे पर रखा और हुंकारता हुआ राजमहल की ओर चल दिया। वह जोर-जोर से चीख रहा था—"राजा, परी को छोड़ दे। राजा, परी को छोड़ दे।"

चारों ओर भगदड़ मच गई। रास्ते में पड़ने वाले गांव-शहर खाली होने लगे। सैनिकों ने उसे रोकना चाहा, किंतु दैत्य ने फूंक मारकर सब को दूर-दूर छितरा दिया। समाचार राजा तक पहुंचा, तो वह घबरा उठा। ज्योति को तुरंत मुक्त कर दिया। उसके पंख भी लौटा दिए।

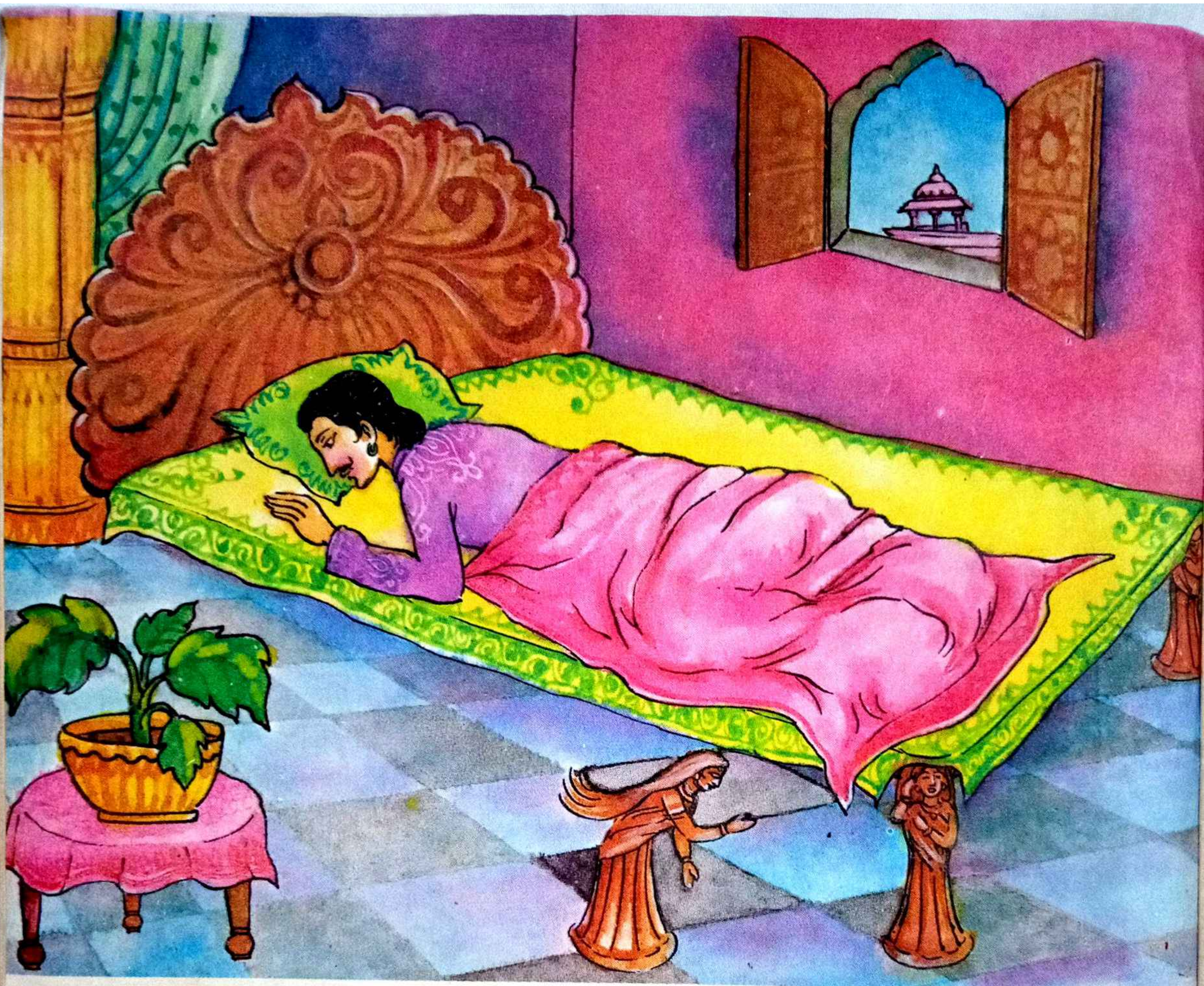
पंख मिलते ही ज्योति तुरंत परी लोक की ओर उड़ गई। दैत्य ने उसे देखा, तो वापस गुफा में पहुंचा। किंतु वहां कोई न था। ज्योति का परी लोक की ओर जाना परियों ने भी देख लिया था। वे दैत्य के आने से पहले ही उड़ गई थीं।

बेचारा दैत्य धम्म से जमीन पर बैठ गया। सुनते हैं, वह आज तक गुफा में बैठा परियों की प्रतीक्षा कर रहा है कि वे उसका विवाह करा देंगी, किंतु परियां फिर धरती पर नहीं आईं। ●



तुलसी जयंती पर विशेष

संत तुलसीदास



पेड़ चांदी का

—जयप्रकाश भारती

एक था बढ़ई। नाम था शंकर। उसे काम-धंधा करने की आदत न थी। हर रोज उसकी पत्नी कुल्हाड़ी देकर जंगल में भेजती। वह जंगल में पहुंचकर किसी न किसी पेड़ के नीचे पड़कर सो जाता। शाम होते-होते उसका आलस दूर होता, तो जहां-तहां से थोड़ी-सी सूखी लकड़ियां बटोर लेता। बस, उन्हीं को बांधकर ले जाता। उन लकड़ियों के कितने पैसे उठते। घर में कभी रोटी बनती, कभी भूखे ही रहना पड़ता।

एक दिन शंकर की पत्नी बहुत बिगड़ी। कहने लगी—"तुम्हारे घर में आ कर मेरे तो भाग्य ही फूट गए। आज अगर तुम भरपेट आटा-दाल न ला सको तो शाम को घर में कदम न रखना।"

शंकर ने कुल्हाड़ी कंधे पर रखी। तेज-तेज कदमों से जंगल की ओर चल दिया। सामने ही एक टेढ़ा-मेढ़ा पेड़ देखा। सोचने लगा—'इसे काट भी लूं तो इस की लकड़ी किसी काम न आएगी। कोई सीधा लम्बे तने वाला पेड़ काटना चाहिए।'

शंकर यह सोच ही रहा था कि तभी आवाज आई—"शंकर, तुम मुझे काट लो। मेरी लकड़ी से चार पाये बना लेना। उन्हें बेचकर तुम मालामाल हो जाओगे।"

पहले तो शंकर डर गया—भला पेड़ भी इस तरह बोलते हैं कहीं, पर जब दुबारा उसने यही आवाज सुनी,

तो उसे ढाढ़स बंधा। उसने पूछा—"चार पायों से कितने रुपए मिल जाएंगे—बहुत हुआ,तो दो जून की रोटी का जुगाड़ हो जाएगा।"

पेड़ बोला—"नहीं शंकर, तुम भोले हो। जो कोई पाये खरीदे, उसे कीमत मत बताना। कह देना—इन पायों से ही पूछ लो इनकी कीमत, बस।"

शंकर ने पेड़ काटना शुरू कर दिया। दोपहर होने तक उसने काफी लकड़ी काट ली। घर आकर उसने चार बढ़िया पाये बना डाले। हर पाया पुतली की आकृति का बनाया। अगले दिन उन्हें लेकर शहर के बाजार में गया।

बाजार में चहल-पहल थी। खरीदार भी काफी थे। शंकर बढ़ई अपने पायों को लेकर बैठा रहा। कई ग्राहक आते रहे और उन पायों की कीमत पूछते रहे। शंकर कहता— "इनसे ही पूछ लो।"

वे पाये कह देते— "एक पाया पचास हजार का, यानि चार पाये दो लाख के।"

भला ऐसा महंगा सौदा करने वाला ग्राहक कहां से आता? शाम हो गई। शंकर रुआंसा मुंह लिए बैठा रहा। लेकिन वहां के राजा का आदेश था कि किसी का माल न बिके, तो राजकोष से धन देकर उसका माल मुंहमांगे दाम पर खरीद लिया जाए।

बाजार उठने लगा, भीड़ छंट गई। राज कर्मचारी शंकर के पास आए। उससे पूछा— "भई बढ़ई, तुम इन चार पायों को कितने में दोगे?"

शंकर बोला— "इन पायों से ही पूछ लो कीमत।"

कर्मचारियों ने पूछा,तो उन्हें वही बंधा-बंधाया उत्तर मिला— 'एक पाया पचास हजार का, यानि चार पाये दो लाख के।'

एक कर्मचारी दौड़ा-दौड़ा राजा के पास गया। राजा को बताया कि बाजार में एक बढ़ई बैठा है। उसके पास चार पाये हैं। पाये अपनी कीमत खुद बताते हैं— दो लाख रुपए। राजा को भी आश्चर्य हुआ। इतने महंगे पाये बेच रहा है। कहा— "नियम न तोड़ो, खरीद लो।"

शंकर को दो लाख रुपए मिल गए। हवा के पंखों पर सवार हो, उसने घर की राह पकड़ी। उसकी दरिद्रता दूर हो गई।

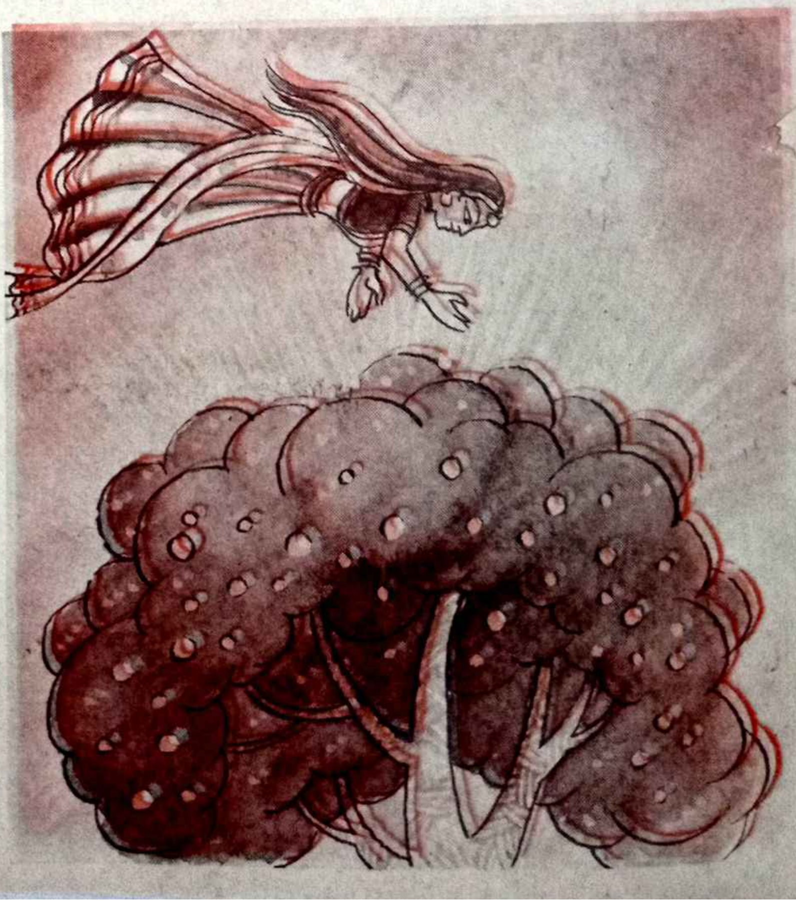
राजा ने उन पायों से बढ़िया पलंग बनवा लिया। रात हुई, तो राजा ने उसी पलंग पर सोने का निश्चय किया।

पलंग राजा के सोने के कमरे में बिछा दिया गया। सब कामों से निबट, राजा लेट गया। जल्दी ही नींद आ गई। एक पहर बीता था कि अचानक राजा को लगा जैसे भूचाल आया हो। पलंग हिला और एक झटके के बाद ठीक हो गया। राजा की नींद टूट गई। लेकिन वह चुपचाप पलंग पर ही लेटा रहा।

तभी राजा ने सुना, एक पाया कह रहा था— "भाइयो, मैं चली सैर को। जरा मेरा बोझ भी संभाले रहना।"

तभी पहला पाया पुतली बन, हवा में उड़ने लगा और धीरे से कमरे से बाहर चला गया। पुतली इधर-उधर उड़ते-उड़ते काफी दूर जंगल में जा पहुंची। वहां उसने चांदी का एक पेड़ देखा, जिसमें हीरे-मोती लगे हुए थे। कुछ देर बाद वह लौट आई। पाये के रूप में अपनी जगह आ जुड़ी। बाकी तीन पायों ने उससे पूछा— "क्यों री, बाहर जाकर क्या देखा?"

पुतली बोली— "मैं उड़ते-उड़ाते पचीस कोस दूर जंगल में चली गई। वहां चांदी का एक पेड़ देखा,



उस पर लगे हीरे-मोती रात में भी दमक रहे थे।"

दूसरे पाये ने कहा— "ऐसा पेड़ तो राजा के महल में होना चाहिए। जंगल में उसका क्या काम!"

पुतली कहने लगी— "तुम ठीक कहती हो। लेकिन राजा उसे अपने महल में आसानी से ला नहीं सकता। उस पर एक दैत्य रहता है। कोई पेड़ के पास भी आए, तो दैत्य उसे मार डालता है।"

तभी दूसरा पाया बोला— "अरी बहनो, अब मैं भी तनिक घूम-फिर आऊं। तुम मेरा भार संभाले रहना।"

पलंग हिला और फिर पहले की तरह हो गया। वह पाया भी पुतली बन, कमरे के बाहर उड़ गया। घंटा भर बीता होगा कि दूसरी पुतली वापस आई। बाकी तीनों पायों ने उससे पूछा— "क्यों बहन, तुम क्या देखकर आई?"

वह बोली— "राजा के खजाने में पहरेदार सोए पड़े थे। तभी तीन चोर चोरी करने घुसे। मैंने फूंक मारकर उन्हें बेहोश कर दिया है। अब वे सुबह तक जहां के तहां रहेंगे। सुबह को पकड़े जाएंगे।"

तभी तीसरी बार पलंग हिला। तीसरा पाया भी पुतली बन गया। वह पुतली बाहर उड़ गई। एक पहर बीतते न बीतते पुतली वापस आई। आकर झटपट अपनी जगह लग गई।

दूसरे पायों ने उससे पूछा— "तुम क्या देखकर आई?"

वह बोली— "राजधानी में सभी तरफ लोग सोए पड़े हैं, सबके घर अंधेरा है। एक घर में रोशनी थी। वहां मैंने देखा कि एक मां का अकेला बेटा बहुत बीमार है। वह आज ही मर जाएगा। हां, राजा चाहे तो उसे बचा सकता है। पर वह तो सोया पड़ा है।"

लेकिन राजा तो बराबर जाग रहा था। वह तुरंत उठा। उसके कक्ष में कुछ दवाएं हमेशा रखी रहती थीं। राजा ने दवाइयां लीं और जा पहुंचा उस घर में, जहां बालक बीमार था। उसने बच्चे को देखा और दवाई दे दी। थोड़ी ही देर में बालक की हालत काफी सुधर गई।

मां ने तो राजा को पहचाना नहीं, लेकिन उसने आशीर्वाद दिया— "बेटा, जैसे तुमने मेरे बेटे को मौत के मुंह से बचाया, इसी तरह भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे।"

वहां से चलकर राजा अपने खजाने पर पहुंचा। देखा— सचमुच वहां पहरेदार सोए पड़े हैं और तीन चोर बेहोशी की हालत में हैं। राजा ने कड़कदार आवाज में पहरेदारों को जगाया, तो उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। खैर, तब तक सवेरा हो गया था। इसलिए चौथा पाया कहीं जा न सका। अगले दिन चोरों को और पहरेदारों को राजा ने सजा दी।

अब राजा ने तय किया कि पुतलियों की दो बातें तो सच निकलीं। अब तीसरी बात की जांच भी करनी चाहिए। वह कई सैनिकों के साथ जंगल में जा पहुंचा, जहां चांदी का पेड़ था। राजा ने वैसा पेड़ पहले कभी न देखा था। लेकिन जैसे ही वह पेड़ के निकट पहुंचा, भारी-भरकम दैत्य सामने आ खड़ा हुआ।

दैत्य बोला— "राजन, मुझे पता है, तुम इस पेड़ को लेने आए हो। मगर मेरे रहते तुम इसे नहीं ले जा सकते। यह पेड़ मेरा है।"

राजा को पुतली की बात याद थी कि ऐसे सुंदर पेड़ का भला जंगल में क्या काम! इसे तो राजमहल में होना चाहिए।

उसने तय कर लिया कि जैसे भी हो, वह पेड़ को जरूर ले जाएगा। राजा ने म्यान से तलवार खींच



ली। दैत्य तो पहले से ही तैयार था। दोनों में जमकर युद्ध शुरू हो गया। दैत्य तो दैत्य ही था। उसने राजा और उसके सैनिकों को बंदी बना लिया और एक गुफा में कैद कर दिया।

इसके बाद दैत्य ने स्वयं राजा की पोशाक पहन ली और वैसा ही रूप बना लिया। वह राजधानी में जा पहुंचा। कोई उसे पहचान न सका। सबने समझा कि राजा ही है। लेकिन असली राजा का घोड़ा बहुत परेशान था। उसने रानी को चुपके से जाकर बता दिया— "यहां से भाग जाओ। यह असली राजा नहीं, दैत्य है दैत्य।"

रात में रानी अपने राजकुमार के साथ उसी घोड़े पर सवार हो, चल दी। लेकिन दैत्य राजा को पता चल गया। वह तलवार लेकर घोड़े पर सवार हो, रानी के पीछे चल दिया। रानी गुफा के पास जा पहुंची। मगर गुफा पर भारी-भरकम पत्थर अड़े थे। अब क्या हो? तभी चमत्कार-सा हुआ। अचानक रानी के सामने चार पुतलियां लहराने लगीं। बोलीं— "रानी जी, चिंता मत कीजिए। दैत्य के आने से पहले हम राजा को छुड़ा लाती हैं। आप आंखें बंद कर लीजिए।"

रानी ने आंखें बंद कर लीं। ऐसा लगा, जैसे किसी ने भारी-भरकम पत्थरों को खाई में लुढ़का दिया हो। शायद यह पुतलियों का कमाल था। राजा की आवाज सुन, रानी ने आंखें खोल दीं।

तभी दैत्य वहां आ पहुंचा। उसने राजा पर भयंकर वार किया, लेकिन राजा बच गया। शायद बीमार बालक की मां के आशीर्वाद से ही बचा।

फिर से दैत्य के साथ लड़ाई होने लगी। इस बार राजा के सैनिकों ने दैत्य को घेर लिया। उसका काम तमाम कर दिया। बाद में चांदी का वह पेड़ वे महल में ले आए। राजमहल में उस पेड़ को लगा दिया गया।

उस पेड़ के कारण राज्य में बहुत खुशहाली रही। प्रजा भी सुखी रही और राजा के राज्य में शांति रही। लेकिन इसके बाद पाये वाली पुतलियों को बोलते राजा ने कभी नहीं सुना। रानी के लाख पूछने पर भी राजा ने पुतलियों का रहस्य कभी नहीं बताया। ●

घमंड भरी

—डा. श्यामसिंह शशि

नागालैंड पूर्वोत्तर भारत का रमणीक प्रदेश है। कहते हैं, माओ नगा कबीले में प्रत्येक वर्ष तीन वर्गों की पंचायतें बुलाई जाती थीं। पशु-पक्षी और इंसान दूर-दूर से आते और अपनी-अपनी जातियों से मेल-मिलाप करते। कभी-कभी परियां भी आ जातीं। ये कभी माओ स्त्रियों की पंक्ति में बैठ जातीं, तो कभी मोरनियों में घुलमिल जातीं। यह विचित्र प्रकार का मेला होता। एक ओर जंगल का राजा शेर दहाड़ता, तो दूसरी ओर मोर नाचते। कहीं हाथी अपनी सूंड आसमान की ओर सीधी तानते, तो कभी सियार हुआं-हुआं करने लगते। अनेक पशु-पक्षी अपना करतब दिखाते और एक-दूसरे का मनोरंजन करते। माओ बच्चे सबसे ज्यादा आनंद लेते।

एक बार हिमालय पहाड़ी पर पंचायत लगी थी। माओ सम्राट सोने के सिंहासन पर बैठा था। सिंहासन के एक तरफ शेर और दूसरी ओर गिद्धराज बैठा था। सामने तीनों जातियों के समूह उपस्थित थे।

माओ मंत्री ने एक-एक करके नाम पुकारे, तो पता चला कि एक युवती समूहों से अलग खड़ी है। मंत्री ने पूछा— "तुम्हारा नाम क्या है?"

"पिरखा परी।" —वह बोली।

"तुम वहां क्यों खड़ी हो?"— मंत्री ने फिर पूछा।

—"मैं तीनों वर्गों से अलग हूं और सबसे अधिक सुंदर हूं।"

वह बड़ी अकड़ के साथ बोली— "देखते नहीं, मेरे पंख पक्षियों से श्रेष्ठ हैं। इंसानों से सुंदर मुख है और हथिनी से आकर्षक चाल है। फिर मैं इनके साथ क्यों बैठूं?"

परी के बयान से सब चुप हो गए। कुछ देर बाद मोर बोला— "मेरे पंख भी बहुत प्यारे हैं।" एक माओ युवती बोली— "मेरे रूप का जादू सब जानते हैं।" हथिनी भी पीछे न रही। वह बोली— "तुमने गज-गामिनी की चाल नहीं देखी?"

परी ने रोब दिखाते हुए कहा— "हूं, सारी दुनिया परियों को देखने को तरसती हैं। क्या तुम्हें भी कोई देखना चाहता है ? मैं जहां चाहूं, उड़कर चली जाती हूं। जैसा चाहूं, वेश बदल लेती हूं। किसी भी लोक में जा सकती हूं।"

माओ सम्राट ने कहा— "अब बहस की जरूरत नहीं। सभा विसर्जित की जाती है। अगले साल आज के ही दिन फिर मिलेंगे।"

सब अपने-अपने इलाकों में चले गए।

वर्ष की समाप्ति पर फिर पंचायत बैठी। बड़ी संख्या में पशु-पक्षी तथा आदिवासी आए थे। तीनों जातियों के लोग अलग-अलग घेरों में बैठे थे। व्यवस्था बेहतर तो थी, फिर भी कुछ न कुछ शिकायतें सुनने में आ रही थीं।

इस बार मंत्री का स्पष्ट आदेश था कि कोई भी प्राणी अलग खड़ा नहीं होगा। सब किसी न किसी समूह में बैठेंगे। जो किसी समूह में नहीं बैठेगा, उसे पंचायत दंड देगी। सब परियां भी युवतियों के साथ जाकर बैठ गईं। पिरखा परी सोचने लगी—'कहां जाऊं?' वह पहले पक्षियों के समूह की ओर बढ़ी, तो मोरनी चिल्लाई—"नहीं-नहीं, तुम हमारे साथ नहीं बैठ सकतीं, क्योंकि तुमने पिछली सभा में हमारा अपमान किया था।"

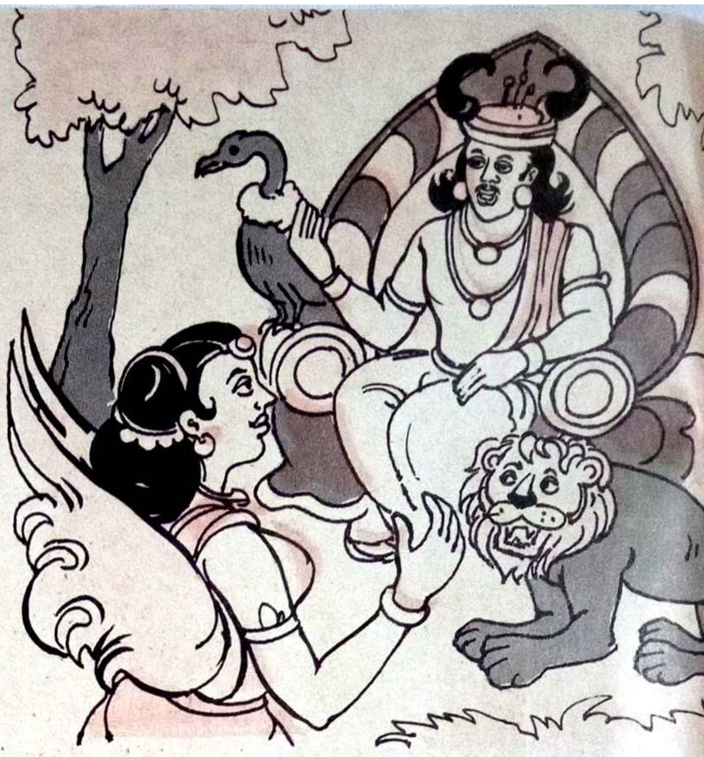
परी फिर माओ सुंदरियों की ओर मुड़ी, तो एक युवती बोली— "बड़ी आई हमारे साथ बैठने को। तुम तो अपने को हम सबसे सुंदर समझती हो। पिछली बार तुम्हारे कटाक्ष से हमें अपमानित होना पड़ा था। अब हम तुम्हें अपने साथ नहीं बिठाएंगे। ऐसे घमंडियों का माओ समाज में कोई स्थान नहीं है।"

पिरखा परेशान थी। उसे कुछ नहीं सूझ रहा था। कहां जाए ? स्वयं उसकी जाति की दूसरी परियां उसे चिढ़ा रही थीं।

एक परी बोली— "हमने तो कभी आदिवासी युवतियों से घृणा नहीं की।"

दूसरी बोली— "जब धरती पर उतर आई, तो धरती के इंसानों से क्या परहेज ?"

तीसरी ने कहा— "अरे, आकाश पर कब तक



उड़ा जा सकता है ! कभी तो किसी न किसी लोक में उतरना ही होता है।"

चौथी उपेक्षित स्वर में बोली— "मरने दो अकेली को। अपने को बड़ी हूर की परी समझती है।"

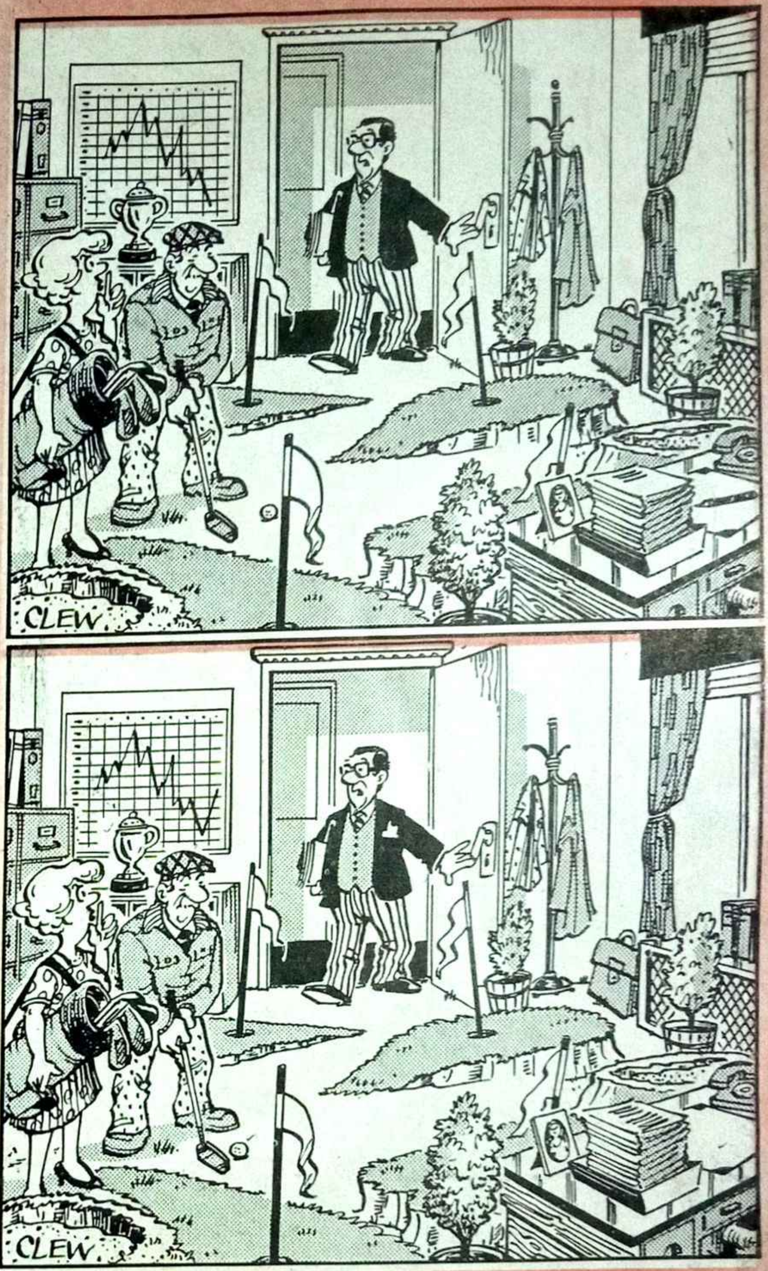
पिरखा कातर नयनों से तीनों समूहों को निहार रही थी। कोई भी उसे अपने यहां शरण देने को तैयार नहीं था। उसने अंत में हथिनी की ओर देखा। वह जोर से हंसी और बोली— "वाह री हूर की परी, अब पशुओं में शामिल होना चाहती है। जा, जा, तुझ से यह शूकरी सुंदर है, जो हमारे साथ बैठी है और बड़े प्यार से अपने बच्चों को दूध पिला रही है। तू तो किसी बच्चे को जन्म भी नहीं दे सकती। जा, तेरा स्थान तो पशुओं में भी नहीं है।"

सभा में पिरखा अकेली खड़ी थी। कोई सहायता के लिए नहीं आ रहा था। मंत्री उठे और सम्राट से पूछा—"महाराज, इस परी को क्या सजा दी जाए, ताकि उसका घमंड सदा के लिए चूर-चूर हो जाए ?"

सम्राट ने उपस्थित प्राणियों से सलाह मांगी। फिर निर्णय देते हुए कहा— "आज से हमारे राज्य में कोई परी दिन में दिखाई नहीं देगी। वह रात को ही हमारी धरती पर उतर सकती है।"

कहते हैं, तब से इस इलाके में परियों ने दिन में उतरना बंद कर दिया। ●

आप कितने बुद्धिमान हैं ?



यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए।**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए [illegible] समय—**१५ मिनट।**



कहानी लिखो : ११६

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १५ जुलाई '९३ तक **कहानी लिखो-११६, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा। परिणाम : सितम्बर '९३ अंक

चित्र-पहेली : ११६

बाबा आए, क्या-क्या लाए : विषय पर चटख रंगों से एक चित्र बनाइए। चित्र के पीछे अपना नाम, उम्र व पता साफ-साफ लिखिए और १५ जुलाई '९३ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा। परिणाम : अक्तूबर अंक

पहचानो राजकुमार

— चन्द्रदत्त 'इन्दु'

पुरानी बात है। आयरलैंड के राजा का एक सुंदर बेटा था—चार्ल्स। नीली-नीली आंखें, सुनहरी बाल, बिलकुल गुलाब की पंखुड़ियों जैसे गुलाबी होंठ। उसकी किलकारी से राजमहल गूंज उठता था।

राजकुमार बड़ा होने लगा, तो पढ़ाई-लिखाई भी शुरू हो गई। उसकी रुचि किताबों में ज्यादा थी। उसका बाल मन महल में नहीं रहता था। वह हमेशा परियों, जादूगरों की रोमांचकारी कहानियों में दिन भर खोया रहता था।

धीरे-धीरे समय बीता। राजकुमार ने युवा अवस्था की दहलीज पर पैर रख दिया, मगर अभी भी उसने परियों के सपने देखने नहीं छोड़े।

फिर एक दिन राजकुमार ने निश्चय किया—'मैं परियों से मिलकर आऊंगा।' राजकुमार की बात सुन, राजा-रानी हैरान-परेशान। सभी ने बहुत समझाया, मगर राजकुमार नहीं माना। एक दिन अपने घोड़े पर बैठकर अकेला, परियों की खोज में निकल पड़ा। कहां जाना है, यह तो राजकुमार को पता नहीं था।

वह लोगों से परियों का पता-ठिकाना पूछता रहा, मगर कोई क्या बता पाता। किसी ने परी देखी ही नहीं थी। लोग राजकुमार को सिर फिरा समझते। और हंसकर कह देते—'भइया, आगे जाओ। सुना है, आगे पर्वत की तलहटी में चांदनी रात में परियां घूमने आती हैं।'

मन में विश्वास हो, तो असम्भव भी सम्भव हो जाता है। राजकुमार को भी लगा—पर्वत की तलहटी में जाकर परियों से मिलना चाहिए। बस, उसने घोड़े को एड़ लगाई और चल दिया उस ओर। रास्ता काफी लम्बा था, ऊबड़-खाबड़ भी। वहां पहुंचते-पहुंचते सांझ हो गई।

सामने एक मैदान था। हरी घास का बिछौना दूर तक बिछा था। राजकुमार सोचने लगा—'परियां जरूर इसी मैदान में आकर खेलती होंगी।' यह सोचकर उसने घोड़े को एक पेड़ से बांध दिया और स्वयं सावधान होकर पेड़ की मोटी डाल पर जाकर बैठ गया, ताकि परियां उसे देखकर छिप न जाएं।

बैठे-बैठे काफी देर हो गई। राजकुमार अलसाने लगा, मगर अभी दूर-दूर तक परियों का नाम-निशान नहीं था। बैठे-बैठे राजकुमार को झपकी-सी आने लगी। तभी उसने देखा—पर्वत की चोटियों से उतरकर भेड़ों का एक झुंड और एक चरवाहा नीचे मैदान की ओर आ रहा है। चरवाहे के हाथ में एक बांसुरी थी। वह धीरे-धीरे बांसुरी बजाता हुआ आ रहा था।

इतनी रात में भेड़ें चरकर आ रही हैं, यह देखकर राजकुमार को आश्चर्य हुआ। वह मन में कुछ सोच रहा था। तभी उसने देखा—सारी भेड़ें उस मैदान में आकर रूक गईं। चरवाहा एक चट्टान पर बैठकर, मस्ती से अपनी बांसुरी बजाने लगा। ऐसी मोहक और सुरीली तान कि राजकुमार अपने आपको रोक नहीं पाया। वह पेड़ से उतरकर पहुंचा चरवाहे के पास।

राजकुमार ने अपना परिचय देते हुए बताया—"मैं परी ढूंढ़ने निकला हूं। मुझे बताया गया था कि पर्वत की इस तलहटी में रात को परियां आती हैं। मगर यहां तो मुझे मुलायम-मुलायम बालों वाली भेड़ें ही मिलीं। क्या तुम जानते हो, परियां कहां मिलेंगी?"

सुनकर चरवाहा जोर से हंसा। बोला—"भोले राजकुमार, मैं तो रोज यहीं आकर भेड़ें चराता हूं। मैंने यहां कोई परी नहीं देखी। अगर देख भी लूं, तो पहचानूंगा कैसे? सुना है, परियां रूप बदल-बदल कर आती हैं। कभी-कभी तो जानवरों के वेश में भी आ जाती है।"

"जानवरों के वेश में—क्या भेड़ों का रूप बनाकर भी?"—राजकुमार ने आश्चर्य से पूछा।

"हां, क्यों नहीं। परियां कोई भी रूप बना सकती हैं। भेड़ ही क्यों, वे चरवाहों के वेश में भी आ सकती हैं। मगर तुम यह मत समझ बैठना कि मैं या मेरी ये भेड़ें परियां हैं।"—कहकर चरवाहा मुसकराने लगा। चरवाहे की बातें सुनकर, राजकुमार भी हंसने लगा। बोला—"तुम जंगल-जंगल घूमते हो। बताओ

जंगलों में, पर्वतों में तुमने क्या-क्या देखा ? कुछ सुनाओ न ! इसी तरह रात कट जाएगी । अब जाऊंगा भी कहां !''

चरवाहा कहने लगा—''भाई, मुझे तो जाना है । घर वाले मेरा इंतजार कर रहे होंगे । रही जंगल में देखने की बात, तो तुम्हें क्या-क्या बताऊं ? एक से एक अद्भुत बातें देखी हैं मैंने । अरे हां, याद आ गया । आज ही एक अनोखा फूल तोड़कर लाया हूं ।'' कहते हुए उसने जेब से एक फूल निकाला । उसकी पंखुड़ियां कई रंग की थीं ।

—''लो, यह फूल मैं तुम्हें भेंट देता हूं । इसमें कई तरह की सुगंध फूटती है । इस फूल को पानी में भिगोकर किसी भी मरीज को सुंघा दो, तुरंत उसकी बीमारी ठीक हो जाएगी ?'' इतना कहकर चरवाहे ने फूल राजकुमार को दे दिया ।

फूल पाकर राजकुमार खुश था । उसने फूल को सूंघा। उसकी सुगंध इतनी मोहक थी कि राजकुमार की आंखें बंद हो गईं । कुछ देर बाद उसने आंखें खोलीं, तो आश्चर्य चकित रह गया । वहां न भेड़ें दिखाई दीं, न चरवाहा ।

दिन का उजाला फूटने लगा, तो राजकुमार अपने सफर पर आगे चल दिया । तभी उसे एक चीख सुनाई थी । कोई चिल्ला रहा था—'बचाओ-बचाओ !'

राजकुमार तुरंत आवाज की दिशा में लपका । उसने देखा—झील में एक युवक तेजी से तैरता हुआ चिल्ला रहा है । उसके पीछे एक बड़ा मगरमच्छ भी था ।

सोचने के लिए ज्यादा समय नहीं था । राजकुमार के पास लंबी रस्सी थी । उसने पूरी ताकत से रस्सी युवक की ओर फेंकी । युवक ने रस्सी का सिरा पकड़ लिया और राजकुमार ने तेजी के साथ युवक को किनारे की ओर खींचा । राजकुमार को देख, मगरमच्छ का थोड़ा ध्यान बंटा । इसी बीच युवक किनारे पर आ गया । युवक की जान तो बच गई, मगर वह भय से बुरी तरह कांप रहा था ।

राजकुमार ने उसे दिलासा दिया । फिर कहा—''तुमने जानबूझकर यह खतरा क्यों मोल लिया ? क्या तुम्हें पता नहीं था कि इस झील में मगरमच्छ हैं ?''

''मुझे पता था, मगर क्या करता ! मेरी मां बहुत बीमार हैं । गांव के वैद्यजी ने कहा था—'झील के उस पार एक जड़ी-बूटी है । उसे ले आओ । उसका रस पीने से तुम्हारी मां ठीक हो जाएगी । इसीलिए मुझे जाना पड़ा ।''—युवक ने भीगी आंखों से कहा ।

राजकुमार ने उसे धैर्य बंधाया । कहा—''चिंता न करो । मेरे पास एक अचूक दवा है । चलो, मेरे साथ चलो । तुम्हारी मां उस दवा से ठीक हो जाएगी । अब तुम्हें और किसी जड़ी-बूटी की जरूरत नहीं पड़ेगी ।''

युवक को साथ ले, राजकुमार उसके घर आया। बिस्तर पर मां बेहोश-सी पड़ी थी । पास ही युवक की छोटी बहन उदास बैठी थी । राजकुमार ने एक कटोरी में ताजा पानी मंगवाया । उसमें फूल को भिगोकर युवक की मां के नथुनों पर धीरे से रखा । चमत्कार हुआ । कुछ ही देर में मां ने आंखें खोल दीं । दो-चार बार फूल को सुंघाने पर, बीमार मां एकाएक उठकर बैठ गई । अब लग रहा था, जैसे वह भली-चंगी है ।

मां को ठीक देखकर भाई-बहन बहुत खुश थे । युवक ने मां से कहा—''आज इन्हीं ने मेरी जान बचाई और तुम्हें भी ठीक कर दिया ।'' कहते हुए उसने मगरमच्छ वाली बता दी ।

मां ने कृतज्ञता से राजकुमार की ओर देखकर कहा—''बेटा, क्या तुम कोई देवदूत हो ?''

—''नहीं, मां जी ! मैं देवदूत नहीं, मनुष्य ही हूं ।'' फिर राजकुमार ने अपना पूरा परिचय दिया । परी खोजने वाली बात बताकर, यह भी बता दिया कि यह फूल उसे कैसे मिला ?

मां ने राजकुमार के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा—''तुम जैसे परोपकारी और दयालु को परी जरूर मिलेगी । तुम्हारी बात सुनकर मुझे लग रहा है कि परी तुम्हें मिल चुकी है । वह चरवाहा और कोई नहीं, परी ही था । परी वेश बदलकर उसी रूप में तुम से मिली । यह फूल साधारण फूल नहीं है । धरती पर ऐसे फूल नहीं होते । यह जरूर परीलोक का फूल है ।'' राजकुमार अपने राज्य वापस लौट गया । ●



फिर चली जाना

—उमा पंत

झगड़ी पंडिताइन को गुस्सा बहुत आता था। जरा-जरा सी बात पर लड़ने लगती थी। एक बार किसी ने पंडिताइन को नुकीले सींगों वाली एक गाय दान में दे दी। वह गाय भी एकदम झगड़ी पंडिताइन जैसी ही गुस्सैल और मरखनी थी। पंडिताइन तो जैसे-तैसे आधा-पौना लोटा दूध निकाल भी लाती। पर और किसी को तो वह गाय पास भी नहीं फटकने देती थी। झगड़ी की एक बहू थी। बहू दिन-रात घर के कामकाज में लगी रहती, पर सास कोई न कोई कारण खोजकर हरदम उसे डांटती-डपटती रहती थी।

सावन की तीज आने वाली थी। घर-घर सबको झूला बांधते देख, बहू का मन भी मायके जाने को मचलने लगा। पर पंडिताइन जाने दे तब न। उसकी आंखों में मां का घर घूमने लगा। आम की डाल पर झूला झूलती छोटी बहन याद आने लगी। डरते-डरते उसने सास से पूछा— 'सासू मां, आज्ञा दें तो मैं दो-चार दिन के लिए मायके हो आऊं ?''

पंडिताइन बोली— ''कल मेरी बेटी अपनी ससुराल से आने वाली है। तू चली जाएगी, तो यहां कौन आंगन बुहारेगा, कौन उसके लिए आसन बिछाएगा ? कौन पकवान पकाएगा ? फिर कभी चली जाना।''

''मैं घर-आंगन बुहार जाऊंगी। आसन-बिस्तर बिछा जाऊंगी। पूरी-पकवान पका जाऊंगी। दो दिन बाद ही लौट आऊंगी। बस, एक बार 'हां' कह दीजिए।''— बहू ने मनुहार की।

पंडिताइन ने सोचा— 'क्यों न इसे ऐसा काम करने को कहा जाए, जिसे यह पूरा ही न कर सके।' बस, बड़ा-सा लोटा बहू के हाथों में देकर बोली— ''जा, गाय का दूध निकाल ला। खीर पका देना। फिर दो दिन क्या तू चार दिन रह आना अपनी मां के पास।''

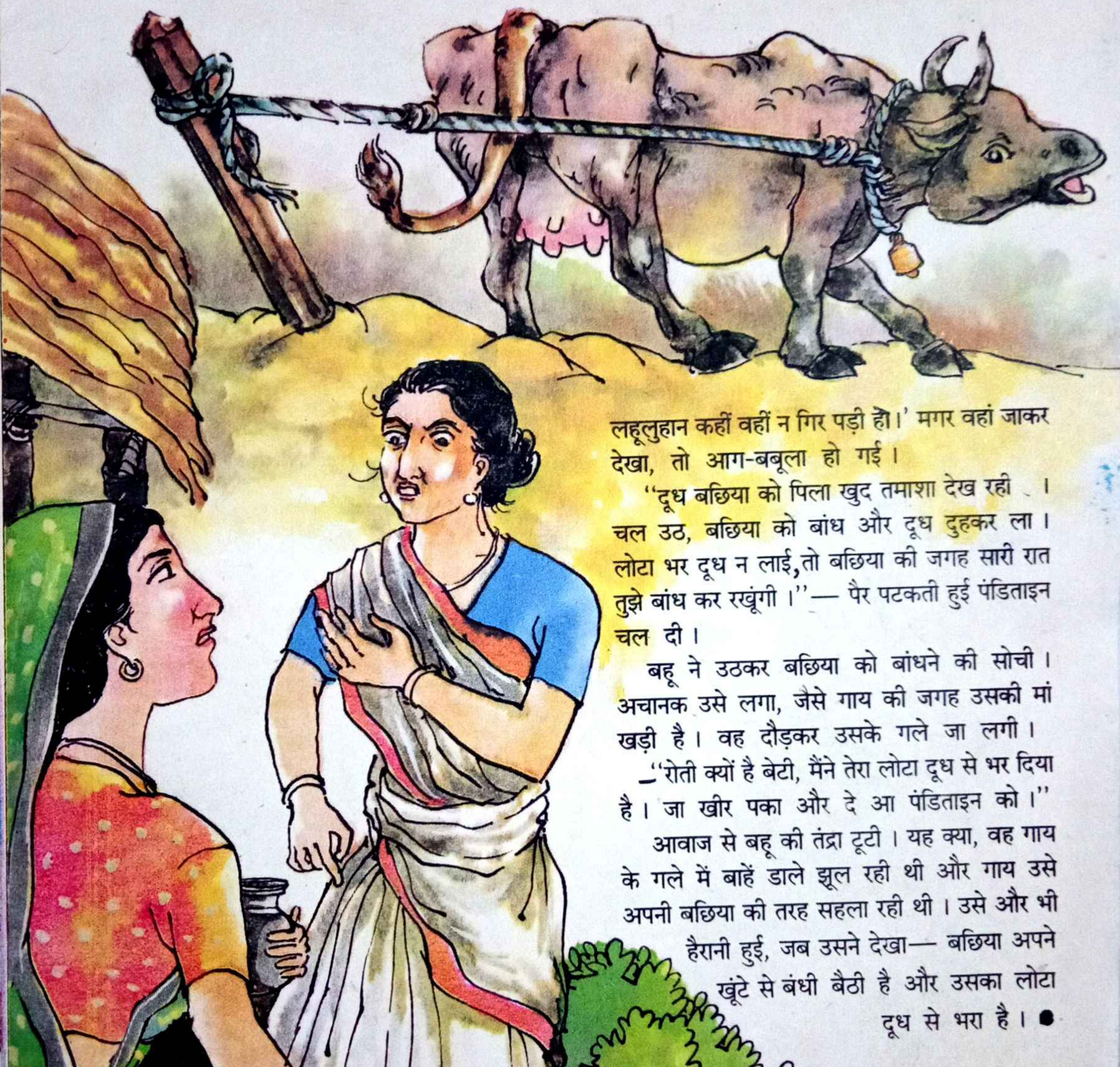
पंडिताइन ने सोचा— 'गाय सिवाय मेरे किसी और को दूध दुहने ही नहीं देती। बहू मायके की आस में जोर-जबरदस्ती करेगी, तो वह जमकर सींग मारेगी। न दूध, न खीर। उलटा सींगों की मार से पस्त पडी रहेगी यहीं पर। न काम होगा, न मायके जाएगी।'

बहू लोटा लेकर उदास हो गई। बोली— ''आप कहें, तो बरसात की बाढ़ में नदी पार कर लूंगी, रातों-रात जंगल काट कर मैदान बना दूंगी, लेकिन इस गाय को दुहने और लोटा भर दूध निकालने की शर्त न लगाइए।''

मगर सास मानी नहीं। बोली— ''अगर मायके जाना चाहती है, तो यह सब करना ही होगा। वरना भूल जा अपनी मां को भी और मायके को भी।''

दुखियारी बहू ने लोटा उठाया और चल पड़ी। देखा, खूंटे से बंधी गाय के थनों से दूध की धारा बह रही है। वह दूर से ही अपनी बछिया को बेबस-सी देख रही है। उधर बछिया दूध की धार देखकर बेचैन छटपटा रहा है। बहू को लगा, जैसे बछिया की जगह वह खुद बंधी है। उसने झट बछिया के गले की रस्सी खोल दी। खुद जहां की तहां चुपचाप बैठ गई। अद्‌भुत दृश्य था। गाय के थनों से मुंह लगाए बछिया मस्ती से दूध छक रही थी और गाय उसे चाटती-सहलाती पुलकित हो रही थी। बीच-बीच में कृतज्ञ भाव से बहू की तरफ देखकर पूंछ हिला देती थी।

देर होती देख, पंडिताइन ने सोचा— 'बहू



लहूलुहान कहीं वहीं न गिर पड़ी हो।' मगर वहां जाकर देखा, तो आग-बबूला हो गई।

"दूध बछिया को पिला खुद तमाशा देख रही । चल उठ, बछिया को बांध और दूध दुहकर ला। लोटा भर दूध न लाई, तो बछिया की जगह सारी रात तुझे बांध कर रखूंगी।"— पैर पटकती हुई पंडिताइन चल दी।

बहू ने उठकर बछिया को बांधने की सोची। अचानक उसे लगा, जैसे गाय की जगह उसकी मां खड़ी है। वह दौड़कर उसके गले जा लगी।

"रोती क्यों है बेटी, मैंने तेरा लोटा दूध से भर दिया है। जा खीर पका और दे आ पंडिताइन को।"

आवाज से बहू की तंद्रा टूटी। यह क्या, वह गाय के गले में बाहें डाले झूल रही थी और गाय उसे अपनी बछिया की तरह सहला रही थी। उसे और भी हैरानी हुई, जब उसने देखा— बछिया अपने खूंटे से बंधी बैठी है और उसका लोटा दूध से भरा है। ●





ट्यूलिप

रूप अनोखा, गंध निराली झूला करते डाली-डाली

नागलिंगम्



ग्लेडीओलस



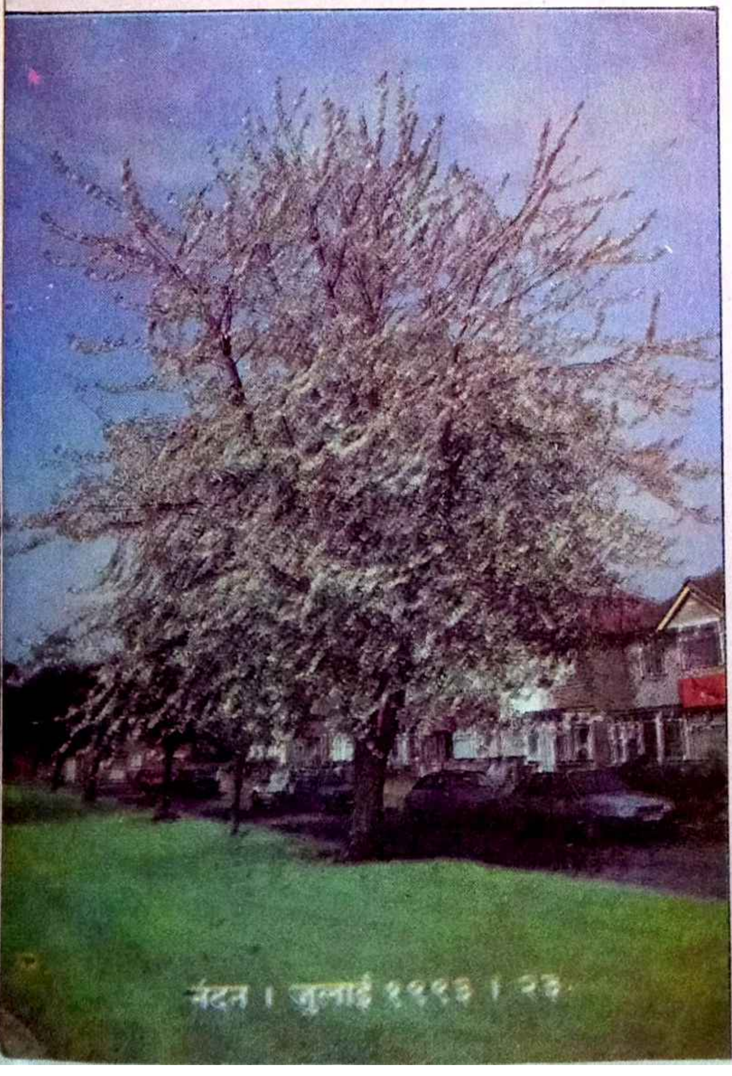
चित्र : सुरेश ऋतुपर्ण, एस. एम. दुधेडिया, विद्याव्रत, योगेश आनंद, के. भाटिया, डा. राज बुद्धिराजा, शमशेर अ. खान, वेद मित्र



लिली

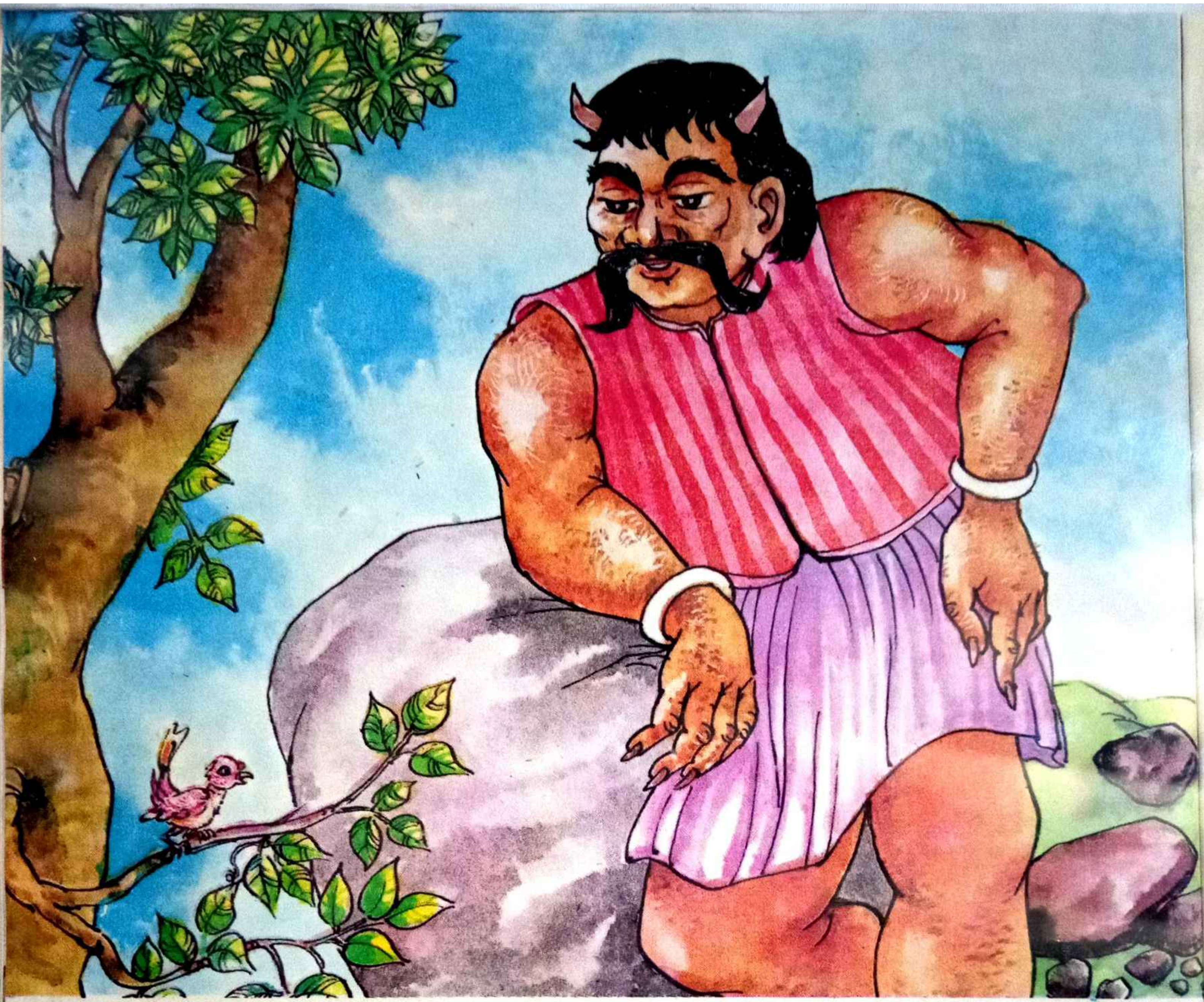
पॉपी





कलंचू





सिर पर चिड़िया

—डा. रंजना अग्रवाल

चारों ओर पहाड़ियों से घिरा, घाटी में बसा एक छोटा-सा नगर था, सुंदर नगर। उस नगर का अभिशाप था—एक दैत्य, जो पहाड़ियों में रहता था। वह सुंदर नगर के निवासियों को बहुत तंग करता था। नगरवासी उससे बहुत डरते थे। बड़े से बड़े योद्धा भी उसके नाम से कांप उठते थे।

एक दिन दैत्य शाम को घूम रहा था कि अचानक वह कुछ देखकर ठिठक गया। एक बड़ी-सी चट्टान पर दैत्य का चित्र बना था। उसका सारा शरीर तीरों से बिंधा था और उसके चारों ओर कुछ लोग धनुष-बाण लिए खड़े थे।

"यह चित्र किसने बनाया है?"—दैत्य जोर से गरजा।

"मैं बताऊं?"—पास के पेड़ से आवाज आई।

दैत्य ने सिर उठाकर देखा। पेड़ पर एक चिड़िया बैठी थी। वह बोली— "सुंदर नगर में एक चित्रकार है। उसी ने यह चित्र बनाया है। वह यह भी कह रहा था कि हम शीघ्र ही इस दैत्य से छुटकारा पा लेंगे।"

"अच्छा, उसकी यह हिम्मत? मैं देख लूंगा। मैं पूरे सुंदर नगर को ही नष्ट कर दूंगा। एक को भी नहीं छोड़ूंगा।"—दैत्य दहाड़ा।

"मगर कैसे?"—चिड़िया ने चिढ़ाने के अंदाज में कहा।

"कैसे?"—दैत्य ने जैसे अपने आप से पूछा। वह रात भर अपनी गुफा में करवटें बदलता रहा। उसे

कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आखिर उसे एक उपाय सूझ ही गया। सुबह-सुबह वह नदी पर गया और पहाड़ी से पत्थर उठा-उठाकर नदी में डालने लगा।

"यह क्या कर रहे हो चाचा ?"—एक सुरीली आवाज ने पूछा।

यह आवाज पेड़ पर बैठी एक नन्ही चिड़िया की थी।

"मैं सुंदर नगर को डुबो दूंगा।"—दैत्य ने कहा।

"कैसे चाचा ?"—चिड़िया ने फिर पूछा।

"मैं इन पत्थरों से बांध बनाकर नदी का पानी रोक दूंगा। फिर यहां ढेर सारा पानी इकट्ठा हो जाएगा। रात को जब सब सो जाएंगे, तो मैं चुपचाप ये पत्थर हटा दूंगा। पानी तेजी से बहेगा और नगर डूब जाएगा।"—दैत्य ने अपनी योजना चिड़िया को समझाई।

"पर चाचा, चित्र तो चित्रकार ने बनाया है। तुम पूरे नगर को उसकी सजा क्यों दे रहे हो ?"—चिड़िया ने दैत्य को समझाते हुए कहा।

"मुझे नसीहत मत दे चिड़िया। वरना मैं पहले तुझे ही मारकर खा जाऊंगा।"—दैत्य को अब गुस्सा आ रहा था।

नन्ही चिड़िया डरकर उड़ गई। पर वह चिंतित थी। दैत्य तो बहुत बलवान था और वह थी नन्ही-सी चिड़िया। अंत में उसने सोचा कि वह नगरवासियों को सूचित कर दे। शायद वे ही कोई रास्ता निकाल सकें। यह सोचकर चिड़िया नगर की ओर उड़ चली। मगर वह थोड़ी दूर ही गई थी कि उसका सामना एक शिकारी से हो गया। वह धनुषबाण लिए उस पर वार करने को तैयार था।

"नहीं, शिकारी चाचा, मुझे मत मारो। तुम्हारी जान खतरे में है।"—चिड़िया ने जोर से कहा।

"क्यों, तुझे कैसे पता कि मेरी जान खतरे में है ?"—शिकारी ने पूछा।

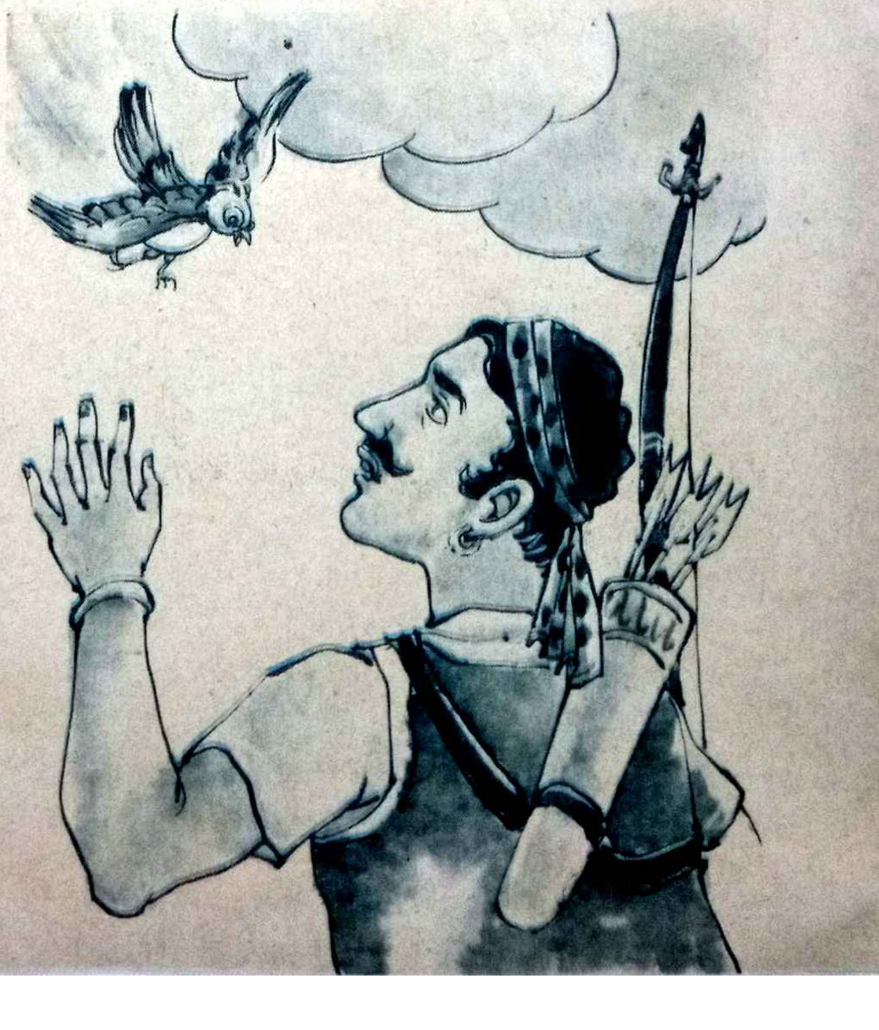
चिड़िया ने शिकारी को सारी बात बता दी। अब दोनों नगरवासियों को खतरे से सावधान करने नगर की तरफ चल पड़े। एक से दो, दो से चार—जल्दी ही खबर पूरे नगर में फैल गई। चारों ओर हाहाकार मच गया। सब लोग नगर के बीच इकट्ठे हो गए। पर किसी को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। नगर छोड़कर जाने के अतिरिक्त कोई भी उपाय नहीं सूझ रहा था, मगर नगर छोड़कर जाएं, तो कहां जाएं ?

सब इसी प्रकार सोच-विचार में डूबे थे कि चिड़िया को जैसे कुछ याद आया। बोली—"मेरी एक दादी है, बहुत बूढ़ी। उसके पंख टूट गए हैं। वह उड़ भी नहीं सकती। मगर वह है बहुत बुद्धिमान और अनुभवी। चलो, उससे चल कर पूछते हैं। वह अवश्य ही कोई उपाय ढूंढ़ निकालेगी।"

चिड़िया के साथ नगर के कुछ लोग पहुंचे उसकी दादी के पास। "नगर खाली कर दो।"—चिड़िया दादी ने दो पल सोच कर उपाय सुझाया। सुनकर सबके चेहरे उतर गए।

"मगर बसा-बसाया नगर छोड़कर इस तरह कहां जाएंगे चिड़िया दादी ?"—नगर वासियों ने घबराकर पूछा।

"मैं बताती हूं।"—चिड़िया दादी ने एक व्यक्ति के कान में कुछ कहा। फिर सब लोग वापस लौट





आए ।

शाम ढलने लगी थी । नन्ही चिड़िया दैत्य के पास पहुंची । दैत्य ने नदी पर ऊंचा-सा बांध बना दिया था । पानी का बहाव रुक गया था । ढेर-सा पानी वहां इकट्ठा हो गया था ।

"रुको दैत्य चाचा ।"—चिड़िया ने जाकर कहा ।

"तू फिर आ गई ?"—दैत्य गरजा ।

"तुम थक गए होगे चाचा ? कुछ खा लो । देखो, मैं तुम्हारे लिए खाना लाई हूं ।"—चिड़िया ने विनम्रता से कहा ।

दैत्य ने सिर उठाकर देखा । सचमुच चिड़िया अपने पंजों में दबाकर दैत्य के लिए भोजन लाई थी ।

"नहीं, मैं जब तक इस नगर को नष्ट नहीं कर लूंगा, तब तक कुछ नहीं खाऊंगा ।"—दैत्य ने गुस्से से कहा ।

"मगर किसे नष्ट करोगे चाचा ? नगर के सब लोग तो तुम्हारे डर से पहले ही जा चुके हैं । पूरा नगर खाली है ।"—चिड़िया ने बताया ।

"क्या यह सच है ?"—दैत्य को आश्चर्य हुआ ।

दोनों नगर की तरफ चल दिए । सचमुच पूरा नगर खाली था । सड़कें वीरान थीं । घर खाली थे, चूल्हे बुझे हुए थे । दैत्य बहुत प्रसन्न हुआ । उसने पेट भर भोजन किया । फिर नगर की सड़कों पर घूमता रहा, खुशी से नाचता रहा और अंत में थककर सो गया । चिड़िया को तो इसी पल की प्रतीक्षा थी । वह उड़ती हुई गई और उसने पहाड़ी में छिपे हुए लोगों को सूचना दी । नगरवासी पहाड़ी से निकल आए और चारों ओर की पहाड़ियों से तीरों की वर्षा होने लगी । दैत्य इस अचानक हमले के लिए तैयार न था । जब तक वह कुछ समझ पाता और संभलता, सैकड़ों तीरों ने उसका शरीर छलनी कर दिया था । आखिर उसने प्राण त्याग दिए ।

नगरवासी नीचे उतर आए । वे बड़े प्रसन्न थे । सब प्रसन्नता से नाच-गा रहे थे । अचानक सबने देखा कि एक व्यक्ति कंधे पर झोला लटकाए भीड़ से अलग, पहाड़ी पर चढ़ रहा था । कौतूहलवश भीड़ भी उसके पीछे-पीछे चल दी । वह उस चट्टान के पास जाकर रुक गया । उसने दैत्य के सिर पर नन्ही चिड़िया का चित्र भी बना दिया ।

"तो तुम्हीं वह चित्रकार हो ?"—लोगों ने पूछा ।

"हां, मैंने ही यह चित्र बनाया था ।"—चित्रकार ने कहा ।

"मगर क्यों ?"—भीड़ का प्रश्न था ।

"क्योंकि मैं चाहता था कि तुम लोग दैत्य से डरकर न बैठ जाओ । उसका सामना करो । और यह भी कि अगर हम सब लोग मिलकर सामना करें, तो दैत्य को मार सकते हैं ।"—चित्रकार का उत्तर था ।

"और यह चिड़िया ?"—भीड़ में से किसी ने फिर पूछा ।

"हां, इस चिड़िया की सहायता से ही हम इस दैत्य को मार सके हैं । यह हमें सदैव याद दिलाती रहेगी कि संसार का छोटे से छोटा प्राणी भी महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है ।"—चित्रकार इतना कहकर चुप हो गया था ।

कहते हैं, आज भी सुंदर नगर की पहाड़ियों पर वह चित्र बना हुआ है—तीरों से बिंधा दैत्य और दैत्य के सिर पर एक नन्ही-सी चिड़िया । ●

सोने का लोटा

—श्रीनिवास वत्स

ऊंची-नीची पहाड़ियों की तलहटी में बसा था, एक छोटा-सा गांव—कुंदनपुर। मिट्टी और खपरैल से बने घरों में बीस- पचीस चरवाहों के परिवार रहते थे। गाय और भेड़-बकरियां पालना उनका मुख्य व्यवसाय था। महिलाएं घर का काम निबटाती थीं। पुरुष दिन में अपने पशुओं को चराने हरी-भरी पहाड़ियों पर चले जाते।

इसी गांव में किशनू नामक एक चरवाहा रहता था। उसके पास दो दर्जन भेड़-बकरियों के अतिरिक्त एक गाय भी थी। किशनू की पत्नी का नाम था—सरती।

सरती सुंदर और भली औरत थी। पर पुत्र बीरू के जन्म के बाद अचानक उसकी आंखों की रोशनी चली गई। इसीलिए गांव वाले बीरू को अशुभ बालक मानते थे। लेकिन बीरू का इसमें क्या दोष? वह बचपन से ही मां के कार्यों में हाथ बंटाता आया था। शाम को जब किशनू घर लौटता, तो बीरू भेड़-बकरियों को बाड़े में बंद करवाने में पिता की मदद करता।

बीरू अभी दस साल का हुआ था कि एक दिन किशनू भी चल बसा। किशनू की मृत्यु के बाद तो बीरू पर जैसे विपत्तियों का पहाड़ ही टूट पड़ा। गांव के लोग उसे देखते ही मुंह फेर लेते।

एक दिन बीरू ने मां से कहा—"मां! मैं बकरियों को चराने पहाड़ियों पर ले जाऊंगा।"

"पर बेटा! तू तो अभी बहुत छोटा है!"—मां ने चिंता प्रकट की।

—"कोई बात नहीं मां! तुम फिक्र न करो।"

कहते हुए बीरू पशुओं को लेकर चल पड़ा। वहां एक तरफ विषैले जल का कुंड था। भेड़-बकरियों ने उसका पानी पिया, तो बीमार हो गईं।

अगली सुबह जब वह बाड़े में गया, तो हैरान रह गया। कई भेड़ें और बकरियां मरी पड़ी थीं। अब तो उसे भी विश्वास हो गया कि सचमुच वह मनहूस है।



बीरू मां के पास आकर रोने लगा। मां ने बेटे के आंसू पोंछे और कहा—"बेटे! यह सब भाग्य का खेल है। इसमें तेरा कोई दोष नहीं। यूं रोने से क्या होगा? अब तू अपनी गाय को चराने दूसरी पहाड़ी पर ले जा।"

अगले दिन बीरू एक लोटा और लाठी लेकर गाय चराने चल पड़ा। शाम को जब वह लौट रहा था, तो चट्टान से एक छोटा पत्थर लुढ़ककर गाय के पैर से जा टकराया। चोट लगने से गाय वहीं बैठ गई। पीछे-पीछे दूसरे चरवाहे भी आ रहे थे। बीरू ने उनसे सहायता मांगी। परंतु चरवाहे बिना बोले पास से निकल गए। हार कर बीरू पास की एक शिला पर बैठ गया।

धीरे-धीरे रात का अंधेरा छाने लगा। गाय ने उठने की काफी कोशिश की, वह ज्यों ही दो कदम चलती फिर बैठ जाती।

बीरू ने सोचा कि यदि वह गाय को जंगल में छोड़कर बस्ती में गया, तो पीछे से कोई जंगली जानवर इसे मार डालेगा। उसने निर्णय किया कि वह गाय को अकेली नहीं छोड़ेगा। लाठी लेकर पास ही एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गया।



अभी आधी रात ही बीती थी कि अचानक आसमान में रोशनी फैल गई। बीरू हैरान होकर, इधर-उधर देखने लगा। प्रकाश बढ़ता गया। थोड़ी देर बाद रंग-बिरंगी परियां पास की एक चट्टान पर उतर आईं।

उनके वस्त्रों की चकाचौंध से पूरी घाटी जगमगा उठी। परियां एक-दूसरे की बाहों में बाहें डाल नाचने लगीं। उनका नाच देख, बीरू अपने सारे दुःख भूल गया।

उन परियों में एक नन्ही-सी परी भी थी। शुरू में तो वह काफी उछल-कूद करती रही, पर जल्दी ही थककर एक तरफ बैठ गई। आंख-मिचौनी खेल कर दूसरी परियां वापस आसमान में जाने लगीं। पर नन्ही परी थककर चूर हो गई थी। उसके पंख निढाल हो गए। वह चाह कर भी नहीं उड़ पा रही थी।

दूसरी परियों ने कहा—"सुबह होने वाली है। इस पहाड़ी पर चरवाहे आ जाएंगे। इसलिए हम तो जा रही हैं।"

नन्ही परी रोते-रोते बोली—"मुझे बहुत भूख लगी है। मुझे कुछ खाने को मिलेगा, तभी मैं उड़ सकूंगी।"

बीरू को नन्ही परी पर दया आ गई। वह पेड़ से उतरा। वहीं पहुंच गया, जहां से परियां डरकर आसमान में उड़ गईं, पर नन्ही परी वहीं बैठी रही। उसने डरते हुए बीरू से पूछा—"तुम कौन हो?"

बीरू ने कहा—"लोग मुझे अशुभ कहते हैं, परंतु मैं दिल से बुरा नहीं हूं। मेरे जन्म के समय मेरी मां की आंखें चली गईं। फिर पिता जी की मृत्यु हो गई। बाद में हमारी सभी भेड़-बकरियां मर गईं। सिर्फ एक गाय बची है। वह भी घायल हो कर रात से यहीं पड़ी है। मैं पेड़ पर बैठा, उसकी रखवाली कर रहा था। तुम्हें बहुत भूख लगी है। चलो, मैं गाय का दूध निकाल कर तुम्हें पिला दूं।"

बीरू की प्यार भरी बातें सुन, परी का सारा डर जाता रहा। बीरू लोटा लेकर गाय के पास गया। उसमें दूध निकाल कर, परी को पिलाया। दूध पीते ही, थकी-हारी नन्ही परी में चुस्ती आ गई। अब वह उड़ सकती थी।

बीरू और नन्ही परी को आपस में बातें करते देख, दूसरी परियां भी लौट आईं। नन्ही परी ने बीरू की दुःख भरी कहानी अन्य परियों को सुनाई। उन्होंने कहा—"हमें बीरू की सहायता करनी चाहिए।"

नन्ही परी बोली—"बीरू! जिस लोटे में तुमने मुझे दूध पिलाया है, मेरा स्पर्श होते ही वह सोने का हो गया है। तुम इसे बेचकर और भेड़-बकरियां खरीद लेना।"

एक बड़ी परी बोली—"हम रोज रात को यहां आती हैं। परी लोक में वैद्यराज से दवा लेकर, कल हम इस चट्टान के पास रख देंगी। सुबह आकर तुम उठा लेना। उससे तुम्हारी मां की आंखें भी ठीक हो जाएंगी।"

—"तब तो मुझे कोई मनहूस नहीं कहेगा।"

—"नहीं-नहीं, तुम तो बहुत अच्छे हो।"—नन्ही परी बोली।

रात ढलने लगी थी, परियां जाने लगीं। बड़ी परी ने अपने पंख से गाय का पैर छू दिया। गाय एकदम स्वस्थ हो गई।

सुबह, सोने का लोटा लेकर बीरू घर पहुंचा। उसने रात की घटना मां को बताई।

सरती ने बीरू को गले से लगा लिया। बोली—''बेटा ! रात भर मैं तो तेरी चिंता में ही डूबी रही। दूसरे चरवाहों से पूछा। पर किसी ने कुछ नहीं बताया।''

बीरू ने शहर जाकर सोने का लोटा बेच दिया। काफी धन मिला, तो नई भेड़-बकरियां खरीद लीं।

अगले दिन सुबह-सवेरे बीरू चट्टान के पास पहुंचा। सचमुच परियों ने वहां औषधि रख दी थी। घर लाकर मां की आंखों में डाली। दवा पड़ते ही आंखों की रोशनी लौट आई। अब बीरू खुश था।

दूसरे चरवाहों ने यह सब देखा, तो वे बहुत हैरान हुए। दूसरे दिन बीरू के पास आकर बोले—''बीरू बेटे ! तुम्हें इतना धन कहां से हाथ लगा ?''

बीरू तो साफ मन का बच्चा था। सब बातें सच-सच बता दीं।

रात को सब चरवाहे अपने-अपने घर के सब बर्तन ले, उस चट्टान पर पहुंच गए, जहां परियां आती थीं। वे चाहते थे कि परियों के स्पर्श से उनके बर्तन भी सोने के हो जाएं। वे सब चट्टान के पीछे छिपकर बैठ गए।

आधी रात को जैसे ही परियां आईं, चरवाहे एक-दूसरे को धकेलते हुए परियों की ओर दौड़ पड़े।

उनको इस तरह झगड़ते-चिल्लाते हुए परियों ने अपनी ओर आते देखा। ''अब हम यहां कभी नहीं आएंगी।''—कहते हुए परियां डरकर आसमान में उड़ गईं।

परियों को जाते देख, चरवाहों ने अपने सारे बर्तन उनकी तरफ फेंके, ताकि उनके स्पर्श से वे सोने के हो जाएं। पर परियां तो आसमान में ऊंची उड़ गई थीं। चरवाहों के बर्तन पहाड़ियों से लुढ़कते हुए, नीचे गहरी खाई में जा गिरे।

सोने के लोभ में अपने सब बर्तन गंवाकर, मुंह लटकाए वे सुबह अपने घरों को लौट आए। रास्ते में बीरू मिला। रोते हुए चरवाहों ने उसे पूरी घटना बता दी। उससे क्षमा मांगने लगे। तब तक बीरू की मां भी वहां आ गई। उसके कहने पर बीरू ने सब चरवाहों को धन दिया। ईर्ष्या ने उनका क्या हाल किया यह बात चरवाहे अच्छी तरह समझ चुके थे।●

आकाश से उतरी

—डा. राज बुद्धिराजा

बहुत पुरानी बात है। आकाश-गंगा के सहारे एक सुरबाला धीरे-धीरे नीले आकाश से धरती पर उतरी। इधर-उधर देखने के बाद उसकी निगाहें एक पत्थर पर पड़ीं। उस पर बैठकर वह चारों ओर देखने लगी। सब-कुछ बहुत खूबसूरत था। वह सुरबाला भी बहुत सुंदर थी। गोरा रंग, सुंदर आंखें, काले लम्बे बाल, सुंदर वस्त्र। कभी वह अपने वस्त्रों पर मुग्ध होती, कभी खुद पर और कभी आस-पास की पहाड़ियों पर। उसका मन नाच उठा, पैर थिरकने लगे। बहुत देर तक झूम-झूमकर वह नाचती रही। थक जाने पर वह उस पत्थर पर सिर टिका, सो गई। वह यह भूल गई कि उसने अपने सुंदर वस्त्र उतारकर उस पत्थर पर रख दिए हैं।

इधर से एक राहगीर गुजरा। उसने देखा कि एक अपूर्व सुंदरी गहरी नींद में है। उसके सुंदर वस्त्र पास ही रखे थे। सफेद रेशम जैसे हल्के-फुल्के, मुलायम। 'ये वस्त्र जरूर किसी राजकुमारी के होंगे।'—यह सोचकर वह उन्हें उठाकर घर ले गया।

गहरी नींद से जगने पर युवती ने पाया कि उसके वस्त्र नदारद हैं। धूप तो वहां थी नहीं। गहरे नीले बादल थे। उसने सोचा—'कहीं उन्हें हवा तो उड़ाकर नहीं ले गई ?' जितना ज्यादा ढूंढ़ती, न मिलने पर उतनी ज्यादा परेशान होती। अब क्या किया जाए ? उन वस्त्रों के बिना तो वह अपने घर भी नहीं लौट सकती थी। वह सोचती और उदास होती। उसकी उदासी गहरी होती जा रही थी।

तभी उसे आवाज सुनाई दी—''पहली जिंदगी भूलकर अब इस धरती पर चैन से रहो।'' युवती ने चौंककर देखा, अब उसके शरीर पर साधारण वस्त्र थे।

धीरे-धीरे अपने पिछले जीवन को भूलकर उसने धरती पर रहने का निश्चय किया। महीन कपड़ों के कारण उसे सर्दी ने सताना शुरु किया। वह भूख-प्यास

से भी व्याकुल हो उठी।

पर्वत से धीरे-धीरे उतरकर वह मैदान की ओर गई। उसे कुछ दूर एक गांव नजर आया। वह चलती चली गई। एक जगह उसने एक किसान से भोजन के लिए कहा। तरस खाकर किसान ने उसे खाना खिलाया। कृतज्ञता प्रकट करने के लिए वह किसान के काम-काज में हाथ बंटाने लगी। उसे क्या पता था, यह वही किसान था, जो उसके वस्त्र उठा लाया था।

कुछ समय बाद उन दोनों ने विवाह कर लिया। उनके यहां दो पुत्रियों ने जन्म लिया। मां की तरह दोनों ही सुंदर थीं। उन दोनों की सरलता और सौंदर्य गांव भर को मोह लेता। जैसे-जैसे वे बड़ी होती गईं, संगीत के प्रति उनका लगाव बढ़ता गया। एक गुनगुनाती, तो दूसरी के पैर थिरकते। एक के पैर थिरकते, तो दूसरी की गुनगुनाहट से आंगन महक उठता।

'आज इन्हें आस-पास घुमाने ले जाऊंगा'— एक दिन किसान ने सोचा। वह अपनी पत्नी-बेटियों के साथ जाने ही वाला था कि उसे सहसा कुछ याद आया—'वह सुंदर परिधान कब से सहेजा रखा है। क्यों न उसे आज निकाल लिया जाए और बड़ी बेटी को पहनाया जाए?' उसने परों वाला लिबास निकाला। बड़ी बेटी से कहा—"तुम इसे पहन लो। पहनकर बहुत सुंदर लगोगी।" बड़ी बेटी सुनकर खुशी से झूम उठी।

वे चारों आगे बढ़ने लगे। सुंदर घाटियों को देखकर उनका मन नाचने लगा। बड़ी बेटी मनमोहक अदा से नाचने लगी और छोटी ताल देने लगी। जैसे-जैसे सुर और ताल में तीव्रता आती गई, नृत्य में तेजी आती गई। उसके हलके-हलके वस्त्र हवा में लहराने लगे। लहराते वस्त्रों को देखकर मां को कुछ धुंधला-धुंधला याद आने लगा। वह तो आकाश में रहती थी, फिर धरती पर उतर आई थी। घर लौटने के लिए वह छटपटाने लगी।

"लाओ ये वस्त्र, मैं तुम्हें नृत्य करके दिखाती हूं।"—मां ने बेटी से कहा।

परों वाले वस्त्र पहनकर मां झूम-झूमकर नाचने लगी। ताल की गति के साथ उड़ने लगी। उड़ती चली गई और ऊपर उड़ती चली गई।

"मां, तुम्हें क्या हो गया है? नीचे उतरो।"—बड़ी बेटी ने कहा।

—"अब मैं जा रही हूं, अपने घर जा रही हूं। तुम यहीं रहना अपने बापू के पास। मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा सकती।"

जैसे-जैसे वह उड़ती चली गई, धरती पर बैठे उसके पति की उदासी बढ़ती चली गई।

उसने देखा कि पास में ही सफेद अंगूर का वृक्ष उग आया है। छूने पर उसमें से संगीत सुनाई पड़ता है।

आज भी जापान के ततोरी जिले की तरफ उबेशि नाम का पर्वत है। उसकी चोटी के पास एक बड़ा-सा पत्थर और सफेद अंगूरों का पेड़ है। उस पत्थर को परों वाला पत्थर कहा जाता है। सर्दी में लोग यहां आते हैं। पत्थर पर बैठ, वृक्ष का स्पर्श कर संगीत सुनते हैं और उस अपूर्व सुंदरी को याद करते हुए घर लौट जाते हैं। ●



कवि एक : रंग अनेक







शम्भु प्रसाद श्रीवास्तव

दही-बड़े

मुंह में रखते ही गल जाते
इसीलिए हैं सबको भाते।
दांतों को मेहनत करने की
कभी जरूरत नहीं पड़े—
मजेदार हैं दही-बड़े।

भूख बढ़ाते, प्यास जगाते,
देते हैं भरपूर तरावट,
जहां खोमचे वाला आया
मिल जाती है सबको आहट।
बूढ़े लेते स्वाद बैठकर,
हम खाते हैं खड़े-खड़े,
मजेदार हैं दही-बड़े।

चाट इन्हें चाचा कहती है,
गरम पकौड़ी कहती नाना,
भेलपुरी के मौसा जी हैं,
छोले ने है दादा माना।
इनमें हीरे-मोती जैसे
किशमिश-काजू गए जड़े,
मजेदार हैं दही-बड़े।

रसगुल्लों को चीनी प्यारी,
इनको प्यारा मिर्च-मसाला,
सारे रिश्तेदारों में है,
इनका अपना स्वाद निराला।
जिस दावत में ये शामिल हों,
उस दावत की शान बढ़े,
मजेदार हैं दही-बड़े।

बच्चों के चहेते कवि। कुछ दिन पहले इनका निधन हो गया।

नाक

चेहरे पर बैठी है तनकर
देखो, यह अभिमानी नाक,
सब अंगों की रानी नाक।

सारी चीजें सूंघ-सूंघकर
पल भर में लेती पहचान,
सांस इसी से लेते हैं हम,
इसकी मुट्ठी में है जान।
ऐसे-ऐसे गुण हैं इसमें
कहलाती है ज्ञानी नाक,
सब अंगों की रानी नाक।

कुछ भी अगर बुरा लगता है,
फौरन नाक सिकुड़ती है,
गुस्से में ऊपर चढ़ जाती,
छींक उड़े, जब कुढ़ती है।
हो जुकाम तो रोने लगती
खूब बहाती पानी नाक,
सब अंगों की रानी नाक।

जा भाग

पापा जी रसगुल्ले लाए
बड़े-बड़े रसदार,
घर में सबने दो-दो खाए,
मैंने खाए चार।
पूसी बिल्ली दौड़ी आई
मैं बोला—जा भाग,
मुंह से लार टपकती है तो
पापा जी से मांग।

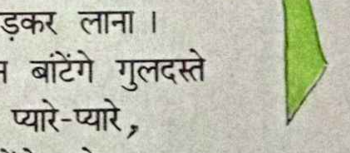
हम तोड़ेंगे तारे

फूल तोड़ना यहां मना है,
हम तोड़ेंगे तारे।

कमरे में लटका देंगे हम,
इन तारों की माला,
रोज चली जाती है बिजली,
देंगे हमें उजाला।
माली चाचा नहीं पड़ेंगे
पीछे कभी हमारे,
हम तोड़ेंगे तारे।

रोज शाम को यह फुलवारी
आसमान में खिलती,
दूर चमकते इन फूलों की
खुशबू हमें न मिलती।
चमक-दमक से सबको लगते
ये उजले अंगारे,
हम तोड़ेंगे तारे।

हम विज्ञान पढ़ें, फिर सीखें
राकेट नया बनाना,
शुरू करेंगे फिर तारों को,
तोड़-तोड़कर लाना।
हर दिन बांटेंगे गुलदस्ते
सबको प्यारे-प्यारे,
हम तोड़ेंगे तारे।



टर-टर

मेंढक बोला टर-टर-टर,
पानी में है मेरा घर,
घर में मिलता है आराम,
मुझको होता नहीं जुकाम।

बहुत दिन पहले की बात है। एक गरीब आदमी था। वह मन का सच्चा था। किसी को धोखा नहीं देता था। किसी को सताता नहीं था। अपना काम ईमानदारी से करता।

उस आदमी का नाम था जयदीप। जयदीप जंगल से लकड़ियां काटकर, अपना काम चलाता था। एक दिन किसी ने उसकी कुल्हाड़ी चुरा ली। वह बहुत दुखी हुआ। उसने सोचा—'अब मैं लकड़ियां कैसे काटूंगा?' नई कुल्हाड़ी बनवाने के लिए उसके पास पैसे भी नहीं थे।

जयदीप खाली हाथ जंगल में चला गया। वह

पगड़ी पर तितली

—अमर गोस्वामी

पेड़ों के नीचे पड़ी सूखी लकड़ियों को बीनने लगा। मगर उसे ज्यादा लकड़ियां नहीं मिलीं। पूरे जंगल में भटकने से जयदीप बहुत थक गया। वह आराम करने के लिए लेट गया।

अचानक एक मधुर गीत सुनकर, उसकी आंख खुल गई। जयदीप ने देखा, रात काफी हो गई थी। वह बड़ा घबराया। उसने अपने चारों तरफ देखा। जंगल में चांदनी छिटकी हुई थी और उसके पास ही कुछ परियां नाच-गा रही थीं। उनके सुंदर कपड़े और परों को देखकर, जयदीप समझ गया कि वे परियां ही हैं।

जयदीप ने सुन रखा था, परियां किसी को नुकसान नहीं पहुंचातीं। उस की घबराहट कुछ कम हुई, मगर जंगल में रात बिताना आसान नहीं था। उसे भूख भी बहुत लगी हुई थी। थके-मांदे और भूखे जयदीप के मुंह से कराह निकल पड़ी।

परियां चौंक गईं। वे अब तक अपनी धुन में खोई हुई थीं। उन्होंने जयदीप को नहीं देखा था। वे जयदीप के पास आ गईं। उन्होंने जयदीप से पूछा—"तुम कौन हो? अकेले इस जंगल में रात क्यों बिता रहे हो? क्या तुम्हें जंगली जानवरों से डर नहीं लगता?"

जयदीप ने परियों को अपनी सारी कहानी सुना दी। कोमल स्वभाव की होने के कारण, परियों को उसके कष्ट सुनकर दुःख हुआ। उनमें से एक परी जो उनकी रानी थी, बोली—"मैं अभी तुम्हें एक सुंदर कुल्हाड़ी दे सकती हूं। मगर पेड़ों को काटना क्या अच्छी बात है? इस तरह कटते-कटते तो जंगल एक दिन खत्म हो जाएंगे। पेड़ मनुष्यों के दोस्त होते हैं। तुम उन्हें क्यों काटते हो?"

—"तो फिर मैं क्या करूं?" जयदीप ने पूछा।

—"तुम पेड़ उगाओ। पेड़ों पर सुंदर-सुंदर फूल उगाओ।" जयदीप की समझ में बात नहीं आई।

परियों की रानी ने कहा—"कल सुबह तुम अपने राजा के पास जाओ। जाकर उनसे कहना कि तुम बहुत सुंदर और इतने बड़े-बड़े फूल उगा सकते हो, जिन्हें कोई दूसरा नहीं उगा सकता। राजा तुम्हें अपने बागों की देखभाल के लिए रख लेंगे। मैं हर रोज रात को आकर, तुम्हारी मदद करूंगी।"

यह सुनकर जयदीप बहुत खुश हुआ।

वहीं पर एक सुंदर गुलाब का पौधा उगा हुआ था। तभी चमत्कार हुआ, एक फूल खिला। जयदीप ने फूल को खिलते हुए देखा। उसे बहुत अच्छा लगा। देखते-देखते गुलाब का फूल बहुत बड़ा हो गया।

परियों की रानी ने कहा—"इस फूल को तुम राजा को भेंट करना। राजा को तुम पर भरोसा हो जाएगा।"

जयदीप ने ऐसा ही किया।

राजा क्षेमेंद्र उतने बड़े गुलाब को देखकर, बहुत प्रसन्न हुए। गुलाब की सुगंध से पूरा दरबार महकने लगा। राजा ने जयदीप को अपने बाग की देखभाल के लिए रख लिया। जयदीप अब बहुत खुश था।

अब क्षेमेंद्र के बगीचे में सुंदर-सुंदर फूल खिलने लगे। इंद्रधनुष के रंगों वाले फूल। और सारे फूल इतने बड़े-बड़े कि पहले कभी किसी ने नहीं देखे थे। महल के बाग में खिलने वाले फूलों की बात, उनकी गंध की तरह-दूर-दूर तक फैल गई। पड़ोसी राजा

क्रूरसिंह, क्षेमेंद्र से बहुत ईर्ष्या करता था। बाग के विचित्र फूल उसकी आंखों में खटकने लगे। उसने सोचा—'जिस राज्य में इतने बड़े फूल खिलते हैं, वहां की धरती बड़ी उपजाऊ होगी। उस राजा के पास खूब धन होगा।' लालच में अंधे होकर क्रूरसिंह ने हमला बोल दिया।

अचानक हुए हमले से राजा क्षेमेंद्र हार गए। उन्हें क्रूरसिंह ने बंदी बना लिया।

क्रूरसिंह ने जीत की खुशी में कुछ दिनों के लिए उस राज्य में डेरा डाल दिया था।

दूसरे दिन सुबह जब क्रूरसिंह बाग की सैर करने आया, तो उसने देखा बाग के सारे फूल मुरझा गए हैं। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सारे फूल बहुत छोटे थे। उसे बहुत गुस्सा आया। उसने बाग की देखभाल करने वाले माली को हाजिर होने का हुक्म दिया।

सिपाही जयदीप को पकड़कर, उस दुष्ट राजा के सामने ले आए।

राजा ने कड़ककर पूछा—"फूल छोटे क्यों हो गए? फूल मुरझा क्यों गए?"

जयदीप ने बिना किसी भय के कहा—"जिस राज्य की प्रजा दुखी होगी, उस राज्य के फूल ऐसे ही मुरझा जाएंगे।"

क्रूरसिंह ने कहा—"इसे बंदी-गृह में डाल दो। आज शाम को इसका फैसला करेंगे। अभी हम शिकार करने जाएंगे।"

जयदीप दिन भर भूखा-प्यासा बंदीगृह में पड़ा रहा। उसे अपने से ज्यादा, अपने राजा की चिंता थी।

शाम होते ही जयदीप को क्रूरसिंह के सामने ले जाया गया। राजा ने जयदीप से कहा—"हम तुम्हें एक मौका और देते हैं। अगर बाग में तुम पहले जैसी सुंदरता ले आओ, तो हम तुम्हें क्षमा कर देंगे।"

जयदीप ने मना कर दिया।

क्रूरसिंह गुस्से से खड़ा हो गया। वह अपनी म्यान से तलवार निकालकर, जयदीप को मारने के लिए आगे झपटा। बाहर चारों तरफ अंधेरा छा चुका था।



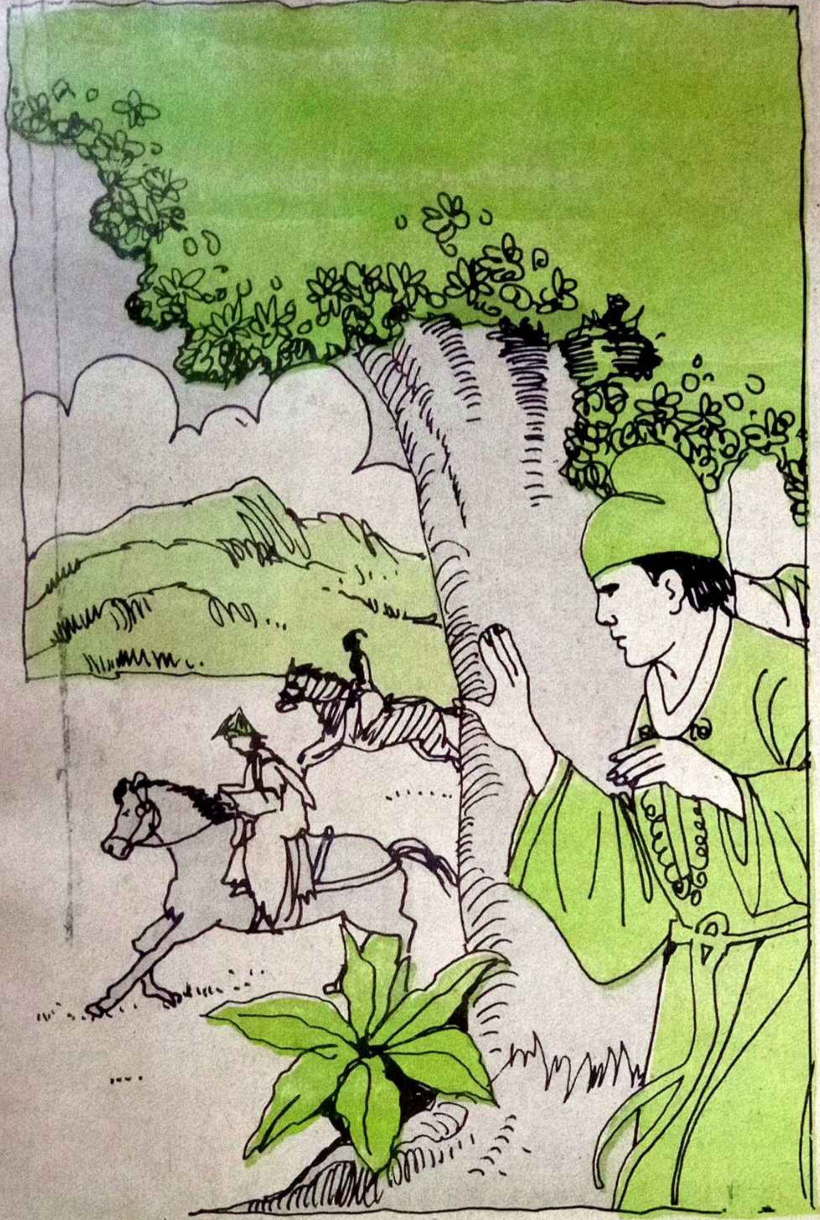
तभी उस अंधेरे से निकलकर, कई तितलियां उड़ती हुई दरबार में आईं।

एक तितली राजा की तलवार पर बैठ गई। तलवार एक कांटों वाली डाली बन गई। उसके कांटे राजा को चुभ गए। राजा ने हाथ झटककर उस डाली को छोड़ दिया। एक तितली राजा की पगड़ी पर बैठ गई। पगड़ी इतनी भारी हो गई कि राजा से संभालते न बनी। राजा गिरने लगा। राजा को संभालने के लिए जो लोग आगे बढ़े, उनका भी यही हाल हुआ।

सैनिक जयदीप को मारने के लिए बढ़े। उन सैनिकों को तितलियों ने जैसे ही छुआ, वे सब मेंढक बन गए। सारे मेंढक दरबार में फुदकने लगे। दुष्ट क्रूरसिंह बहुत घबराया। उसने जयदीप को छोड़ देने का हुक्म दिया।

तितलियां कोई नहीं, वे परियां ही थीं। तितली बनी परी रानी ने जयदीप से कहा—"जाओ, अपने राजा को बंदीगृह से मुक्त करो।"

क्रूरसिंह ने बाद में अपनी हार स्वीकार कर ली। जयदीप ने सभी परियों को धन्यवाद दिया। राजमहल के बाग में फिर से पहले जैसे बड़े-बड़े और मीठी सुगंध वाले फूल खिलने लगे। ●



लो उपहार

—डा. ओम्प्रकाश सिंहल

हजारों साल पुरानी बात है। चीन के पवित्र पहाड़ थायशान की तलहटी में एक आदमी रहता था। उसका नाम हू मू फान था। एक दिन जब वह जंगल में लकड़ियां बटोर रहा था, तब उसे अचानक एक आवाज सुनाई दी। उसने मुड़ कर देखा कि लाल कपड़े पहने एक घुड़सवार उसकी ओर दौड़ा आ रहा था। पास आते ही वह बोला—''थायशान पर्वत के राजा ने तुम्हें तुरंत बुलाया है।''

यह सुनकर हू मू हक्का-बक्का रह गया। उसे कोई जवाब न सूझा। इतने में ही एक दूसरा घुड़सवार वहां आ पहुंचा। उसने भी वही आदेश सुनाया। हू मू जानता था कि मना करने से कई बड़ी भारी मुसीबत सिर पर आ सकती हैं। इसलिए वह घुड़सवारों से काफी फासला रखते हुए, पीछे-पीछे चल दिया।

हू मू को पैदल चलते हुए बहुत अधिक समय नहीं बीता था। अचानक उसने देखा कि दोनों घुड़सवार कहीं गायब हो गए हैं। उसके सामने एक आलीशान महल खड़ा था। उसे समझते देर न लगी कि महल थायशान पर्वत के राजा का है। वह तुरंत भीतर गया। सिर झुकाकर पर्वतराज थायशान को प्रणाम किया। पर्वतराज हू मू को अपने भोजन कक्ष में ले गए। जोरदार दावत दी। फिर कहा—''मैंने तुम्हें एक खास काम से बुलाया है।''

हू मू ने विनम्रतापूर्वक कहा—''महाराज ! आज्ञा दीजिए।''

पर्वत राज ने बताया कि वह अपने दामाद के पास एक पत्र भेजना चाहते हैं। हू मू ने प्रसन्नतापूर्वक पूछा—''श्रीमन् ! कृपया यह बताएं कि आपके दामाद कहां रहते हैं ? मैं पत्र पहुंचाने में तनिक भी विलम्ब न करूंगा।''

राजा ने बताया कि उनकी प्यारी बिटिया नदियों के राजा की पत्नी है। हू मू ने वहां पहुंचने का रास्ता बताने का अनुरोध किया। पर्वतराज ने बताया—''वहां पहुंचना कोई कठिन काम नहीं है। तुम नदी की मझधार में अपनी नाव रोक कर ज्यों ही उसकी नौकरानी को आवाज लगाओगे, त्यों ही कोई न कोई पत्र लेने आ जाएगा।''

हू मू पत्र लेकर नदियों के राजा के घर की ओर चल दिया। मझधार में पहुंच कर उसने नौकरानी को आवाज लगाई। आवाज लगाते ही नदी में से एक सुंदर स्त्री बाहर निकल आई। उसने पत्र लिया और एकदम गायब हो गई। हू मू अभी कुछ सोच ही रहा था कि वह स्त्री पुनः प्रकट हो गई। उसने हाथ जोड़कर निवेदन किया—''हमारे राजा आपसे मिलना चाहते हैं। कृपया, मेरे साथ चलने का कष्ट करें। वहां पहुंचने के लिए आंखें बंद करना जरूरी है।''

हू मू ने अपनी आंखें बंद कीं। कुछ ही क्षणों में

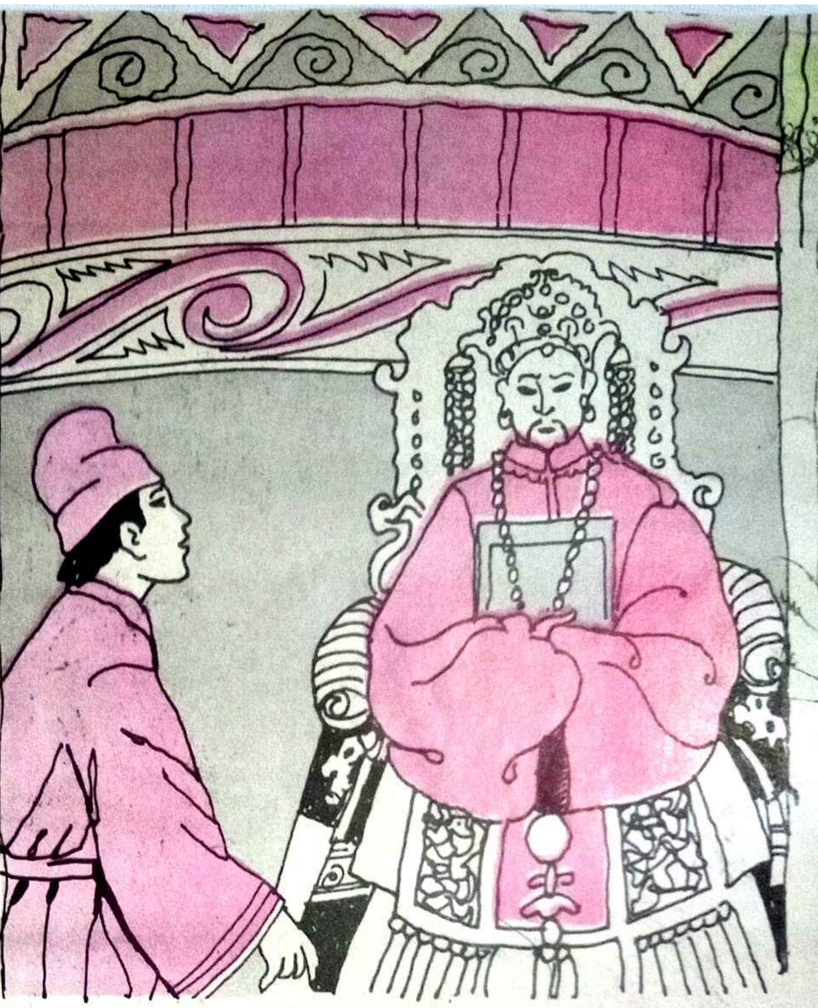
वह नदियों के राजा के सामने था। राजा बड़े प्रेम से मिला। खूब आवभगत की। शानदार दावत दी।

फिर कहा—"बिना विलम्ब किए पत्र पहुंचाने के लिए मैं आपका हृदय से आभारी हूं। मैं आपको यादगार के रूप में एक उपहार देना चाहता हूं। पर मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि उपहार में क्या दिया जाए?" फिर उसने अपनी मखमली चप्पलें मंगवाईं और हू मू को भेंट कर दीं। हू मू ने धन्यवाद देते हुए विदाई ली और पलक झपकते ही अपनी नाव में पहुंच गया।

नदियों के राजा से विदा लेने के बाद हू मू छंगन गया। फिर लगभग साल भर बाद लौटा। अपने घर जाने से पहले उसने पर्वतराज थायशान को उसकी बेटी के घर का हालचाल बताना जरूरी समझा। उसने नाम लेते हुए एक पेड़ को थपथपाया। तुरंत वही दो घुड़सवार प्रकट हुए, जो उसे पहले पर्वतराज थायशान के पास ले गए थे। वह आनन-फानन पर्वतराज के सामने पहुंचा दिया गया। उसने विस्तार से सारा समाचार कहा। बिटिया और दामाद का हालचाल सुन कर पर्वत राज बहुत प्रसन्न हुए। फिर बोले—"मैं तुमसे बहुत खुश हूं। तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूंगा।" फिर उन्होंने हू मू को सत्कारपूर्वक विदा किया।

लौटते हुए हू मू हा ओ लीछन गया। मरने के बाद सभी आत्माएं वहीं पर इकट्ठी होती हैं। अपने पिता को वहां देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने देखा कि कुछ अन्य आत्माओं की तरह उसके पिता को भी कड़ी मेहनत वाला काम सौंपा गया है। पिता की हालत देखकर हू मू की आंखों में आंसू आ गए। उसने घुटने टेककर पिता को प्रणाम किया। पूछा—"आप यहां कैसे आए?"

पिता ने जवाब दिया—"मृत्यु के बाद मुझे यहां तीन साल तक काम करने की सजा दी गई है। मैंने जैसे-तैसे दो साल पूरे कर लिए हैं। लेकिन मुझे ऐसा कठिन काम सौंपा गया है कि मैं उसे चाहते हुए भी पूरा नहीं कर पा रहा हूं। मेरी इच्छा अपने गांव लौटने की है। मैंने सुना है कि पर्वतराज थायशान से तुम्हारी



मित्रता है। अगर तुम उनसे यह निवेदन करोगे कि मुझे अपने गांव जाने दिया जाए, तो वह मना नहीं करेंगे।"

पिता की बात सुन कर हू मू पर्वतराज थायशान के पास गया। फिर साष्टांग प्रणाम किया। इसके बाद अपने मन की बात कह दी। उसकी बात सुन कर पर्वतराज ने कहा—"तुम मेरी बातों से यह मत समझना कि मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करना नहीं चाहता। लेकिन मरे हुए और जिंदा लोगों के आचार-विचार एक-दूसरे से एकदम अलग हो जाते हैं। इसलिए जो व्यक्ति एक बार मर जाता है, उसे फिर से अपने लोगों के बीच जा कर नहीं रहना चाहिए।"

हू मू ने बिलखते हुए पर्वतराज से प्रार्थना की—"आप कृपया मेरे पिता को घर जाने की इजाजत दें। मैं आपकी इस कृपा के लिए हमेशा आभार मानूंगा।" जब हू मू बहुत देर तक अनुनय-विनय करता रहा, तब पर्वतराज ने उसके पिता को गांव जाने की इजाजत दे दी।

हू मू प्रसन्नता पूर्वक अपने घर लौट आया।

लेकिन घर लौटने के कुछ समय बाद उसके बच्चों की मृत्यु होनी शुरू हो गई । साल भर के भीतर उसके कई बच्चे इस धरती को छोड़कर चल दिए । इससे वह बहुत चिंतित हो गया । उसने पर्वतराज थायशान के पास जाने का निश्चय कर लिया । अपना नाम बताते हुए हू मू ने एक पेड़ को थपथपाया और कहा कि वह पर्वत देवता से मिलना चाहता है । यह सुनते ही पहले वाला घुड़सवार हाजिर हुआ । वह उसे तुरंत पर्वतराज के पास ले गया ।

हू मू ने सिर झुका कर प्रणाम किया । फिर दुखी स्वर में बोला—"आपके यहां से घर जाने के बाद मेरे कई लड़कों की मृत्यु हो गई है । मुझे डर है कि ये बुरे दिन भविष्य में भी मेरा पीछा नहीं छोड़ेंगे । मैं आपके पास यह विनती करने आया हूं कि आप कृपया मुझ पर दया करें ।"

पर्वतराज थायशान ने ताली बजाई और कहा—"तुम्हें याद है कि मैंने क्या कहा था ? मैंने कहा था न कि जीवित और मृत व्यक्तियों के आचरण एक-दूसरे से अलग होते हैं । उन्हें कभी एक साथ नहीं रहना चाहिए ।" फिर उसने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे हू मू के पिता को बुलाकर लाएं । सेवकों ने आनन-फानन में हू मू के पिता को हाजिर कर दिया । पर्वतराज थायशान ने उससे कहा—"तुमने अपने गांव वापस जाने की विनती की थी । गांव जा कर तुम्हें अपने वंशजों की रक्षा करनी चाहिए थी । ये सब बच्चे कैसे मर गए ?"

हू मू के पिता ने उत्तर दिया—"जब मैं बहुत दिनों बाद अपने गांव पहुंचा, तब मेरी खुशी का ठिकाना न रहा । विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों से भरपूर भोजन करने के बाद मेरी इच्छा अपने पोतों से मिलने की हुई । बस मैंने उन्हें अपने पास बुला लिया ।"

पर्वतराज थायशान ने एक दूसरी आत्मा को बुलाया । उसे हू मू के पिता का स्थान लेने का आदेश दिया । हू मू का पिता वहां से रोता हुआ चल दिया । हू मू भी अपने घर आ गया । उसके बाद बच्चों पर किसी प्रकार की मुसीबत नहीं आई । वे हंसी-खुशी से रहने लगे । ●

छड़ी से कहना

—ममता किरण

कुंदन नगर में एक राजा राज करते थे । उनका नाम था दिव्यसेन । दिव्यसेन बड़े ही दानी और दयालु राजा थे । आसपास के राज्यों में उन्हें काफी सम्मान दिया जाता था । प्रजा भी अपने राजा से बहुत खुश थी । चारों ओर खुशहाली थी ।

दिव्यसेन के एक ही पुत्र था । उसका नाम था—उत्तमकुमार । लाड़-प्यार में उत्तम बहुत बिगड़ गया था । स्वभाव में वह अपने पिता के बिल्कुल विपरीत था ।

दिव्यसेन उसे बहुत समझाते, लेकिन उत्तम पर उनकी बातों का कोई असर न होता । इसी कारण राजा हमेशा चिंता में डूबे रहते । सोचते कि उनके बाद राज्य का क्या होगा ? उत्तम को यदि उन्होंने अपना उत्तराधिकारी बनाया, तो प्रजा परेशान हो जाएगी ।

राजमहल में एक बहुत बड़ा बगीचा था । उस बगीचे में सुंदर-सुंदर फूल और तरह-तरह के फल लगे थे । बगीचे की देखभाल शिव काका करते थे । शिव काका के पांच बेटों में से छोटा बेटा था—बंशी । जब वह बोलता, तो मानो मुंह से फूल झरते । बंशी उसी बगीचे में खेलकर बड़ा हुआ था । बगीचे के पौधे और फूल सभी उसके दोस्त थे ।

उन्हीं फूलों के बीच, एक सुंदर-सी फूल वाली परी रहती थी । परी जब भी बंशी को बगीचे में बैठा देखती, वह झट फूल से निकलकर उस के पास आ बैठती । ढेरों बातें करती ।

ज्यो-ज्यो बंशी बड़ा हो रहा था, त्यों-त्यों उसके अच्छे गुण सामने आते जा रहे थे । वह राजमहल में अक्सर राजा के लिए फूलों का गुलदस्ता लेकर जाता था । राजा उसे देखकर, बहुत खुश होते । वह बंशी को अक्सर उपहारस्वरूप कुछ न कुछ दे देते ।

एक बार बंशी ने राजमहल में घुस रहे चोरों को अपने साहस से पकड़वाकर, राजा का दिल जीत लिया । दिव्यसेन सोचते—'एक यह माली का बेटा है और एक हमारा बेटा ! दोनों में कितना फर्क है ?

काश ! हमारा बेटा भी ऐसा ही होता।'

बंशी जब भी राजा के कमरे से निकलता, उत्तम गुस्से से आग-बबूला हो जाता। उसे राजमहल में बंशी का आना अच्छा नहीं लगता था। वह नहीं चाहता था कि उसके पिता एक माली के बेटे को प्यार करें।

बंशी उत्तम से दोस्ती करना चाहता था, लेकिन उत्तम उसकी तरफ हिकारत की नजरों से देखता। यही सोचने में लगा रहता कि वह ऐसा क्या करे, जिससे बंशी का राजमहल में आना बंद हो जाए। उसे डर लगता कि कहीं उसके पिता बंशी को गोद न ले लें।

आखिर एक दिन उत्तम ने एक चाल चली। उसने सिपाहियों को पहले से ही अपनी तरफ मिला लिया था। बंशी को उसने अपने कमरे में बुलाया। जैसे ही बंशी कमरे में घुसा, उत्तम ने 'चोर, चोर'... का शोर मचा दिया। बंशी कुछ समझ पाता, उससे पहले ही सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया।

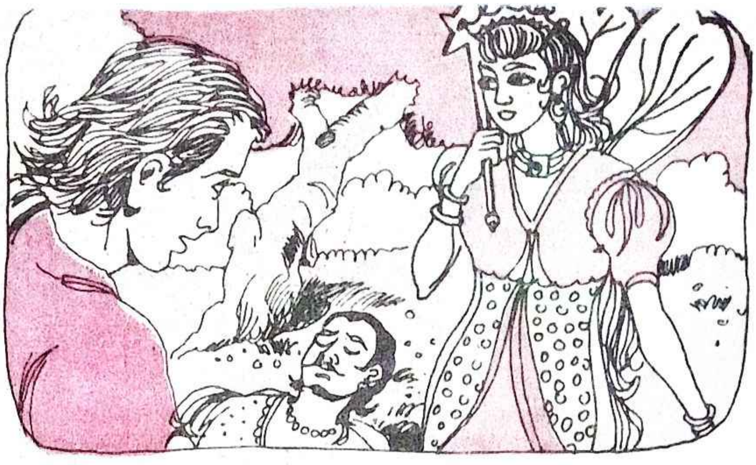
जब राजा तक यह बात पहुंची, तो उन्होंने बंशी से सारी बात पूछी। पूरी बात सुनकर राजा को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने बंशी को सही-सलामत घर पहुंचाने का आदेश दिया। उत्तम को बुलाकर बुरी तरह डांटा। इस घटना से उत्तम बंशी की जान का दुश्मन ही बन बैठा।

नाग-पंचमी का दिन था। उस दिन उत्तम अपने दो-तीन मित्रों के साथ बंशी को मारने के इरादे से सुबह-सुबह ही बगीचे में पहुंच गया। बंशी बगीचे में पौधों को पानी दे रहा था। एक काला नाग उत्तम को काटते हुए सर्र से निकल गया।

उत्तम ने अपने दोस्तों को चीख-चीखकर आवाज लगाई, मगर वे तो डर के मारे पहले ही भाग चुके थे।

उत्तम की आवाज सुनकर, बंशी दौड़ा उस तरफ। तब तक वह मूर्च्छित हो चुका था। बंशी ने उत्तम को इस अवस्था में देखा, तो हैरान रह गया। वह उसे होश में लाने का प्रयत्न करने लगा, लेकिन असफल रहा।

इतने में बंशी ने देखा कि वही परी उसके सामने खड़ी है।



परी बंशी से बोली—"तुम क्यों इसके लिए परेशान हो रहे हो ? इसे इसके पापों की सजा मिल गई है। यह तुम्हें मारने के लिए यहां आया था।"

बंशी बोला—"जो भी हो, आखिर यह हमारे प्रिय राजा का बेटा है। मेरा दोस्त है। तुम्हें इसे जीवनदान देना ही होगा। क्या हमारी मदद नहीं करोगी?"

परी ने आकाश की तरफ अपना हाथ उठाया, तो उसके हाथ में एक सुनहरी छड़ी आ गई। परी ने वह जादुई छड़ी तीन बार उत्तम के शरीर से छुआई। देखते-देखते उत्तम को होश आ गया। अपने सामने बंशी और एक सुंदर-सी लड़की को देखकर उत्तम हैरान हो गया। उसने बंशी से पूछा—"मैं यहां कैसे और यह.... ।"

बंशी ने उत्तम को सारी बात बताई। उत्तम बहुत शर्मिंदा हुआ। उसने बंशी से माफी मांगी और परी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

परी ने बंशी से कहा —"मुझे कुछ दिन धरती पर रहने की सजा मिली थी। अब समय पूरा हो गया है। यहां तुम्हारे साथ पता ही नहीं लगा कि समय कैसे कट गया ? अब मैं जाती हूं।" जाते समय परी ने बंशी को सुनहरी छड़ी दी। बोली—"मुझे हमेशा तुम्हारी याद आएगी। जब भी मेरी जरूरत पड़े, इस छड़ी से कहना। मैं आ जाऊंगी।"—कहकर परी चली गई।

उत्तम, बंशी को राजमहल ले गया। उसने राजा को सारी घटना सुनाई। कहा —"आज तो बंशी भइया ने मेरी जान बचाई है, जबकि मैं उन्हें मारने गया था। मैंने बंशी के ऊपर चोरी का झूठा इल्ज़ाम भी लगाया।" कहते हुए उत्तम की आंखों में आंसू आ गए। राजा उत्तम के बदले हुए स्वभाव को देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने दोनों को गले से लगा लिया। ●

घोड़ी पर चोर

—वीरकुमार अधीर



खान साहब की प्रसिद्धि में उनके अरबी घोड़े और घोड़ी का बहुत बड़ा हाथ था। वैसे खान साहब खानदारी आदमी थे। घोड़ा और घोड़ी रखना उनके रईसी ठाट-बाट और शान-शौकत के लाजवाब सबूत थे। इन्हें खान साहब के अब्बाजान ने एक अरबी सौदागर से खरीदा था। ये दोनों ही जानवर 'रेस' के मैदान में नाम कमा चुके थे। घोड़े का नाम था जांबाज और घोड़ी का खानमखाना। दोनों ही लाजवाब थे। फिर भी खानमखाना का नाम ज्यादा था। दौड़ने में वह जांबाज से ज्यादा तेज नहीं थी। यदि उसका सवार उसके एक खास गुर से परिचित होता, तो दौड़ में उसके अव्वल आने पर संदेह नहीं किया जा सकता था। उस खास गुर से खान साहब ने जांबाज को भी खानमखाना के सामने पिछड़ते देखा था।

प्रसिद्धि की यह हवा चोरों के कानों तक भी पहुंची। आखिर, एक रात चोरों के एक सरदार ने खान साहब के अस्तबल पर मेहरबानी कर ही दी। वह जानता था कि खानमखाना सबसे तेज दौड़ने वाली घोड़ी है। इसलिए उसने उसी को खोला और चुपचाप अस्तबल से बाहर निकाल लाया।

खटका सनुकर खान साहब की आंख खुल गई। तब तक चोरों का सरदार घोड़ी पर चढ़कर ऐड़ लगा चुका था। तुरंत हड़बड़ा कर उठ बैठे। बाहर निकले। बहुत दूर खानमखाना पर किसी सवार को भागते पाया। वह तुरंत अपने घोड़े जांबाज पर सवार हो गए और उसे चोर के पीछे दौड़ा दिया।

चोर ने पीछे मुड़कर देखा। खान साहब घोड़े पर सवार हवा की तरह उसका पीछा कर रहे हैं। उसने भी खानमखाना की चाल तेज कर दी। अब क्या था, दोनों मीलों दूर निकल आए। रास्ते पर धूल का गुब्बार छा गया।

खान साहब अभ्यस्त सवार थे। चोरों का सरदार खानमखाना को दौड़ाने के गुर से परिचित नहीं था। सो खान साहब का जांबाज चोरों के सरदार के काफी नजदीक आ पहुंचा। ऐसे में खान साहब यह भूल ही गए कि वह चोर को पकड़ने के लिए दौड़ रहे हैं।

जब जांबाज खानमखाना के काफी निकट आ गया, तो उन्हें लगा कि अब थोड़ी ही दौड़ में खानमखाना जांबाज से हार जाएंगी। और खानमखाना की यह हार उन्हें कतई बरदाश्त नहीं होगी। उन्होंने सोचा— 'यदि इस दौड़ में खानमखाना जांबाज से हार गई, तो लोगों की नजर में उसकी इज्जत कम हो जाएंगी। यह खानमखाना की प्रतिष्ठा का प्रश्न था। एकदम उन्होंने हांक लगाई— "अरे मियां, इसका कान ऐंठ दो, तब यह तेज दौड़ेगी!"

चोर ने गरदन घुमा कर आश्चर्य से पीछे की ओर देखा। तब तक खान साहब का घोड़ा एकदम नजदीक जा पहुंचा था। चोर मन ही मन हंसा और उसने तुरंत खानमखाना का कान पकड़ कर पूरी ताकत से ऐंठ दिया। फिर क्या था, खानमखाना को तो जैसे पंख लग गए। अरबी नस्ल का सबूत उसने तुरंत दे दिया। धीरे-धीरे खान साहब पीछे छूटते गए।

खानमखाना के जाने का खान साहब को अफसोस तो बहुत हुआ, मगर वह लोगों से यह कह कर संतोष कर लेते थे— "भई, मैं क्या करता! काफी दूर पीछा किया, लेकिन चोर खानमखाना पर सवार था। और खानमखाना ने हारना सीखा नहीं था।" ●

मैं चला

—रमेशचन्द्र शर्मा



एक साधु थे। तंत्र-मंत्र के जानकार थे। इसीलिए भक्तों की भीड़ उनके आसपास जुटी रहती थी। भक्त आते, तो साधु को बिना मांगे कुछ भेंट दे जाते। इसी तरह साधु के पास डेढ़ सौ स्वर्ण मुद्राएं इकट्ठी हो गईं। साधु ने सोचा—'मैं इस धन का क्या करूंगा ? इसे किसी परोपकार के कार्य में खर्च कर देना चाहिए।'

उन्हीं दिनों प्रयागराज में अर्द्धकुम्भ का पर्व आने वाला था। साधु सोचने लगे—'इससे अच्छा अवसर और क्या होगा ? अर्द्धकुम्भ पर जाकर मुझे इस धन से एक भंडारा करना चाहिए। धन का यही सदुपयोग है।' पर उन्हें यह चिंता हुई कि इन स्वर्ण मुद्राओं को सही-सलामत वहां तक कैसे ले जाएं।

साधु ने सोचा—'रास्ते में चोर-डाकू मिल गए, तो वे धन लूट लेंगे और मुझे भी जिंदा नहीं छोड़ेंगे।' साधु ने एक ऐसा डंडा खोजा, जिसके अंदर स्वर्ण मुद्राओं को छिपाकर रखा जा सकता था। डंडे को अंदर से खोखला कर दिया। उसमें मोहरें रख दीं। ऊपर से ऐसी पेंचदार मूठ बनवाई कि किसी को पता न लगे। वह डंडा मुड़ा हुआ था।

साधु ने एक हाथ में डंडा और दूसरे में कमंडल लिया। प्रयागराज की ओर चल दिए। यात्रा लम्बी थी। चलते-चलते वह एक नगर में पहुंचे। वहां एक व्यापारी रहता था। धर्म-कर्म में उसकी रुचि थी। पर वह था लालची। उसके कोई संतान न थी। वह साधु-महात्माओं की यही सोचकर सेवा करता था कि शायद उनके आशीर्वाद से ही उसे संतान का सुख प्राप्त हो जाए।

साधु को रात भर ठहरना था। वह व्यापारी के घर गए। उन्हें देखकर व्यापारी खुश था। आदर-सत्कार के साथ साधु को वह घर में ले गया। भोजन कराने के बाद व्यापारी ने साधु के लिए बिस्तर लगा दिया। साधु लेट गए, तो व्यापारी उनके पैर दबाने लगा।

साधु दिन भर के थके थे, सो गए। सहसा व्यापारी की नजर साधु के डंडे पर पड़ी। उसने डंडा उठाया, तो वह भारी लगा। उसने सोचा—'यह बांस का डंडा भारी कैसे हो गया ?' वह उसकी मूठ को ध्यान से देखने लगा। मूठ में लगे पेंच पर उसकी नजर पड़ी। उसने मूठ को घुमाया। पेंच खुल गए। उसमें से खनखन की आवाज आई। उसने सारी स्वर्ण मुद्राएं उसमें से निकाल लीं। पत्नी को बुलाकर कहा—"देखो, यह साधु तो बड़ा करामाती है। इसके डंडे में से सोना पैदा होता है।"

व्यापारी की पत्नी थी ईमानदार। बोली—"रहने भी दो। चोरी करना ठीक नहीं।" पर व्यापारी ने उसकी बात न मानी।

सुबह हुई। साधु जगे। चलने के लिए तैयार हो गए। व्यापारी ने उनके पैर छुए। वह साधु को नगर के बाहर तक छोड़ने गया। कई दिन तक चलते रहने के बाद साधु प्रयागराज पहुंचे।

कुंभ पर्व आरम्भ हो गया। साधु बाबा की इच्छा थी कि संक्रांति के दिन भंडारा किया जाय। वह महंत के पास गए। उनसे अपने मन की बात कही। महंत ने दूसरे ही दिन वहां आए साधुओं को भंडारे का निमंत्रण भेज दिया। भंडारे की तैयारी करने वालों ने साधु से कहा—"महाराज, भंडारे के लिए बहुत-सा सामान आ गया है। उनको पैसा भी देना है। आप उनका पैसा चुका दीजिए।" साधु ने बड़े विश्वास के साथ कहा—"ठीक है, कल सुबह आकर पैसा ले

जाना।"

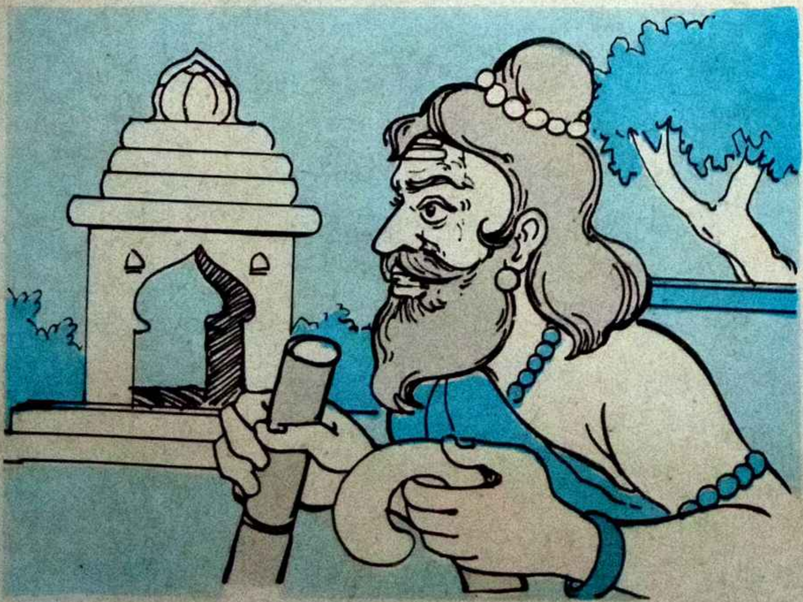
रात को साधु ने डंडे का पेंच खोलकर देखा, तो हैरान रह गए। उसके अंदर तो लोहे के टुकड़े थे। साधु समझ गए कि व्यापारी ने उनके साथ विश्वासघात किया है। वह सोच रहे थे— 'भंडारे के प्रबंधकों को मैं क्या मुंह दिखाऊंगा ?' वह अपनी कुटिया से निकले। आधी रात का समय था। संगम पर पहुंचे। वहां भगवान से प्रार्थना की—"प्रभु ! यह तेरी कैसी लीला है।" यह कहकर उन्होंने जल में छलांग लगा दी।

उधर व्यापारी की दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि होने लगी। शहरों में उसकी कोठियां बन गईं। कुछ दिन बाद उसकी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। जो भी बच्चे को देखता, देखता ही रह जाता।

दिन बीतते रहे, बच्चे की उम्र बढ़ती गई। पढ़ने-लिखने में भी वह तेज था। धर्म-कर्म में उसकी रुचि थी।

व्यापारी ने एक सुंदर कन्या से अपने बेटे का विवाह कर दिया। एक दिन बेटे ने पिता से कहा—"पिता जी, प्रयागराज में कुंभ का पर्व है। मैं वहां एक माह रहकर साधु-संन्यासियों की सेवा करना चाहता हूं।" व्यापारी ने कहा—"बेटे, यह तो बहुत अच्छी बात है। तुम वहां जरूर जाओ। मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।"

व्यापारी ने बेटे के लिए प्रयागराज में ठहरने आदि की व्यवस्था कर दी। जल विहार के लिए एक नौका का प्रबंध था।



एक दिन व्यापारी के बेटे ने भंडारा करने का निश्चय किया। महात्माओं को निमंत्रण भेजा गया। यज्ञ हुआ। उसके बाद भंडारा शुरू हो गया। साधु-महात्माओं ने भोजन कराने वाले व्यापारी के पुत्र की प्रशंसा की। उसने साधु-संन्यासियों को दान दक्षिणा भी दी। पर उस दिन बेटे ने कुछ नहीं खाया।

व्यापारी ने बेटे से कहा—"बेटा, दिन ढल गया है। अब तो तुम अपना उपवास तोड़ दो। तुम्हारे कारण तुम्हारी मां भी भूखी है। चलो, कुछ खा लो।" यह सुनकर व्यापारी के पुत्र ने कहा—"पिता जी, मेरे सिर में दर्द है। मुझे खाने-पीने की इच्छा नहीं है।" यह सुनकर व्यापारी घबरा गया।

तुरंत ही शहर के वैद्य-हकीमों को बुलाया गया। मगर उसकी हालत बिगड़ती ही गई। किसी की दवाई ने कोई असर नहीं किया। व्यापारी और उसकी पत्नी बेटे के पास बैठे थे। बेटे ने पिता से कहा—"तुम लोग मुझे जानते हो। मैं कौन हूं ?" व्यापारी आंखों में आंसू भरकर बोला—"बेटा, तू कैसी बात कर रहा है ? तू हमारे घर का दीपक है। हमारे घर का सहारा है।" वह बोला—"नहीं, मैं वही साधु हूं, जिसकी स्वर्ण मुद्राएं आपने चुराई थीं। मुझे इस संसार में जन्म लेने की आवश्यकता नहीं थी। किंतु भंडारा करने का मेरा संकल्प अधूरा रह गया था। इसीलिए उसे पूरा करने के लिए मैंने तुम्हारे घर जन्म लिया और डेढ़ सौ स्वर्ण मुद्राओं की जगह तुम्हारी कई गुना रकम खर्च करा दी। यह दुःख तुम्हारी चोरी का परिणाम है। अच्छा, अब मैं चलता हूं।"

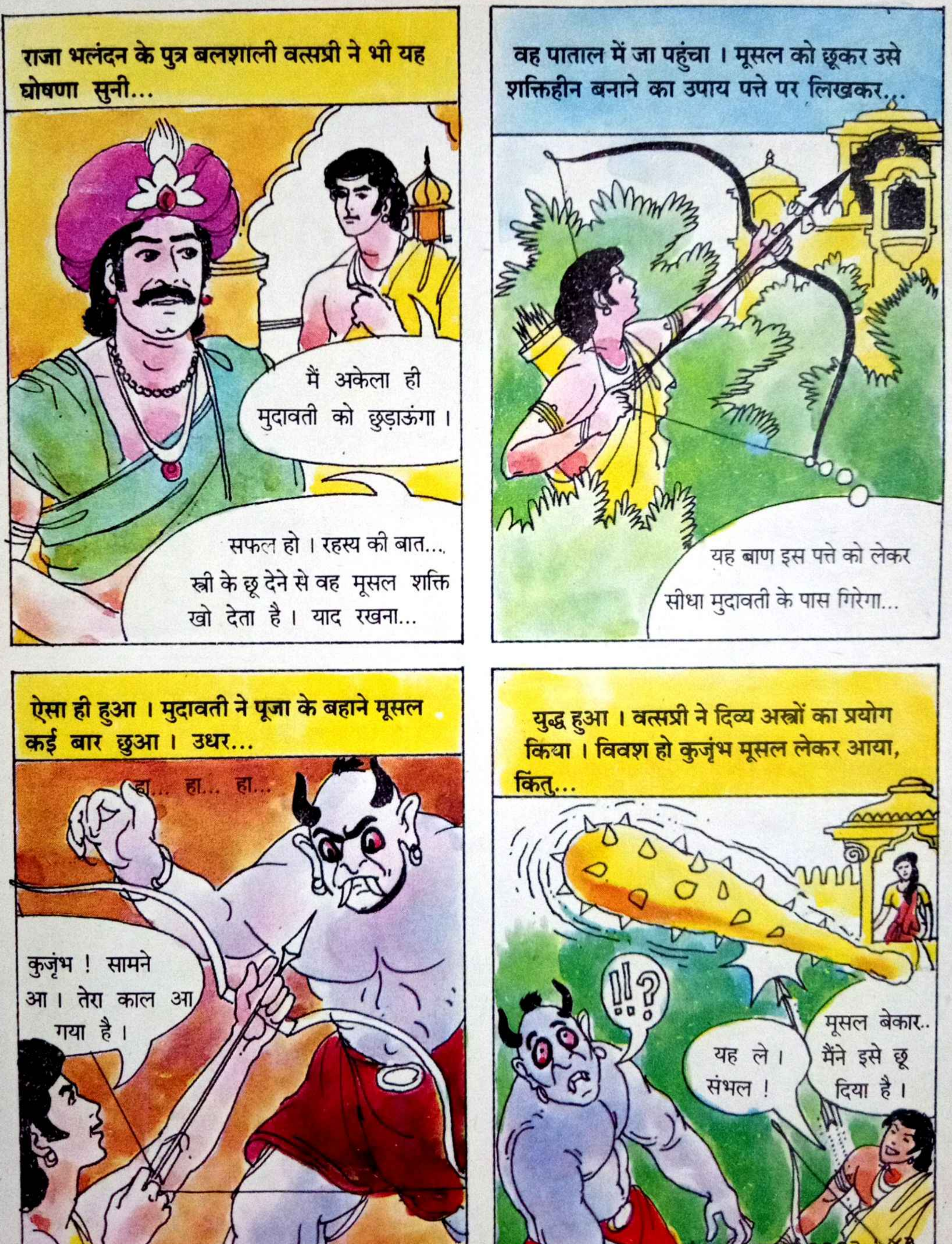
यह सुनकर व्यापारी बहुत दुखी हुआ। बहुत पुरानी एक घटना आंखों के सामने तैर गई, जब उसने घर आए साधु की स्वर्ण मुद्राएं चुराई थीं। उसने बेटे की ओर देखा, तो लगा-जैसे उसकी जगह वही साधु सामने खड़े हों। फिर वहां कुछ न रहा। बेटा न जाने कहां चला गया ? व्यापारी और उसकी पत्नी पछाड़ खाकर गिर पड़े, जोर-जोर से रोने लगे। लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता था। ●

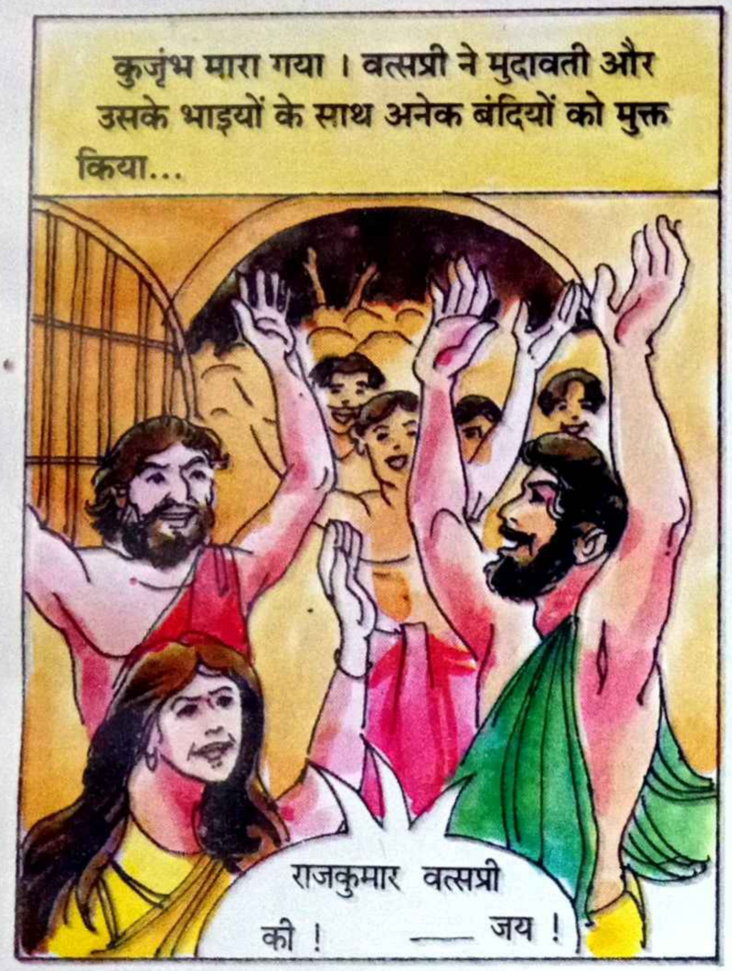
अनोखा मूसल

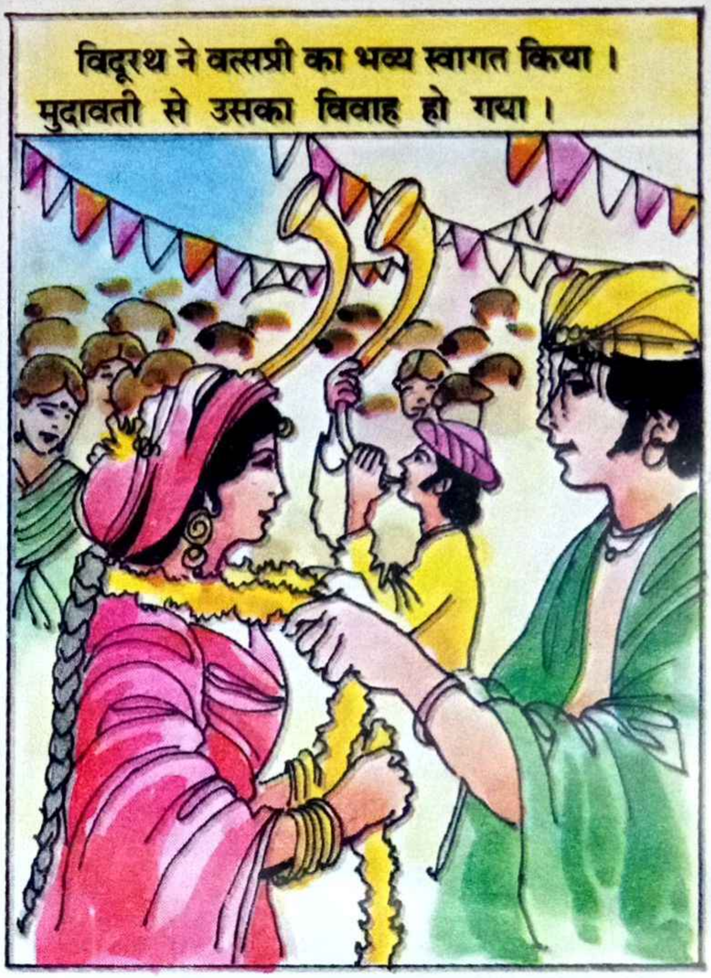


विदूरथ बड़े प्रतापी राजा थे । एक दिन शिकार खेलने गए...
आश्चर्य ! कितना गहरा गड्ढा ! किसने खोदा ? क्यों ? इन तपस्वी से पूछूं !
तपस्वी ने बताया...
अत्याचारी कुजृंभ राक्षस का बनाया... ... पाताल तक जाता है ।
पाताल तक...
यह भी बताया कि कुजृंभ के पास विश्वकर्मा का बनाया अनोखा मूसल है । उसके प्रहार से कोई नहीं बचता । राजा लौटे तो...
कुजृंभ ने हमारे राज्य में उत्पात मचाना शुरू कर दिया...
तुरंत उसे मारना होगा !
हमारी सेना का सामना नहीं कर पाएगा...
उसी दिन राजकुमारी मुदावती बगीचे में टहल रही थी कि...
हा... हा... हा... मैं कुजृंभ...
भागो ! प्राण बचाओ !


कुजृंभ राजकुमारी को ले गया । सारा राज्य शोक में डूब गया । विदूरथ ने अपने पुत्रों सुनीति और सुमति को बुलाया...
सेना लेकर जाओ । कुजृंभ का नाश करो । मुदावती को छुड़ाकर लाओ !
जो आज्ञा !
राजकुमारों के नेतृत्व में सेना उस गडढ़े में उतर गई...
कुजृंभ से युद्ध हुआ, किंतु उसने मूसल से...
हा... हा... हा... सब मारे गए । अब तुम्हारे सामने मैं मुदावती से विवाह...
विदूरथ शोक और पराजय से तिलमिला उठे...
मुनादी करा दो —जो कुजृंभ को मारेगा, मुदावती का विवाह उसी से होगा ।

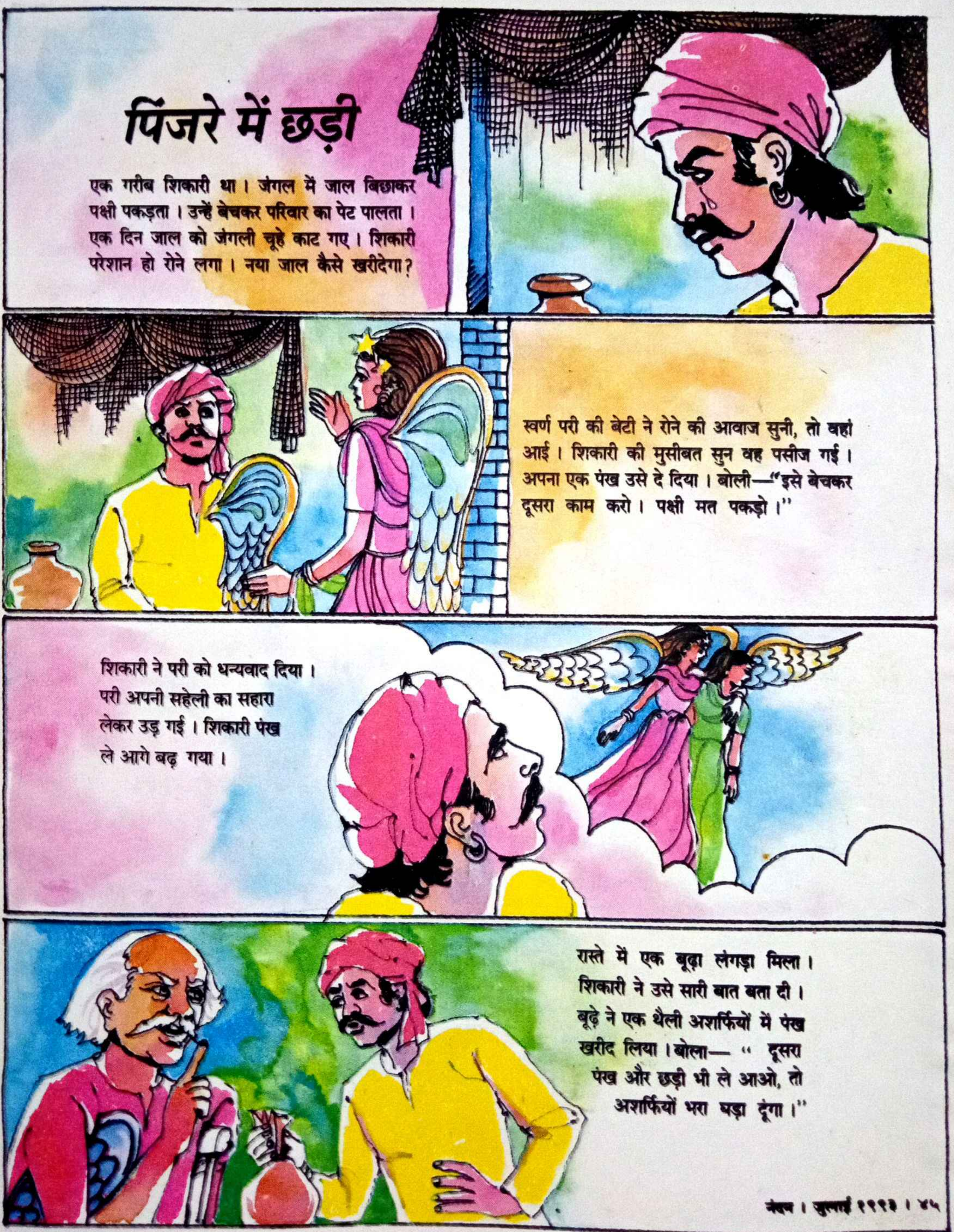

राजा भलंदन के पुत्र बलशाली वत्सप्री ने भी यह घोषणा सुनी...
मैं अकेला ही मुदावती को छुड़ाऊंगा ।
सफल हो । रहस्य की बात... स्त्री के छू देने से वह मूसल शक्ति खो देता है । याद रखना...
वह पाताल में जा पहुंचा । मूसल को छूकर उसे शक्तिहीन बनाने का उपाय पत्ते पर लिखकर...
यह बाण इस पत्ते को लेकर सीधा मुदावती के पास गिरेगा...
ऐसा ही हुआ । मुदावती ने पूजा के बहाने मूसल कई बार छुआ । उधर...
हा... हा... हा...
कुजृंभ ! सामने आ । तेरा काल आ गया है ।
युद्ध हुआ । वत्सप्री ने दिव्य अस्त्रों का प्रयोग किया । विवश हो कुजृंभ मूसल लेकर आया, किंतु...
!!?
यह ले । संभल !
मूसल बेकार.. मैंने इसे छू दिया है ।


कुजंभ मारा गया । वत्सप्री ने मुदावती और उसके भाइयों के साथ अनेक बंदियों को मुक्त किया...
राजकुमार वत्सप्री की ! —— जय !


विदूरथ ने वत्सप्री का भव्य स्वागत किया । मुदावती से उसका विवाह हो गया ।

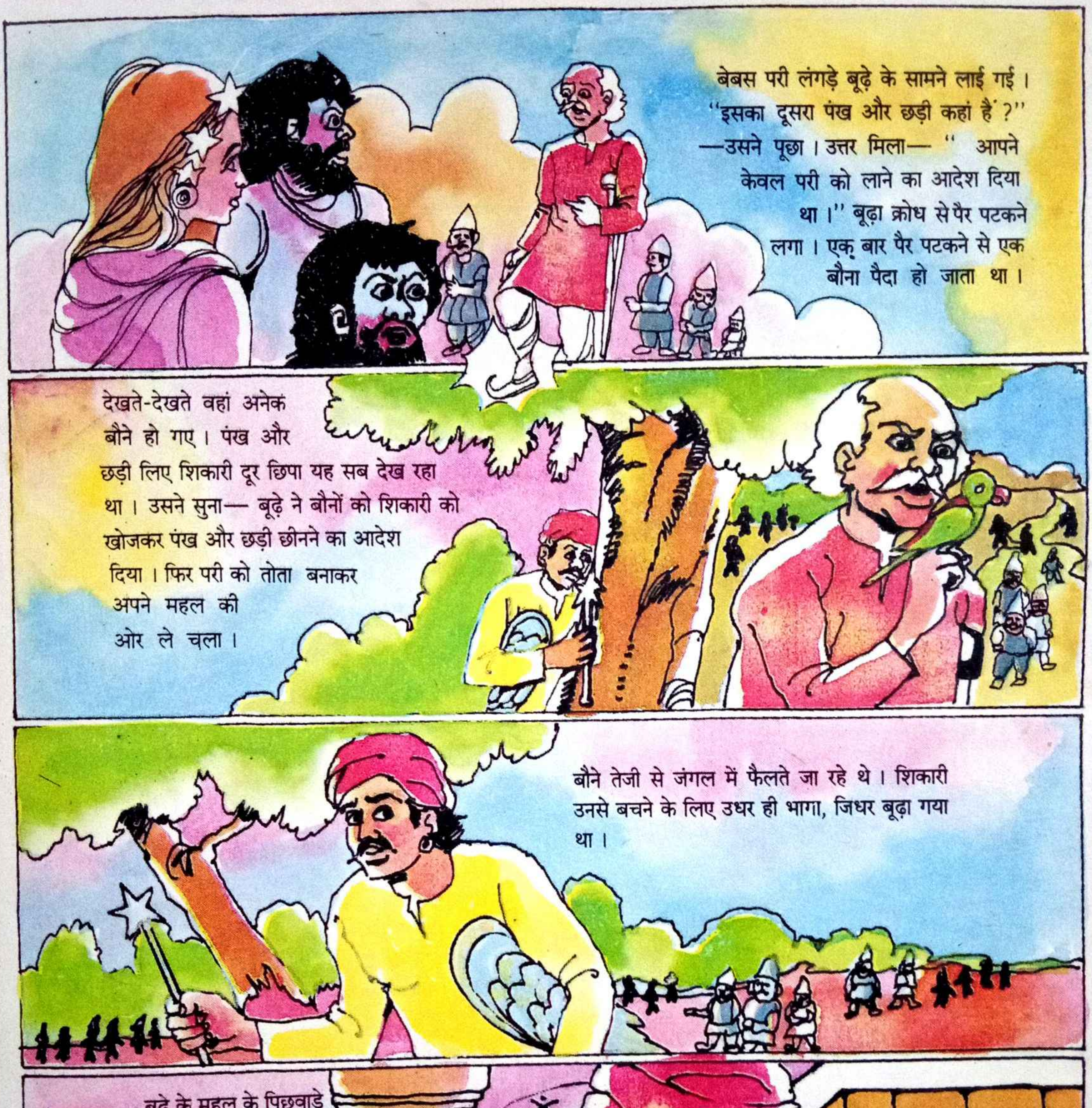

कुजंभ के मरने के बाद वह अनोखा मूसल नागराज अनंत ने ले लिया...
आज से इस मूसल का नाम सुनंदा होगा ।


वही मूसल शेषनाग के अवतार, श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम के पास रहा ।



पिंजरे में छड़ी
एक गरीब शिकारी था। जंगल में जाल बिछाकर पक्षी पकड़ता। उन्हें बेचकर परिवार का पेट पालता। एक दिन जाल को जंगली चूहे काट गए। शिकारी परेशान हो रोने लगा। नया जाल कैसे खरीदेगा?
स्वर्ण परी की बेटी ने रोने की आवाज सुनी, तो वहां आई। शिकारी की मुसीबत सुन वह पसीज गई। अपना एक पंख उसे दे दिया। बोली—"इसे बेचकर दूसरा काम करो। पक्षी मत पकड़ो।"
शिकारी ने परी को धन्यवाद दिया। परी अपनी सहेली का सहारा लेकर उड़ गई। शिकारी पंख ले आगे बढ़ गया।
रास्ते में एक बूढ़ा लंगड़ा मिला। शिकारी ने उसे सारी बात बता दी। बूढ़े ने एक थैली अशर्फियों में पंख खरीद लिया। बोला— " दूसरा पंख और छड़ी भी ले आओ, तो अशर्फियों भरा घड़ा दूंगा।"


शिकारी लालच में फंस गया । उसे क्या पता था कि वह बूढ़ा घाटी का मायावी राक्षस है । परियों को परेशान करने के चक्कर में स्वर्ण परी ने उसको लंगड़ा बना दिया था । तभी से वह बदला लेने पर तुला था । शिकारी के जाते ही उसने ताली बजाई ।
तुरंत हवा में दो भयानक आकृतियां उभरीं । बूढ़े ने उन्हें आदेश दिया— "शिकारी का पीछा करो । जैसे ही स्वर्ण परी की बेटी इसे पंख और छड़ी दे, उसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ ।"
परी मिली, तो शिकारी ने रो-रोकर कहानी गढ़ी— "एक पंख कोई कौड़ी में भी नहीं लेता । दूसरा पंख और छड़ी भी मिल जाए, तो मेरा जीवन सुधर जाए ।" परी फिर पसीज गई–"यदि मेरे त्याग से तुम्हारा जीवन सुधर सके, तो ले जाओ ये चीजें ।"
जैसे ही स्वर्ण परी की बेटी ने दूसरा पंख और छड़ी शिकारी को दीं,वैसे ही दोनों भयानक आकृतियों ने परी को पकड़ लिया ।


बेबस परी लंगड़े बूढ़े के सामने लाई गई । "इसका दूसरा पंख और छड़ी कहां हैं ?" —उसने पूछा । उत्तर मिला— " आपने केवल परी को लाने का आदेश दिया था ।" बूढ़ा क्रोध से पैर पटकने लगा । एक बार पैर पटकने से एक बौना पैदा हो जाता था ।
देखते-देखते वहां अनेक बौने हो गए । पंख और छड़ी लिए शिकारी दूर छिपा यह सब देख रहा था । उसने सुना— बूढ़े ने बौनों को शिकारी को खोजकर पंख और छड़ी छीनने का आदेश दिया । फिर परी को तोता बनाकर अपने महल की ओर ले चला ।
बौने तेजी से जंगल में फैलते जा रहे थे । शिकारी उनसे बचने के लिए उधर ही भागा, जिधर बूढ़ा गया था ।
बूढ़े के महल के पिछवाड़े उगे पेड़ पर चढ़कर शिकारी महल की छत पर उतर गया । अब वह सुरक्षित था । नीचे से आती तोते की कातर पुकार उसके कानों में पड़ी ।
हं हं
हं हं


शिकारी नीचे पहुंचा । देखा— तोता बनी परी को बूढ़े ने पिंजरे में बंद करके लटका रखा है । स्वयं अलाव में छड़ गर्म कर रहा है । तोता भय से चीख रहा है । शिकारी समझ गया, क्या होने वाला है । उसने तेजी के साथ परी की छड़ी पिंजरे में डाल दी ।
जब तक बूढ़ा संभलता, छड़ी को चोंच में दबा, तोता फिर परी में बदल गया । बूढ़ा गुस्से में बलबलाता शिकारी की ओर झपटा । तभी परी ने छड़ी घुमाई । बूढ़ा पत्थर का बन गया ।
शिकारी ने परी को दूसरा पंख वापस देकर क्षमा मांगी । इतना ही नहीं, उसका पहला पंख भी ढूंढ़कर दे दिया । परी ने जैसे ही दोनों पंख लगाए, न वहां बौने रहे, न महल । बस पत्थर बना बूढ़ा रह गया ।
परी ने मदद करने के लिए शिकारी को धन्यवाद दिया । छड़ी की मदद से उसने बूढ़े का खजाना खोजकर शिकारी को दे दिया । बोली— "इस धन से दूसरों की सहायता करना ।" इतना कहकर वह अपने लोक की ओर उड़ गई ।

भले को भला

—शांता ग्रोवर

दो दोस्त थे— राम और श्याम। दोनों गहरे दोस्त थे, लेकिन स्वभाव दोनों के अलग थे। राम ईमानदार और सच्चाई के रास्ते पर चलने वाला था। श्याम सोचता था, आजकल दुनिया ईमानदारी से नहीं, बेईमानी से चलती है। वह हमेशा गलत कामों से पैसा बनाता रहता था।

राम सीधी-सादी जिंदगी जीने में विश्वास करता था। वह श्याम को समझाता रहता—"दोस्त, तुम बेईमानी का रास्ता छोड़ दो। बेईमानी का फल बुरा होता है।"

श्याम अपने दोस्त की बातों की ओर ध्यान न देता। उसकी खिल्ली उड़ाता रहता, लेकिन राम जब भी मौका मिलता, श्याम को समझाने लग जाता। आखिर एक दिन तंग आकर श्याम बोला—"दोस्त, तुम क्यों हर समय मुझे ईमानदारी की सीख देते रहते हो? चलो, आज फैसला करवा ही लेते हैं कि दुनिया ईमानदारी से चलती है या बेईमानी से। आओ, हम पूरे शहर का चक्कर लगाएं और लोगों से इस बारे में पूछें।"

राम बोला—"मुझे मंजूर है।"

श्याम ने कहा—"राम, लेकिन मेरी एक शर्त है। हम में से जो भी हारेगा, वह अपना सब-कुछ दूसरे को दे देगा।"

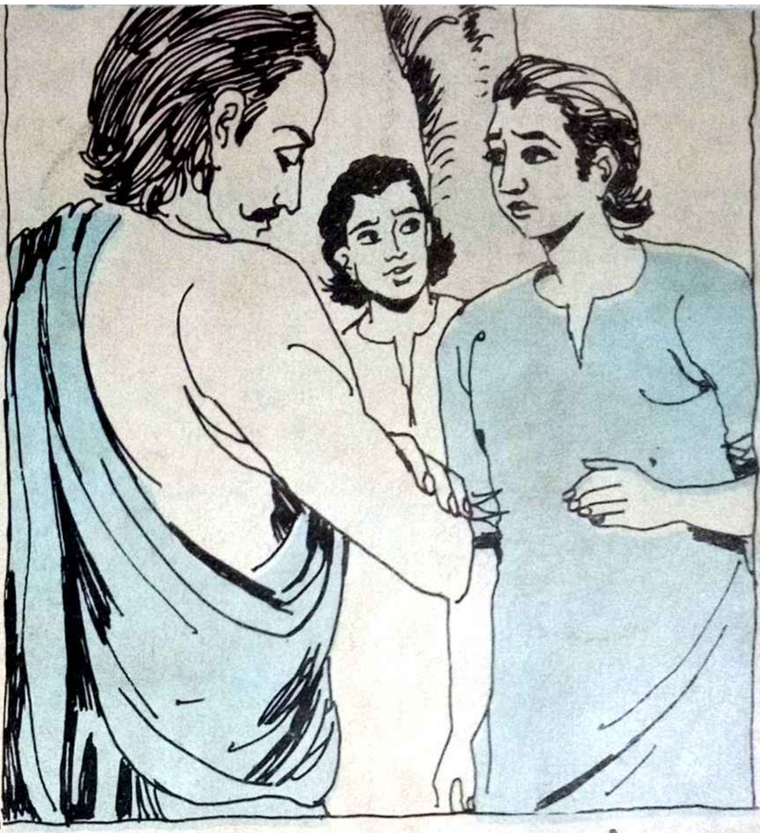
राम बोला—"मुझे मंजूर है।"

दोनों दोस्त घर से निकल पड़े। अभी कुछ दूर ही गए होंगे कि उन्हें एक व्यक्ति मिला। उन्होंने उससे पूछा—"क्यों भई, आजकल दुनिया बेईमानी से चलती है या ईमानदारी से?"

वह व्यक्ति बोला—"भई, मुझसे यह मत पूछो, तो अच्छा है।"

"क्यों भाई, क्या बात हो गई?" —श्याम ने पूछा।

"बात यह है कि मैं एक व्यापारी हूं और बिना झूठ के व्यापार किया नहीं जा सकता। इसलिए मैं कैसे



कह सकता हूं कि ईमानदारी से दुनिया चलती है?" —यह कहकर वह व्यक्ति आगे बढ़ गया।

उस व्यक्ति की बात सुनकर श्याम मुसकराने लगा। राम कुछ उदास हो गया।

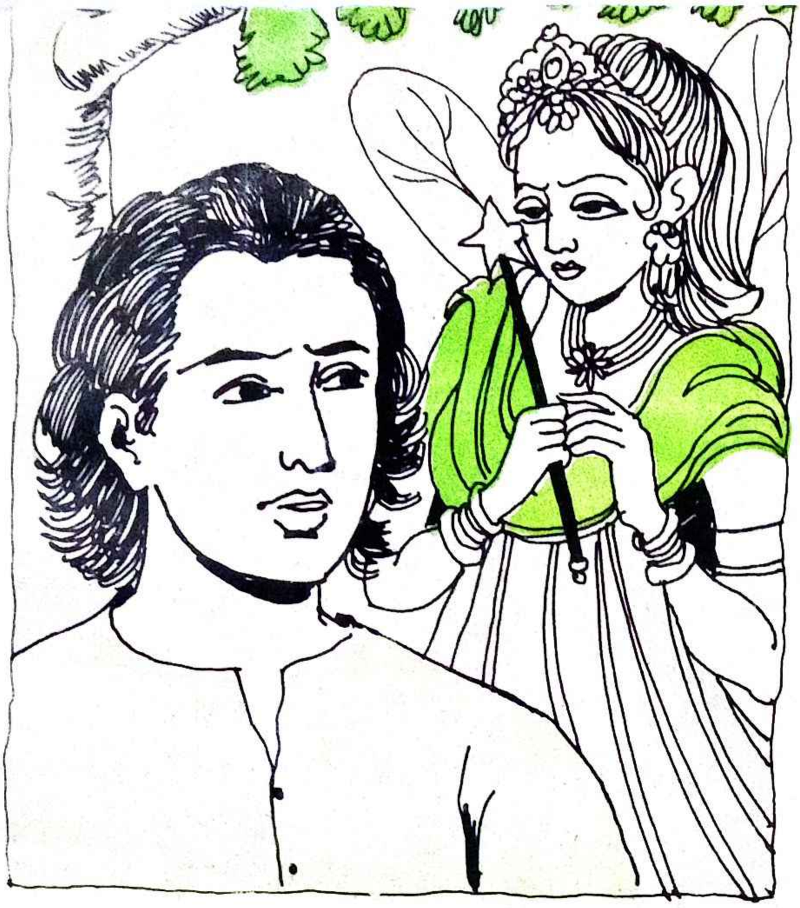
उसके बाद रास्ते में ही उन्हें कई लोग मिले। सबने श्याम का ही समर्थन किया। राम की बात किसी को पसंद न आई।

श्याम बोला—"क्यो दोस्त, अब बताओ तुम सही हो या मैं?"

राम बोला—"इतने लोगों की बात सुनकर भी मैं यही कहूंगा कि ईमानदारी का रास्ता ही सही रास्ता है। लेकिन अब शर्त के मुताबिक तो मैं हार ही चुका हूं। दोस्त, अब मेरा सारा धन तुम्हारा हुआ।"

राम ने अपना सब कुछ श्याम को दे दिया। दो दिन तो राम और उसके बीवी-बच्चों ने किसी तरह भूखे रहकर काटे। लेकिन तीसरे दिन उसके बच्चे भूख से बिलबिलाने लगे। पत्नी से रहा नहीं गया। बोली—"बच्चे भूख से तड़प रहे हैं। मुझसे देखा नहीं जाता। अपने दोस्त के पास जाओ और कुछ रुपए उधार मांगकर ले आओ। आखिर, वह तुम्हारा दोस्त है।"

राम उधार मांगना तो नहीं चाहता था, लेकिन बच्चों



की हालत देखकर वह श्याम के पास चला गया। बोला—"मित्र, बच्चे भूख से बिलबिला रहे हैं। कुछ पैसे उधार दे दो, नौकरी मिलते ही सब लौटा दूंगा।"

श्याम बोला—"देखो राम, यदि तुम मेरे पास कुछ गिरवी रख दो, तो मैं तुम्हें उधार दे सकता हूं।"

"लेकिन मित्र, तुम्हें तो मालूम ही है कि अब मेरे पास गिरवी रखने के लिए कुछ भी नहीं है।" —राम दीनता से बोला।

"अरे मित्र, तुम्हारे पास अभी एक चीज है।" —श्याम बोल उठा।

"क्या ?" —राम आश्चर्य से बोला।

"तुम्हारी ईमानदारी। यदि तुम अपनी ईमानदारी मेरे पास गिरवी रख दो, तो मैं तुम्हें पैसे उधार दे सकता हूं।" —श्याम अकड़कर बोला।

मरता क्या न करता। राम बोला—"मुझे मंजूर है।"

श्याम उसे पैसे देते हुए बोला—"आज से तुम न ईमानदारी की बात करोगे और न ही ईमानदारी से कोई काम करोगे। एक परीक्षा भी देनी होगी। ये रुपए तुम अपनी पत्नी को दे आओ और परीक्षा देने के लिए तुरंत लौट आओ।" —श्याम बोला।

राम घर पैसे देकर तुरंत लौट आया। श्याम उससे बोला—"शहर के बाहर वीराने में बनी सफेद कोठी तो तुमने देखी है न। मेरे तीन दोस्त बाहर तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। उनके साथ तुम वहां चले जाओ और उस घर में चोरी करने में उनकी मदद करो।"

श्याम की बात सुनते ही राम के पैरों तले की जमीन खिसक गई, लेकिन वह श्याम से कर्ज ले चुका था। अब उसकी बात तो उसे माननी ही थी। राम चल पड़ा श्याम के दोस्तों के साथ चोरी करने।

सफेद कोठी के बाहर पेड़ों के झुरमुट में वे चारों छिपकर बैठ गए। वे आधी रात होने का इंतजार करने लगे। श्याम के दोस्त बोले—"चलो, तब तक हम साथ लाया खाना खा लें।" उन्होंने राम को भी खाना खाने के लिए आमंत्रित किया। लेकिन राम ने मना कर दिया। आंसू उसकी पलकों पर अटके हुए थे। खाना खाकर वे तीनों तो लेट गए और लेटते ही उन्हें नींद आ गई। लेकिन राम की आंखों में नींद कहां? वह रोने लगा कि उसे इतना घृणित कार्य करना पड़ेगा।

कुछ देर बाद उस पेड़ पर दो परियां आईं और आपस में बतियाने लगीं। तभी उन्हें किसी के रोने की आवाज सुनाई दी। उन्होंने झुककर देखा, तो पाया कि तीन व्यक्ति तो खर्राटे भर रहे हैं और एक बैठा रो रहा है। उनका दिल पसीज गया। वे नीचे उतरीं और बोलीं—"भैया, तुम क्यों रो रहे हो ?" राम को लगा जैसे कि उसे कोई अपना मिल गया हो। उसने रो-रोकर सारी बात परियों को बता दी।

परियों को श्याम पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने राम से पूछा—"क्या तुम अब भी समझते हो कि दुनिया अच्छाई से चलती है ?"

राम बोला—"मेरा तो अब भी यही विश्वास है।"

राम का उत्तर सुनकर परियां बहुत खुश हुईं और बोलीं—"राम, तुम ठीक कह रहे हो। कुछ लोग स्वार्थ में पड़कर केवल अधिक धन कमाने को ही जिंदगी का उद्देश्य समझ लेते हैं, लेकिन अंत में उन्हें बुराई का फल अवश्य मिलता है। तब वे पछताते हैं।"

राम बोला—"परी दीदी, आप मेरे दोस्त को जल्दी

अच्छाई के रास्ते पर ले आइए।"

एक परी बोली—"जिस दोस्त ने तुम्हारे साथ ऐसा किया, तुम उसकी भलाई के बारे में सोचते हो। तुम वास्तव में ही एक अच्छे इंसान हो। हम तुम्हारी मदद अवश्य करेंगे।"

दूसरी परी बोली—"राम, हम तुम्हें अपने स्वर्ण आभूषण देते हैं, जिनकी मदद से तुम उम्र भर आराम से खाते रहोगे। लो, ये गहने रख लो।"

राम बोला—"दीदी, भला कोई भाई अपनी बहनों के गहने रखता है। मैं ये गहने नहीं लूंगा। आप मुझे बस जल्दी ही एक अच्छी नौकरी पाने का आशीर्वाद दीजिए।"

"ऐसा ही हो।" —कहकर परियां गायब हो गईं।

राम आश्चर्यचकित रह गया। सोचने लगा—'परियां कहां गईं ?' राम ने देखा कि आधी रात बीत चुकी है और श्याम के दोस्त अभी तक गहरी नींद सो रहे हैं। वह उठा और घर की ओर चल पड़ा। अचानक उसने पाया कि वह तो श्याम के घर के बाहर खड़ा है। उसने दरवाजा खटखटाया। श्याम ने दरवाजा खोला। राम उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला—"मित्र, मुझे माफ करना। मैं तुम्हारा काम नहीं कर सका। तुम जो चाहो, मुझे सजा दे दो। मुझसे यह काम न होगा।"

श्याम ने राम को उठाया और गले से लगा लिया। बोला—"मित्र, तुमने बहुत अच्छा किया, जो तुम लौट आए। मेरी तो सारी नींद ही उड़ गई थी कि मैंने यह क्या कर डाला। अपने एक अच्छे दोस्त को बुराई के रास्ते पर डाल दिया। चलो, तुम घर के भीतर चलो।"

श्याम की बातें सुनकर राम बहुत खुश हुआ। बोला—"मित्र, तुम में यह अचानक परिवर्तन कैसे ?"

"लगता है, यह मेरे पास तुम्हारी गिरवी रखी ईमानदारी का ही कमाल है"—श्याम बोला।

राम मन ही मन बोला—"यह सब तो परियों का कमाल है।" और मंद-मंद मुसकराने लगा। ●

राजकुमारी गायब

—प्रतिमा पांडेय

एक छोटे-से राज्य का एक राजा था दयासिंधु। जैसा नाम वैसा गुण। प्रजा सुखी थी।

राजा कभी-कभी रानी की याद करके, उदास हो जाता। राजकुमारी चारूलता दस साल की थी, तभी रानी की मृत्यु हो गई थी।

राजकुमारी के लालन-पालन में किसी प्रकार की कमी न होने पाती थी। राजा उस पर पूरा ध्यान देता। उसकी शिक्षा-दीक्षा का महल में पूरा इंतजाम था। कुछ ही वर्षों में वह सभी कलाओं में निपुण हो गई।

राजा की एक दासी थी। वह कभी परी थी, जो शाप वश कुछ दिनों के लिए धरती पर आ गई थी। परी-लोक की रानी ने उसे एक छोटे-से अपराध के लिए धरती पर रहने का शाप दे दिया। परंतु रानी को तुरंत अपनी गलती समझ में आ गई। पर शाप तो वापस नही हो सकता था। परी रानी दयालु थी। उसने परी की धरती पर रहने की अवधि कम कर दी।

परी रानी ने जादुई-मंत्र की शक्ति भी उसे दे दी कि वह चाहे, तो मंत्र की शक्ति से किसी की भलाई कर सकती है। यह राज तीसरा कोई नहीं जानता था। वही परी राजमहल में दासी बनकर रहती थी। राजा की सेवा-टहल के बाद उसका सारा समय राजकुमारी के साथ बीतता। वह राजकुमारी की सहेली बन गई थी।

दयासिंधु के राज्य से सटा एक बड़ा राज्य था। वहां का राजा था अक्रूर। वह क्रूर और अहंकारी था। राज्य में चारों तरफ अव्यवस्था फैली थी। सौभाग्य से उसका प्रधान सेनापति कुशल था। अतः राज्य की सुरक्षा व्यवस्था ठीक थी। अक्रूर का एक पुत्र था सिद्धार्थ। वह दयालु था।

एक दिन अक्रूर ने दयासिंधु के पास दूत के हाथों एक संदेश भेजा—'हम एक धर्मयात्रा पर निकल रहे हैं। यात्रा का पहला पड़ाव आपकी राजधानी में पड़ेगा। हम आपके अतिथि बनेंगे।'

संदेश पढ़, दयासिंधु सोच में पड़ गया । राजा ने मंत्री से सलाह-मशविरा किया । मंत्री ने सारा प्रबंध कर दिया ।

कुछ दिन बाद, अक्रूर लाव-लश्कर के साथ वहां पहुंचा । आतिथ्य-सत्कार में राजा दयासिंधु और चारूलता ने कोई कसर नहीं छोड़ी । कुछ दिन ठहरने के बाद अक्रूर आगे चला गया ।

एक दिन दयासिंधु चारूलता के साथ बाग में घूम रहा था । तभी अक्रूर का एक दूत वहां आया । उसने एक पत्र राजा को दिया ।

राजा ने पत्र पढ़ा । उसमें लिखा था— 'हम लोग आपके आतिथ्य से खुश हुए । अब मैं आपकी बेटी का हाथ आपसे अपने लिए मांग रहा हूं । विवाह की तैयारी कर, मुझे सूचित करें ।'

राजा एक पल के लिए घबरा गया । फिर सोच-विचार कर उसने दूत से कहा—"मुझे विवाह का प्रस्ताव मंजूर नहीं है । जाओ, अपने राजा से यह कह देना ।"

दूत ने यह समाचार अक्रूर को सुनाया । यह सुन वह आग बबूला हो गया । एक दिन चारूलता बाग में घूम रही थी । शाम हो गई,फिर भी वह महल में नहीं पहुंची । उसकी खोजबीन हुई, पर कुछ पता न चला ।

दयासिंधु पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा । उसका खाना, पीना और सोना भी छूट गया ।

यह देख,दासी बहुत दुखी थी । उसने कुछ सोचा । फिर मधुमक्खी का रूप धर अक्रूर के महल में पहुंच गई । वहां उसने सिद्धार्थ को डंक मार दिया । मंत्र से उसे बेहोश कर दिया । उसके बेहोश होते ही राज्य में हाहाकार मच गया । पुत्र को बेहोश देख,राजा की जान निकल गई । वैद्य-हकीम आए, पर किसी की चिकित्सा कारगर नहीं हुई । रोग साधारण नहीं था क्योंकि वह तो मंत्र शक्ति से प्रभावित था ।

एक दिन परी तांत्रिक का वेश बनाकर अक्रूर के दरबार में पहुंची । उसने राजा से कहा—"अगर आप मुझे आज्ञा दें, तो मैं राजकुमार को ठीक कर दूंगा ।" राजा प्रसन्न हो गया ।

तांत्रिक ने पानी मंगवाया । थोड़ी देर के लिए आंखें



बंद कीं । फिर आंखें खोलीं । राजकुमार पर पानी के छींटें मारे । तभी चमत्कार हुआ । राजकुमार ने धीरे-धीरे आंखें खोलीं । फिर उठ बैठा । यह देखते ही चारों ओर खुशियां छा गईं ।

अक्रूर ने तांत्रिक से पूछा—"बोलो, मैं तुम्हें क्या दूं?" तांत्रिक मुसकराया । बोला—"महाराज, आप अपने बेटे की तरह ही दूसरे के बेटे-बेटियों को समझें । यही मेरे लिए सब कुछ है ।"

यह सुन अक्रूर का मन बदल गया । उसकी आंखों के सामने जेल में बंद चारूलता का मासूम चेहरा घूम गया । उसकी आंखें भर आईं ।

अगले दिन अक्रूर चारूलता को लेकर दयासिंधु के दरबार में पहुंचा । राजकुमारी को देखते ही सबके चेहरे खिल उठे । अपने किए की अक्रूर ने क्षमा मांगी । अक्रूर का बदला व्यवहार देख, राजा और दरबारी प्रसन्न थे । राजा ने अक्रूर को सम्मान पूर्वक विदा किया ।

एक दिन दासी ने राजा से कहा— "महाराज, चारूलता विवाह के योग्य हो गई है । मेरे विचार से चारूलता और सिद्धार्थ की जोड़ी खूब जमेगी ।" राजा को यह सलाह अच्छी लगी ।

दयासिंधु ने चारूलता और सिद्धार्थ के विवाह का प्रस्ताव अक्रूर के पास भेजा । अक्रूर ने इसे अपना सौभाग्य समझा । फिर एक दिन चारूलता और सिद्धार्थ का विवाह हो गया ।

चारूलता विदा होने लगी, तो दासी ने उसे अपनी सारी कहानी सुना दी । चारूलता की आंखें भर आईं । वह कुछ बोल न सकी । इधर चारूलता की डोली उठी और उधर दासी परी बनकर आसमान में उड़ गई । ●

छोटा बेटा

—शारदा यादव

एक गरीब आदमी था। उसके तीन बेटे थे। दो बड़े बेटे समझदार थे। लेकिन छोटा बेटा यान कम चालाक था। वह अधिकतर भट्ठी के पास बैठा रहता था। लोग उसे मजाक में भट्ठी झोंकने वाला कहते थे। एक दिन पिता ने उनसे कहा—"अब तुम बड़े हो गए हो। घर की हालत तुम लोग जानते ही हो। अब तुम सब अपना-अपना कारोबार करो।"

दूसरे दिन तीनों भाई घर से निकल पड़े। चलते-चलते वे एक चौराहे पर जाकर खड़े हो गए।

कुछ देर बाद दोनों बड़े भाई सामने की ओर चल दिए। चलते-चलते वे छोटे भाई से बोले—"तुम उधर चले जाओ। तुम्हारे लिए सबसे अच्छा रास्ता वही है।" वे इशारा करके आगे बढ़ गए।

यान उसी रास्ते पर चल दिया। जंगलों से होता हुआ वह एक मैदान में पहुंचा। वहां तीन पेड़ खड़े थे। उसने पहले कभी ऐसे पेड़ नहीं देखे थे। पेड़ों के नीचे बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसे पेड़ों के पीछे एक चट्टान दिखाई दी। वह चट्टान के पास गया। वहां उसने एक छोटा-सा दरवाजा देखा। वह दरवाजे के अंदर घुस गया। वहां एक महल था।

यान महल में चला गया। वहां एक सुंदर राजकुमारी ने उसका स्वागत किया। उसने कहा—"यान, मैं बहुत दिनों से तुम्हारा इंतजार कर रही थी। मुझे यकीन था कि तुम एक दिन यहां अवश्य आओगे।"

यान हैरान था। वह सोचने लगा—'यह राजकुमारी मेरा नाम कैसे जानती है?'

राजकुमारी ने यान को भोजन कराया। वह खाना खाकर सो गया।

सुबह यान की नींद खुली, तो उसने देखा—राजकुमारी नाश्ता लिए हुए उसका इंतजार कर रही है। नाश्ता करने के बाद यान ने कहा—"तुमने मेरी बहुत सेवा की है। बताओ, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं?"



राजकुमारी ने उत्तर दिया—"इस चट्टान के बाहर तीन पेड़ खड़े हैं। तुम पेड़ों को जड़ सहित गिरा दो। फिर तुम जो मांगोगे, मैं तुम्हें वही दूंगी।"

यान ने कहा—"ऐसा ही होगा।" यह कहकर वह महल से बाहर निकल गया। वह पेड़ों को काटने में जुट गया। महीने भर में यान ने उन पेड़ों को काट डाला। फिर वह राजकुमारी के पास पहुंचा।

राजकुमारी ने यान से कहा—"तुम लकड़ियों को इकट्ठा करके आग लगा दो।" यान ने लकड़ियां इकट्ठी कर उनमें आग लगा दी। वह थका हुआ था। वह थोड़ी दूरी पर जाकर वह लेट गया। तुरंत उसे नींद आ गई।

अगले दिन उसकी नींद टूटी, तो उसने अपने को एक सुंदर कमरे में पाया। उसके शरीर पर सुंदर कपड़े थे। अनजानी जगह देख, वह घबरा गया।

तभी वहां एक नौकर आया। उसने यान से पूछा—"मालिक, आपको क्या चाहिए?" यान आश्चर्य चकित था। थोड़ी देर बाद तीन युवक राजसी वस्त्र और आभूषण लेकर वहां आए। उन्होंने यान को राजसी वस्त्र और आभूषण पहनाए। अब यान राजकुमार जैसा लगने लगा। तुरंत दरवाजा खुला। पांच-छह सुंदर राजकुमारियों ने वहां प्रवेश किया। उन्होंने यान को धन्यवाद दिया। उन्होंने यान से कहा—"आप हममें से अपनी इच्छा के अनुसार किसी एक राजकुमारी से विवाह कर सकते हैं।"



यान असमंजस में था। कुछ देर उसने सोचा, फिर कहा—"मैं उसी राजकुमारी से विवाह करूंगा, जिसने मेरी सेवा की है।"

यह सुनकर राजकुमारियों ने उसे पुनः धन्यवाद दिया। फिर वहां से चली गईं। वह राजकुमारी जिसने यान की सेवा की थी, वहीं रह गई।

राजकुमारी ने यान को बताया कि उन तीन पेड़ों की वजह से ही उनका सारा राज्य शाप ग्रस्त था। पेड़ों के गिरते ही वे शाप से मुक्त हो गए हैं।

यान और राजकुमारी का विवाह धूमधाम से हो गया। यान वहां का राजा बन गया।

एक दिन यान ने सोचा—'माता-पिता और भाइयों से मिलने मुझे अवश्य जाना चाहिए।' यह सोच, वह रानी के साथ रथ में बैठकर गांव को चल दिया। सैनिक भी साथ थे।

जैसे ही राजा यान का रथ गांव के निकट पहुंचा, तो गांव वालों ने राजा का स्वागत किया। एक स्त्री की आंखों में आंसू देखकर यान ने पूछा—"मां, क्या बात है? आपकी आंखों में आंसू क्यों हैं?"

स्त्री ने उत्तर दिया—"महाराज, मेरा सबसे छोटा बेटा बहुत दिन से घर नहीं लौटा है। पता नहीं, वह कहां और किस हाल में है? उसकी ही चिंता मुझे खाए जा रही है। उसे याद करते ही मेरी आंखों में आंसू आ गए।"

राजा ने कहा—"मां, आप चिंता मत कीजिए। आपका बेटा अवश्य वापस आएगा।" कहकर वह आगे बढ़ गया। स्त्री अपने घर चली गई।

गांव वालों को बिल्कुल पता न था कि उस स्त्री का खोया बेटा यान उनके सामने राजा बना खड़ा है। भीड़ में यान ने अपने घर वालों को देखते ही पहचान लिया था।

यान जिन कपड़ों को पहनकर घर से गया था, वह उन कपड़ों को साथ लाया था। वह उन्हीं कपड़ों को पहनकर अपनी मां से मिलने गया। यान को देखते ही उसकी मां खुशी से झूम उठी। उसने यान को गले से लगा लिया। यान ने मां से कहा कि अभी वह दोनों भाइयों से इस बारे में कुछ न बताए।

थोड़ी देर बाद दोनों बड़े भाई घर आए। उन्होंने यान से कहा—"अभी-अभी हमने राजा को गांव में आते देखा था। तुम थोड़ी देर पहले आ जाते, तो तुम भी राजा को देख लेते।"

यान घर वालों से विदा लेकर राजा से मिलने चल दिया। भाइयों ने सोचा—'यह मूर्ख है। पता नहीं, राजा से क्या कह बैठे?' यह सोच, वे उसके पीछे-पीछे चल पड़े। भाइयों ने देखा कि यान रनिवास में जा रहा है, तो वे चौंके। तुरंत उन्होंने यान को रोका। बड़ा भाई बोला—"तुम कहां जा रहे हो? राजा को मालूम हो गया, तो तुम्हारी खैर नहीं। तुम भट्टी के पास ही बैठो। यहां तुम्हारा क्या काम?" फिर भी यान नहीं माना, तो वे उसे जबरदस्ती रोकने लगे।

सैनिकों ने यह देखा, तो यान के भाइयों को हटाकर एक तरफ कर दिया। एक सैनिक बोला—"तुम लोग राजा पर हाथ उठा रहे हो। पागल तो नहीं हो गए?"

यान के भाई आश्चर्य चकित थे। वे यान को देखने लगे। तभी यान के माता-पिता और गांव वाले भी वहां आ गए। यान मुसकरा रहा था।

यान ने पेड़ काटने से लेकर राजा बनने तक की कहानी सबको सुनाई। लोग यान का जय-जयकार करने लगे। अब वह अपने घर वालों के साथ महल में आराम से रहने लगा। (चेक)

सच करो नाम

—डा. सत्येन्द्र वर्मा

एक लड़की थी। नाम था प्रगति। उसका पढ़ने-लिखने में मन नहीं लगता था। घर के काम-काज को छूती तक न थी। वह चुगलखोरी भी करती थी। वह आए दिन सहेलियों में लड़ाई करवा देती। फिर तमाशा देखती।

माता-पिता प्रगति को समझाते किंतु प्रगति पर उनकी बातों का कोई असर नहीं पड़ता था। घर, पड़ोस और स्कूल सभी जगह प्रगति की किसी से न बनती थी। यह देख उसे दुःख तो होता था, किंतु वह अपनी हरकतों को सुधारे कैसे ? यह उसे समझ में नहीं आता था। धीरे-धीरे वह चिड़चिड़ी और क्रोधी हो गई।

एक शाम वह स्कूल का काम करने बैठी, तो उसे बैग नहीं मिला। क्योंकि वह बैग दादी के कमरे में रखकर भूल गई थी। भूल से दादी ने उसकी कापी पर धोबी का हिसाब लिख दिया था। यह उसे मालूम न था। बैग न मिला, तो वह खाना-खाए बिना ही सो गई।

प्रगति जब सुबह उठकर स्कूल जाने के लिए तैयार होने लगी, तो उसे मुश्किल से बैग मिला। यूनिफार्म गंदी मिली, मोजा तो मिला ही नहीं। वह बिना मोजे के ही स्कूल चली गई। स्कूल में जब अध्यापिका ने उसे गंदी यूनीफार्म में देखा, तो उसे प्रार्थना-सभा से अलग एक किनारे पर खड़ा कर दिया। वह कक्षा में गई, तो सहेलियों ने उसका मजाक उड़ाया। अध्यापिका उसकी गृह कार्य की कापी देखते ही गुस्से में आ गई। क्योंकि कापी पर धोबी का हिसाब लिखा था। पूरे दिन प्रगति की खूब हंसाई हुई। प्रगति चुपचाप घर को चल पड़ी। घर पहुंचकर उसने किसी से बात नहीं की। मां ने प्यार भरे शब्दों में कुछ पूछना चाहा, तो उसने रुखाई से हां- ना में उत्तर दिया। कुछ देर बाद वह मां से पड़ोस में खेलने जाने का बहाना करके पार्क में जाकर एक बेंच पर चुपचाप बैठ गई।

पार्क में हरियाली थी। वहां छायादार, हरे-भरे



पेड़ थे। फूलों और फलों से लदे पार्क में कालीन जैसी हरी घास थी। बच्चे खेल रहे थे। प्रगति को किसी ने खेलने के लिए न पूछा। सोचने लगी-'पेड़ों में अनेक गुण हैं। ये दूसरों को फल, फूल, छाया और शुद्ध हवा देते हैं।' अचानक उसे कुछ दूर पर एक बिना फल-फूल का ठूंठ-सा पेड़ दिखाई दिया। उसने सोचा—'अरे ! इस पेड़ के नीचे कौन बैठ सकता है ? इसके पास तो दूसरों को देने के लिए कुछ भी नहीं है। क्या मैं भी इसी ठूंठ पेड़ जैसी हूं ?' तभी किसी ने उसके कंधों को थपथपाया। पहले तो वह कुछ डरी, फिर उसने देखा कि उसके पीछे लाल चुनरी में सजी-धजी पंखों वाली एक परी खड़ी है।

प्रगति ने बार-बार अपनी पलकों को खोला और बंद किया कि कहीं वह स्वप्न तो नहीं देख रही है।

सुंदर परी ने मुसकराते हुए कहा—"डरो नहीं, मैं तुम्हारी बड़ी बहन जैसी हूं। आकाश में रहती हूं। इतनी दूर से मैं तुमसे मिलने आई हूं। मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानती हूं।" प्रगति चुपचाप एकटक परी को निहार रही थी।

परी ने कहा—"मैं चुनर परी हूं। ठूंठ पेड़ अपने घमंड में अड़ा खड़ा रहता है। आकाश की ओर ही देखता रहता है, उसे धरती नजर ही नहीं आती। न उस पर फल हैं, न फूल हैं और न ही छाया। उसके पास कोई नहीं जाता। हरे-भरे फलदार, छायादार, वृक्ष को सभी मान-सम्मान देते हैं। यह पेड़ सभी को शुद्ध आक्सीजन देते हैं और दूसरों से कार्बन डाइआक्साइड लेते हैं। तुम्हारी धरती पर कितना प्रदूषण है, तुम्हें पता नहीं ? प्रदूषण से कितनी हानियां होती हैं। अभी तुम छोटी हो, समझ नहीं सकती।" प्रगति परी की बातें ध्यान से सुन रही थी।

परी ने प्रगति से पूछा—"तुम्हीं बताओ, क्या मैं कुछ गलत कह रही हूं ?" प्रगति बोली—"नहीं परी दीदी, आप बिलकुल सच कह रही हैं। मैं भी तो ठूंठ पेड़ जैसी हूं, न जाने किस अकड़ में रहती हूं। पता नहीं, क्यों मुझमें इतना क्रोध है। अब मैं घमंड नहीं करूंगी। सबकी मदद करूंगी।"

चुनर परी ने कहा—"अपने को सुधार लो। फिर देखो — तुम्हें घर, पड़ोस तथा स्कूल में खूब मान-सम्मान, प्यार-दुलार और सहयोग मिलेगा।"

प्रगति ने परी से कहा—"परी दीदी ! आपको मेरे बारे में कैसे पता लगा ? यह तो मुझे बताइए।" चुनर परी ने प्यार से प्रगति के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"परियां आकाश में अवश्य रहती हैं किंतु धरती के बच्चों का पूरा-पूरा ध्यान रखती हैं। बच्चों से हमें लगाव है। तुम सभी नेक बनो, योग्य बनो, हम यही चाहते हैं। मुझे वचन दो कि तुम अपने नाम को सच साबित करोगी।"

प्रगति ने कहा—"जैसा आपने कहा, वैसा ही मैं करूंगी। और आपको भी समय-समय पर यहां हमसे मिलने आना होगा।" यह सुन परी मुसकराई। पलक झपकते ही वह आकाश में उड़ गई। ●

सूखा जल

—उमेश प्रसाद सिंह

चैतपुर रियासत की प्रजा बड़ी सुखी थी। राजा श्यामसिंह भी बड़े दयालु स्वभाव का था। सदा प्रजा के कल्याण की बात सोचा करता था। उसने राजमहल के दक्षिण की ओर एक बड़ी झील बनवाई थी। उसके आसपास तीन कोस की दूरी पर मीठे फल देने वाले वृक्ष लगवाए थे। उन फलों को खाने का अधिकार सबको था। लोग झील में स्नान करते और रसीले फल खाकर राजा की जय-जयकार करते थे।

एक बार पूर्णिमा की चांदनी में राजा अपनी पत्नी के साथ झील के किनारे टहल रहा था। तभी उसने संगीत की आवाज सुनी। वैसी मधुर आवाज उसने पहले कभी नहीं सुनी थी। आवाज लगातार नजदीक आ रही थी। राजा-रानी फौरन झाड़ी में छिपकर बैठ गए। वे जानना चाहते थे कि आधी रात में आने वाली आवाज का रहस्य क्या है ?

तभी राजा को लगा चांदी जैसे कुछ बादल जमीन पर उतर रहे हों। राजा ने ध्यान से देखा। उसमें गुड़ियों-सी कुछ आकृतियां उभर रही थीं। धीरे-धीरे गुड़ियों का आकार बढ़ गया और वे नाचने-गाने लगीं। सबके हाथों में ढोल थे।

राजा चकित बना यह सब देखता रहा। उसने परियों की कहानियां तो बहुत सुनी थीं, पर सामने रंग-बिरंगी परियों को देखकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसके मन में आया कि कुछ परियों को झील व बगीचे में स्थाई रूप से रहने के लिए रोक ले। तब तक परियां झील में उतर गई थीं। जलक्रीड़ा कर रही थीं।

तभी राजा ने देखा कि आसमान से बादलों का एक और टुकड़ा नीचे आ रहा है। राजा समझ गया कि अब परियां अपने लोक में जाने वाली हैं। उसने लपककर एक छोटी-सी परी को पकड़ लिया। परी ने राजा के हाथों से छूटने का बहुत प्रयास किया, पर असफल रही। दुखी होकर सभी परियां रोने लगीं। कहने लगीं— "इसे छोड़ दो, इसे छोड़ दो।"

श्यामसिंह ने एक न सुनी। तब तक सवेरा होने लगा था। छोटी परी को छोड़कर सभी परियां अपने लोक में चली गईं।

उस दिन राजा ने छोटी परी को महल में ही रखा। घटना की जानकारी परी लोक में पहुंची, तो वहां हड़कंप मच गया। सभी परियां उदास हो गईं। अगले दिन परी रानी न्याय के लिए राजदरबार में आई। उसके साथ बहुत-सी परियां थीं। परी रानी छोटी परी को किसी भी तरह अपने साथ ले जाना चाहती थी। उसने राजा श्यामसिंह से न्याय की गुहार की।

राजा न्यायप्रिय तो था ही। उसका दिल पसीज गया। वह छोटी परी को छोड़ने के लिए राजी हो गया। मगर उसने परी रानी के सामने शर्त रखी कि यदि परियां प्रतिदिन हमारे बगीचे में आएं और झील में जल क्रीड़ा करने के बाद अपने लोक में जाएं तो वह छोटी परी को छोड़ देगा। परी रानी राजी हो गई। बोली— "जब तक आप चैतपुर के राजा बने रहेंगे, परियां नियमित रूप से आएंगी।"

छोटी परी राजा के व्यवहार से बहुत खुश थी। जाते-जाते बोली— "कोई विपत्ति आने पर हमें याद करना।"

परियों की सुरक्षा के लिए श्यामसिंह ने झील के चारों ओर पत्थर की मजबूत चारदीवारी बनवा दी। बगीचे में चांदी के सुंदर गुफा गृह बनवा दिए। उनमें स्वर्ण जटित पलंग रखे गए। परियों के खेलने के लिए सुंदर आम्र कुंज लगवा दिए। चारदीवारी के भीतर किसी को झांकने की अनुमति नहीं थी। पहले परियां सिर्फ पूर्णिमा के उजाले में वहां आती थीं, पर अब नियमित रूप से वहां आने लगीं। परियों के प्रभाव से चैतपुर का तेजी से विकास होने लगा। समय पर वर्षा होती, खेतों में भरपूर फसल होती। वृक्ष साल भर मीठे फलों से लदे रहते थे।

इस घटना के वर्षों बाद राजा श्यामसिंह का सहोदर भाई मलखान सिंह षड्यंत्र करके चैतपुर का राजा बन गया। उसने श्यामसिंह को कैदखाने में डाल दिया। वहां उसे तरह-तरह की यातनाएं दी जाने लगीं।

जब छोटी परी को इस बात का पता चला, तो वह उड़न खटोला लेकर आई और श्यामसिंह को उसमें बैठा कर परी लोक चली गई। इस घटना के बाद से चैतपुर से सभी परियां चली गईं। झील का पानी सूख गया। जहां हरे-भरे वृक्ष थे, वहां पठार खड़े हो गए। सारा चैतपुर वीरान हो गया।

इस बात को करीब पांच सौ वर्ष बीत गए हैं। पर आज भी आसमान में बादल गरजते हैं तो चैतपुर के लोग इस आशा से आसमान की ओर देखते हैं कि शायद राजा श्यामसिंह को ले परियां फिर से आ रही हैं। ●



सुना न सुना

—रामपाली भाटी



वियतनाम में एक चीनी अधिकारी रहता था। उसने सागर के किनारे एक बड़ा सुंदर महल बनवाया। महल की ऊपरी मंजिल पर एक सुंदर-सी बुर्जी उसने अपनी बेटी टिंगटिंग के लिए भी बनवा दी। लड़की प्रतिदिन बुर्जी के झरोखे में बैठती।

एक दिन झरोखे के नीचे से किसी के गाने का मीठा स्वर टिंगटिंग के कानों में पड़ा। उसने इधर-उधर देखा। परंतु उसे गाने वाला नजर न आया। अब गीत प्रतिदिन एक निश्चित समय पर सुनाई देता।

एक दिन उसे वह गीत सुनाई नहीं दिया। सारे दिन वह गीत की प्रतीक्षा करती रही। रात हो गई। फिर भी उसे गीत सुनाई नहीं पड़ा।

टिंगटिंग गीत के न सुनने से निराश हुई। अब वह रोज प्रतीक्षा करती रहती, पर वह मधुर गीत उसे सुनाई न देता था। इससे टिंगटिंग बीमार रहने लगी। धीरे-धीरे उसकी दशा बिगड़ने लगी। बेटी की बीमारी का कारण जब पिता को पता चला, तो उसने तुरंत सेवकों को आज्ञा दी कि गाने वाले व्यक्ति की तलाश की जाए। सेवकों ने गाने वाले मछुआरे का पता लगाया। उसे महल में ले आए।

मछुआरे को टिंगटिंग के सामने लाया गया। मछुआरा सुंदर न था। टिंगटिंग ने उसे देखा और एकदम से मुंह फेर लिया। मछुआरे पर इसका उलटा असर हुआ। वह टिंगटिंग को देखते ही उसकी सुंदरता पर मोहित हो गया। 'एक गरीब और बदसूरत, मुझ मछुआरे का इस धनवान अधिकारी की बेटी से विवाह नहीं होगा।' —यह सोचकर मछुआरा चुपचाप लौट गया।

अब मछुआरे को न खाने-पीने की सुध रहती और न ही उसे नींद आती। बस रात-दिन गाता ही रहता। वह बीमार पड़ गया। एक दिन मछुआरा मर गया।

दिन बीतते रहे। टिंगटिंग फिर भी गीत की प्रतीक्षा करती रहती, पर मछुआरे की सूरत का ध्यान आते ही उसका मन खट्टा हो जाता। एक दिन उसके पिता को नदी पार जाना था। वह नाव में बैठ गया, तभी नजर नाव के अगले भाग में लगे एक चमचमाते पत्थर पर पड़ी। पत्थर कीमती था। अधिकारी ने पत्थर खरीद लिया।

अधिकारी ने चाय के एक प्याले में कीमती पत्थर को जड़वा दिया। अगले दिन बाप-बेटी साथ-साथ चाय पीने बैठे। जैसे ही टिंगटिंग ने उस प्याले में चाय डाली, तभी उसे चाय के प्याले में नन्हा-सा मछुआरा एक छोटी-सी नाव चलाता, मधुर स्वर में गीत गाता दिखाई दिया। टिंगटिंग संगीत को सुनकर खिल उठी। परंतु उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने चाय उठाकर फेंक दी। फिर दुबारा चाय प्याले में डाली।

फिर वही चमत्कार हुआ। टिंगटिंग को वर्षों पहले सुने गीत और मछुआरे की याद आई। उसकी आंखों से आंसू निकले और गालों पर से लुढ़कते हुए प्याले में जा गिरे। आंसुओं के प्याले में गिरते ही मछुआरा गायब हो गया। गीत भी बंद हो गया। प्याला भी गिरकर टूट गया।

टिंगटिंग का पिता यह सब देखकर चकित रह गया। तुरंत वह नदी पार कराने वाले मछुआरों के पास पहुंचा। उसने मछुआरे को सारी बातें बताईं। फिर पूछा—"तुम वह पत्थर कहां से लाए थे?" मछुआरे ने कहा—"मुझे पत्थर मछुआरे गायक की समाधि पर पड़ा मिला था।" यह सुन, अधिकारी चुपचाप घर की ओर चल दिया। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१.— से थोड़ी दूर मिलेगा सब्ज परी का महल। (घाटी/ घास)

२. मित्र अभय, मैं यह— नहीं उठा सकता। (बोझ/ बोरा)

४. आश्चर्य, उस— का पानी पीते ही राजकुमार पत्थर के बुत में बदल गया। (नदी/ नल)

८. लेकिन हम वहां से— कैसे ला सकते हैं नागराज? (मोम/ मोती)

९. —, यही मैं कह रहा था। (हां/ जी)

११. इतने बड़े— वाला हिरन मुझे उसी जंगल में मिला था। (पैर/ सिर)

१२. भारत के एक मशहूर संगीतकार।

ऊपर से नीचे

३. मिट्टी का— बना कर दिखाओ बालक? (शेर/ मोर)

५. हमें तो— का घर सबसे अच्छा लगा। (छाया/ बया)

६. —, बड़े जोर की भूख लगी है। (बाबा/ बापू)

७. परी रानी, मुझे भी इतने खूबसूरत —दो न! (पंख/ शंख)

१०. एक छोटा ग्रह, जो सूर्य के सबसे अधिक निकट है।

-- काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २९५

नाम ____________________

उम्र ________ पता ____________________

____

१ घा		■	२ बो		■	३
■	४ न		■	■	■	र
५	■	■	६ बा	■	७	■
या	■	■		■	ख	■
■	८ मो		■	९	■	१०
११	र	अंतिम तिथि: १५-७-९३				ध
■	१२	जू		व		■

नं. ज्ञा.प: २९५

एकता में ही निहित है उत्कर्ष



पावन स्वर्ण मन्दिर से पवित्र गंगा तक, हरे भरे मैदानों से बर्फीली चोटियों तक, चलते चले आगे ही आगे...

उत्तर रेलवे एक लक्ष्य को बांधे.

वह लक्ष्य जो प्रतिदिन 1,228,675 यात्रियों से महान है। वह लक्ष्य जो 265,767 टन भार से अधिक महत्वपूर्ण है। वह लक्ष्य 11,023 कि.मि. के रास्तों की तुलना ज्यादा सुदृढ है, और जो 1,296 स्टेशनों से गुजरता है।

हमारा लक्ष्य है एक संगठित, खुशहाल भारत। उत्तर रेलवे का प्रत्येक कर्मी इस मंजिल को पाने के लिए तत्पर है — बिना रूके! बिना थमे!

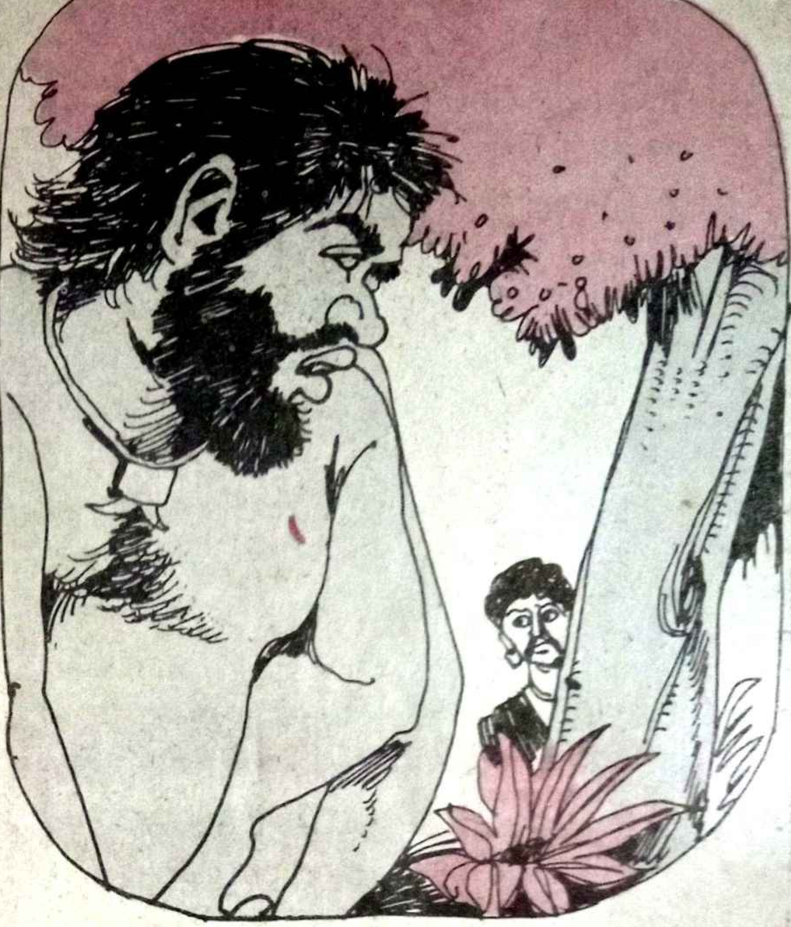
उत्तर रेलवे

उत्तर रेलवे
आपकी सेवा में

INTERPUB/NR/03/93

चाल बेचाल

—रमेश कौशिक



लासा नाम का एक आदमी टोंगा के बावाऊ द्वीप पर रहता था। एक दिन जंगल में वह पेड़ काटने गया। उसे नाव बनानी थी। वह शाम तक एक पेड़ काट पाया। सोचा—'पेड़ को अगले दिन आकर ले जाऊंगा।' वह घर चला गया।

अगले दिन जब लासा वहां गया, तो आश्चर्य में डूब गया। जिस पेड़ को कल काटा था, वह ज्यों का त्यों खड़ा था। उसने दोबारा उसे शाम तक काटा और घर चला गया। अगले दिन फिर वह वहां पहुंचा, तो देखा—पेड़ जैसे का तैसा खड़ा था। तीसरी बार काटने पर भी ऐसा ही हुआ।

लासा परेशान हो गया। चौथी बार जब उसने पेड़ काटा, तो वह घर नहीं गया। वहीं झाड़ियों में वह छिपकर बैठ गया। वह कटे हुए पेड़ को देखता रहा।

आधी रात को लासा ने देखा—एक आठ हाथों वाला देव उस कटे हुए पेड़ की ओर बढ़ रहा है। पेड़ के पास पहुंचकर उसने कहा—'ओ लासा के कटे हुए पेड़, खड़े हो जाओ।' उसका इतना कहना था कि कटे हुए पेड़ की टहनियां और पत्ते सब जुड़ गए। पेड़ अपनी जगह पर खड़ा हो गया।

लासा झाड़ियों में से निकला। उसने देव को पीछे से जाकर पकड़ लिया। देव ने अपने को छुड़ाने की बहुत कोशिश की, किंतु सफल नहीं हो पाया। हारकर उसने लासा से विनती की—"यदि तुम मुझे छोड़ दोगे, तो मैं तुम्हारे लिए एक अच्छी नाव बना दूंगा।" लासा ने प्रसन्न होकर उसे छोड़ दिया। देव ने अपने वचन के अनुसार एक सुंदर और टिकाऊ नाव बनाकर उसे दे दी। किंतु देते समय लासा से भी वचन लिया कि वह नाव में बैठने से किसी को मना नहीं करेगा।

लासा नाव लेकर सागर में कुछ दूर गया। तभी किसी ने उसे पीछे से पुकारा। वह नाव को तट पर लौटा लाया और उसे नाव में बैठा लिया। यह आदमी एक भूखा प्रेत था। वह चलने ही वाला था कि किसी ने फिर साथ जाने के लिए आवाज दी। लासा ने उसे भी नाव पर बैठा लिया। यह एक चोर प्रेत था। दोनों को लेकर जब वह सागर में आगे बढ़ा, तो वहां उसे आठ भुजा वाला देव मिल गया। लासा ने उसे भी नाव पर चढ़ा लिया।

अब चारों मिलकर फीजी की ओर बढ़े। कुछ देर बाद वे वहां के एक द्वीप पर उतर गए। वहां एक राक्षस रहता था। उन्होंने रेत पर बने अपने पैरों के निशान मिटा दिए। नाव को झाड़ियों के बीच छिपा दिया, ताकि राक्षस को पता न चले। इसके बाद वे राक्षस के घर जा पहुंचे। उस समय वह घर पर नहीं था। लासा छत पर जाकर छिप गया। आठ भुजाधारी देव ओर दोनों प्रेत घर के खंभों के पीछे जा छिपे।

जब राक्षस घर लौटा, तो कहने लगा—'आज यहां मानव-गंध आ रही है। अवश्य ही कोई आदमी घर के आसपास है।' वह चारों ओर खोज करने लगा। तभी उसे छत पर लासा दिखाई दिया। वह ऊपर गया और उसे घसीटता हुआ नीचे ले आया। उसने खंभों के पीछे छिपे देव और दोनों प्रेतों को भी देख लिया।

राक्षस देव को पकड़कर खींचने लगा। देव ने

अपनी भुजाओं से खंभे को कसकर पकड़ लिया। राक्षस ने बहुत जोर लगाया, पर देव को खंभे से अलग न कर सका। थक-हार कर राक्षस ने कहा—"मैं किसी को कोई हानि नहीं पहुंचाऊंगा। तुम मेरे पास चले आओ।" उसकी बात का विश्वास करके दोनों प्रेत, देव और लासा उसके सामने खड़े हो गए।

राक्षस अपने रसोईघर में गया। वहां से बड़े-बड़े भोजन के टोकरे निकाल कर लाया। उसने उन चारों से कहा—"यह सारा भोजन खाकर समाप्त करो, नहीं तो मैं तुम सबको खा जाऊंगा।" उसकी बात सुनकर पहले देव, चोर प्रेत और लासा ने भोजन किया। फिर भी भोजन के टोकरे बच गए, तो उन्होंने प्रेत से प्रार्थना की—"इस समय तो मृत्यु के मुख से तुम ही हमें बचा सकते हो।"

इतना सुनना था कि भूखे प्रेत ने सारा भोजन समाप्त कर दिया।

राक्षस ने दूसरी चाल चली। उसके आंगन में फलों से लदा एक पेड़ था। पेड़ की ओर संकेत करके उसने कहा—"मैं इस पेड़ को अभी हिलाऊंगा। यदि कोई फल धरती पर गिरा, तो मैं तुम सबको खा जाऊंगा।"



इस बार देव पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। राक्षस द्वारा पेड़ हिलाने पर उसने फलों को अपने हाथों पर बीच में ही लपक लिया। राक्षस अपनी चाल में सफल नहीं हो पाया।

राक्षस को एक और चालाकी सूझी। उसने अपने एक फीजी वासी और चोर प्रेत को बुलाकर कहा—"तुम दोनों एक-एक टोकरी लेकर जाओ। जो पहले अपनी टोकरी केकड़ों से भरकर मेरे पास लाएगा, वही जीतेगा। यदि चोर प्रेत जीत गया तो, मैं तुम चारों को छोड़ दूंगा नहीं तो सबको खा जाऊंगा।"

फीजी वासी को पता था कि केकड़े कहां मिलते हैं। उसने अपनी टोकरी जल्दी केकड़ों से भर ली, जबकि चोर प्रेत खोजता ही रहा। जब दोनों लौटने को हुए, तो चोर प्रेत ने फीजी वासी से कहा-"मुझे प्यास बहुत लग रही है। मेरे लिए पेड़ से कुछ नारियल तोड़ कर ले आओ।" उसका कहा मानकर फीजी वासी पेड़ पर चढ़ गया। जब वह नारियल तोड़ने लगा, तो चोर प्रेत गाने लगा—

फीजी वासी की आंखें उनींदी-उनींदी
टोंगा वासी की आंखें हैं जागी हुई।

चोर प्रेत के यह गाते ही फीजी वासी को पेड़ पर ही नींद आ गई। तभी चोर प्रेत ने अपनी टोकरी को नारियल के छिलकों से भरकर ऊपर से ढका और उसकी टोकरी की जगह रख दिया। उसकी केकड़ों से भरी टोकरी को अपने पास रख लिया। इसके बाद उसने आवाज देकर फीजी वासी को जगाया। वह नीचे उतरा और बिना देखे ही टोकरी को लेकर चल दिया।

जब वे राक्षस के पास पहुंचे, तो दोनों ने अपनी-अपनी टोकरी खोली। चोर प्रेत की टोकरी केकड़ों से भरी थी और फीजी वासी की टोकरी खाली थी। यह देखकर उसे बहुत क्रोध आया, किंतु करता क्या? वह पहले ही वचन दे चुका था। उसने सभी को छोड़ दिया। वे खुशी-खुशी टोंगा की ओर चल पड़े। ●

बीच में नदी

—कु. कुआ थोंग

बहुत पहले की बात है। चीन के एक गांव में एक लड़का रहता था। उसका नाम न्यु लांग था। वह अनाथ था। लोगों की गाएं चराकर जैसे-तैसे अपना पेट पालता था।

लोगों ने उसके काम से खुश होकर उसे एक गाय दे दी थी। यह गाय ही उसकी दोस्त थी। वह गाय से खुद बातें करता। उसे बांसुरी बजाकर सुनाता।

उन दिनों आकाश में एक रानी शासन करती थी। उसकी सात बेटियां थीं। वे अपनी मां के साथ आनंद से रहती थीं। सातों बेटियां सुंदर और परोपकारी थीं। इनमें से छोटी बेटी सबसे सुंदर और बुद्धिमती थी। बुनाई करने में वह कुशल थी। वह अपने हाथों से बादल बुनती थी। आसमान में रहने के कारण लोग इन राजकुमारियों को परी कहते थे।

एक दिन सातों परियां आकाश से एक साथ पृथ्वी पर उतरीं। उनके धरती पर उतरने का कारण यह था कि आकाश में उनकी मां उन पर रौब जमाती थी। इसलिए मौका मिलते ही वे चुपके से भागकर पृथ्वी पर आ गईं। उन्हें स्वतंत्र जीवन बिताना पसंद था। वे खेलने लगीं। तभी न्यु लांग भी गाय चराते हुए वहां पहुंच गया।

लड़के को देखते ही छह परियां तो जल्दी से उड़ गईं, पर सबसे छोटी परी वहीं रह गई। उसका नाम चि जुयो था। न्यु लांग को देखते ही चि जुयो का मन उस पर रीझ गया। वह अपनी बहनों के साथ आकाश में नहीं गई।

न्यु लांग भी चि जुयो को देखते ही उसे चाहने लगा था। दोनों ने एक दूसरे को अपनी-अपनी जीवन-कथा सुनाई। जब चि जुयो को यह पता लगा कि न्यु लांग अनाथ है, तो उसने सदा के लिए पृथ्वी पर रहने का फैसला कर लिया। एक दिन दोनों का विवाह हो गया।

जब चि जुयो की मां को यह खबर मिली, तो उसे बहुत गुस्सा आया। पहले तो उसने यह सोचा कि चि



जुयो एक दिन जरूर यहां लौट आएगी। पर साल भर बीतने के बाद भी चि जुयो नहीं लौटी। तब चि जुयो की मां ने फैसला किया कि वह चि जुयो को जैसे भी होगा बेटी को आकाश में ले आएगी।

एक दिन उसने ऐसा ही किया। जब न्यु लांग घर पहुंचा, तो उसने देखा कि उसकी पत्नी गायब है। घर में बच्चे रो रहे थे। वह घबरा गया। उसने गाय को देखा। गाय उससे बातें करने लगी। गाय ने पत्नी के गायब होने का रहस्य बता दिया। साथ ही यह सलाह भी दी कि उसे अपनी पत्नी को ढूंढ़ने के लिए आकाश में जाना चाहिए। न्यु लांग दोनों बच्चों के साथ आकाश में पहुंचा। चि जुयो को यह खबर मिल गई। वह महल के दरवाजे पर आ गई। फिर अपने पति और बच्चों को पुकारते हुए उनकी ओर दौड़ी।

यह देखकर परी रानी का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। उसने अपनी अलौकिक शक्ति से न्यु लांग तथा चि जुयो के बीच एक नदी बना दी। यही नदी आज आकाश गंगा कहलाती है। न्यु लांग और बच्चे एक किनारे पर खड़े होकर मां को ताक रहे थे। दूसरे किनारे पर चि जुयो खड़ी आंसू बहा रही थी।

चि जुयो पति तथा बच्चों को देख तो सकती थी, किंतु उनसे मिल नहीं सकती थी। आकाश में उड़ते हुए नीलकंठ पक्षियों ने यह देखा, तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। तुरंत उन्होंने अपने को एक दूसरे से जोड़ते हुए एक पुल बना दिया।

चि जुयो उस पुल से होकर अपने बच्चों तथा पति के पास पहुंच गई। कहते हैं कि आज भी हर साल उसी दिन, नीलकंठ वैसा ही पुल बनाते हैं। **(चीन)**

चटपट

□ एक मित्र—लगता है, इस बार खेल में तुम सारे रिकार्ड तोड़ दोगे ?

दूसरा मित्र—तोड़ने से क्या फायदा ? पिटाई तो मेरी ही होगी ।

□ एक कवि—क्या आप मेरी एक कविता सुन सकते हैं ?

दूसरा कवि—क्यों नहीं ? पर आपको भी मेरी दो कविताएं सुननी पड़ेंगी ।

□ एक पड़ोसिन—बहन, तुम तो हवा से लड़ती फिरती हो ।

दूसरी पड़ोसिन—क्या करूं, यहां कोई लड़ने वाला है ही नहीं । तभी तो हवा से लड़ना पड़ता है ।

□ मां—बेटा, देखो मुन्नी क्यों रो रही है ?

बेटा—लगता है, उसे भी मेरी तरह आज का जेब खर्च नहीं मिला है ।

□ ग्राहक—तुम्हारे ढाबे में बहुत गंदगी है । यहां का खाना खाकर लोग बीमार पड़ेंगे ही ।

ढाबा वाला—भाई साहब ! ऐसा न हो, तो सामने वाले डाक्टर की क्लिनिक कैसे चलेगी ?

□ एक गप्पी—मैं तुम्हें आसमान में साथ ले जाने की बात कर रहा हूं । फिर भी तुम इधर-उधर न जाने क्या खोज रहे हो ?

दूसरा गप्पी—डाक्टर की दुकान ढूंढ़ रहा हूं । आसमान से फिसल गए, तो टूटे पैरों इलाज भी कराना पड़ेगा ।

□ संगीतकार—लगता है, आपको मेरा संगीत अच्छा लगा । तभी तो आप झूम रहे थे ।

श्रोता—धन्यवाद । खड़े होकर नींद का झोंका लेने में मुझे गिरने का डर रहता है ।

□ एक खिलाड़ी—तुम यहां आराम करो । तुम्हारी जगह मैं खेलूंगा ।

दूसरा खिलाड़ी—नहीं, मैंने खेल कर गलती की । अब मैं यह गलती तुम्हें नहीं करने दूंगा ।

□ हलवाई—साहब, बड़ी अच्छी मिठाइयां हैं । एक बार खाएंगे, सौ बार मुझे याद करेंगे ।

ग्राहक—माफ करना भाई, मेरी याददाश्त कमजोर है ।

□ वकील—तुम मुझे अपनी पूरी कहानी सच-सच बता दो । मैं तुम्हें बचा लूंगा ।

अभियुक्त—सच बोलने के कारण ही अब मैं जेल में हूं । फिर सच बोला, तो न जाने कहां जाना पड़ेगा ।

□ दारोगा—तुम बार-बार पड़ोसी के घर में क्यों चोरी करते हो ?

चोर—हुजूर, मैं इधर चोरी करता हूं, उधर वह मेरी चोरी कर लेता है ।

□ एक मित्र—कल तुमने कहा था कि तुम मेरे दो काम करोगे ।

दूसरा मित्र—पहले हां करूंगा फिर ना, हो गए न दो काम ।

□ ग्राहक—तुम्हें कैसे मालूम कि मैं यहां पहली बार आया हूं ।

वेटर—सर, जो इस होटल का खाना एक बार खा लेता है, वह दुबारा यहां भूल कर भी नहीं आता ।

□ एक मित्र—मुझे रास्ते में रुपए से भरा थैला मिल जाए, तो बताओ मैं क्या करूं ?

दूसरा मित्र—रुपए मुझे दे देना । थैला तुम ले लेना ।

□ पुलिस वाला—तुम दिन में भी चोरी करने लगे ?

चोर—क्या करूं हुजूर, रात में घर पहचानने में दिक्कत होती है ।

□ पिता—बेटा, मैं आज तक किसी क्लास में फेल नहीं हुआ ।

बेटा—पिता जी, जरूर आप किसी अच्छे स्कूल में पढ़े होंगे ।

□ सोहन—मोहन, मैं दांत निकलवाने डाक्टर के पास जा रहा हूं । कुछ रुपए मुझे उधार दे दो ।

मोहन—डाक्टर के पास क्या करोगे जाकर ? रामू पहलवान के पास चले जाओ । बिना रुपए ही काम बन जाएगा ।

□ पिता—बेटा, हिम्मत से काम लो, सब ठीक हो जाएगा ।

बेटा—पिता जी, हिम्मत खरीदने के लिए भी तो पैसे चाहिएं ।

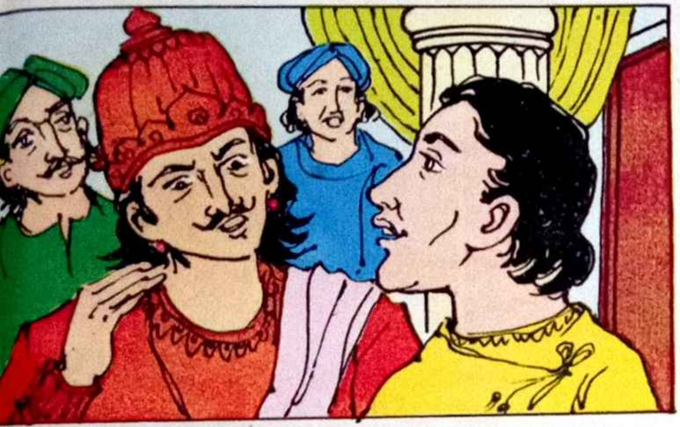
तेनालीराम ३०३

राज-सिंहासन



राजा कृष्णदेव राय ने एक बार अनोखी प्रतियोगिता आयोजित की। दूर-दूर तक घोषणा कराई—"वैशाखी पूर्णिमा की रात को महल के बगीचे में परी-कथा प्रतियोगिता होगी। जो सबसे अच्छी कथा सुनाएगा, उसे मुंहमांगा पुरस्कार दिया जाएगा।"

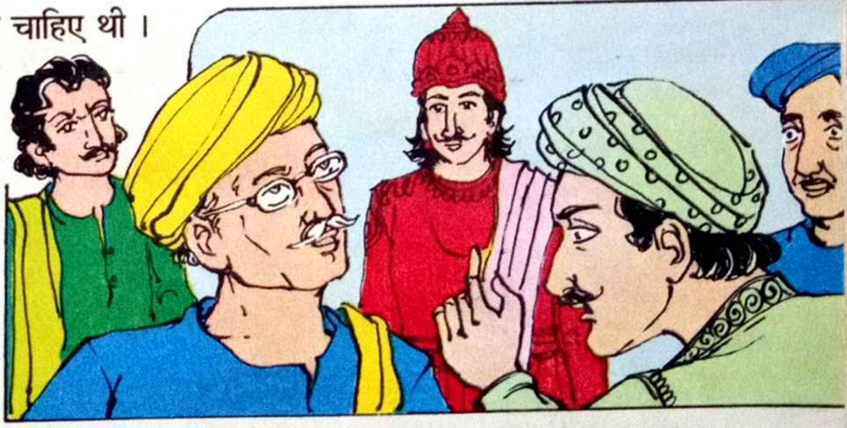
आयोजन बेहद सफल रहा। विजयी रहा पड़ोसी राज्य बीजापुर का एक नौजवान। राजा ने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा—"बोलो, पुरस्कार में क्या दिया जाए? धन, महल या हाथी-घोड़े?"



नौजवान ने पल भर कुछ सोचा। फिर बोला—"पुरस्कार में मुझे एक दिन के लिए राज-सिंहासन चाहिए।"

सारा दरबार सन्न। राजा परेशान। किंतु करें क्या? घोषणा ही ऐसी कराई गई थी। सोचकर बोले—"दो दिन का समय दो।" नौजवान मान गया।

रात को राजा ने मंत्री-परिषद की बैठक की। सभी का कहना था—"वह नौजवान विदेशी है। एक दिन में न जाने क्या उलट-फेर कर दे। सिंहासन सौंपने की बजाय उसे बंदी बना लेना चाहिए।"



तेनालीराम ने विरोध किया—"यह बात पहले सोचनी चाहिए थी। घोषणा की बात पूरी न हुई, तो महाराज की प्रतिष्ठा पर आंच आएगी।"

राजा चुप रहे। अन्य सभी ने नौजवान का पक्ष लेने के कारण तेनालीराम पर व्यंग्य-वाण छोड़े। दो दिन इसी में बीत गए। कोई फैसला न हो सका।

तीसरे दिन नौजवान फिर दरबार में आया। दरबारियों के चेहरे तमतमाने लगे। राजा ने तेनालीराम की ओर देखा। तेनालीराम नौजवान से बोला—"नौजवान, तुम कोई भी हो, विजयी हो। अपनी मांग के अनुसार तुम एक दिन के लिए राज-सिंहासन ले जा सकते हो। मगर, कल इसी समय, ऐसी ही हालत में इसे तुम्हें वापस करना होगा। एक पल की भी देर हुई, तो कठोर दंड मिलेगा।"



नौजवान हक्का-बक्का रह गया। उसका मतलब था—एक दिन का राज-पाट। किंतु तेनालीराम ने कहा—"तुमने एक दिन के लिए राज-सिंहासन ही मांगा था। सो ले जाओ।"

राजा मुसकराने लगे। दरबार में तेनालीराम की जय जयकार होने लगी। और वह नौजवान सिर झुकाए दरबार से चला गया।

पिडिलाइट लाए वॉटर कलर्स

पिडिलाइट

फ़ेविक्रिल®



पिक्सी पैक

सरलता से छाएं, मन को भाएं

A PIDILITE PRODUCT

आधा खाना

—मृदुला हालन

दीनू एक लकड़हारा था। बहुत गरीब, पर दिल का बहुत भला और ईमानदार भी। उसे कितनी ही मुसीबतें उठानी पड़तीं, पर वह बेईमानी का मार्ग कभी नहीं चुनता था।

एक दिन लकड़ी काटने वह घर से चला, तो बहुत चिंतित था। घर में जो बचा-खुचा आटा था, पत्नी ने उसी की रोटियां सेंक ली थीं। कुल सात रोटी बनी थीं। घर में पांच बच्चे और पति-पत्नी थे। पत्नी ने दो रोटियां कपड़े में लपेट कर दीनू को दे, कहा था—''भगवान करे, आज तुम्हें खूब लकड़ियां मिलें।''

इन विचारों में डूबा दीनू घने जंगल में जा पहुंचा। थक गया था। मगर बैठने का वक्त नहीं था। वह एकदम लकड़ी काटने में जुट गया। कुछ ही देर में लकड़ियों का ढेर लग गया। दोपहर ढलने लगी थी। दीनू को भूख लग आई थी।

पत्थर पर बैठ कर उसने कुरते की आस्तीन से पसीना पोंछा और रोटी की पोटली खोली। निवाला तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि देखा, झाड़ियों से निकल कर एक बूढ़ा बौना उसके ठीक सामने आ खड़ा हुआ। हल्की आवाज में बोला—''मैं बहुत भूखा हूं। मालपुए खाऊंगा।''

दीनू ने कहा—''मालपुए तो मेरे पास नहीं हैं। ये दो रोटी हैं। दोनों एक-एक खा लेते हैं।'' बौना रोटी पर टूट पड़ा। ऐसा लगता था, जैसे वह दीनू से भी अधिक भूखा था।

रोटी खा कर बौने के चेहरे पर तृप्ति का भाव आया। वह बोला —''मुझे प्यास लगी है। कुछ शर्बत वगैरह है तुम्हारे पास?''

दीनू फीकी-सी हंसी हंसा—''ऐसे समय में शर्बत की भी तुमने खूब कही। मेरे पास तो पानी भी नहीं है। पास में एक झरना है। कहो तो, वहीं से पानी ला दूं?''

बौने ने सिर हिला कर 'हां' कही। दीनू पानी लाने चल दिया। पानी पी कर बौने ने एक बार दीनू की तरफ गौर से देखा और पलक झपकते झाड़ियों में गायब हो गया। हैरान दीनू देखता रह गया।

'वाह रे बौने! मेरी रोटी खाई, मुझसे पानी मंगवाया और बिना कुछ कहे-सुने चलता बना।' —लकड़ियों को पीठ पर लादते हुए दीनू ने सोचा—'अब बाजार जाकर लकड़ियां बिकें, तो चार पैसे हाथ आएं। तभी रात के खाने का जुगाड़ होगा।' वह आगे चल दिया।

कुछ ही दूर गया था कि लगा जैसे सारा जंगल डांवाडोल हो रहा है। जमीन में गड़गड़ाहट, पेड़ों की टहनियों की टकराहट! दीनू एक कदम भी आगे नहीं चल पा रहा था। और तभी एक ऐसी भयंकर गर्जना





हुई, धरती-आकाश तक कांप उठे ।

उसे लगा, जैसे उसके सामने का पहाड़ ऊपर उठता जा रहा है । मारे आश्चर्य के दीनू ठिठककर खड़ा रह गया । कुछ ही देर में पहाड़ के ऊपर उतना ही विशाल और डरावना चेहरा उसे दिखाई दिया । दीनू के प्राण कांप गए । वह पहाड़ नहीं, पहाड़ जैसी निर्दयी राक्षसी थी । उसके अनेक किस्से दूर-दूर तक मशहूर थे । आज तक उसे किसी ने देखा नहीं था।

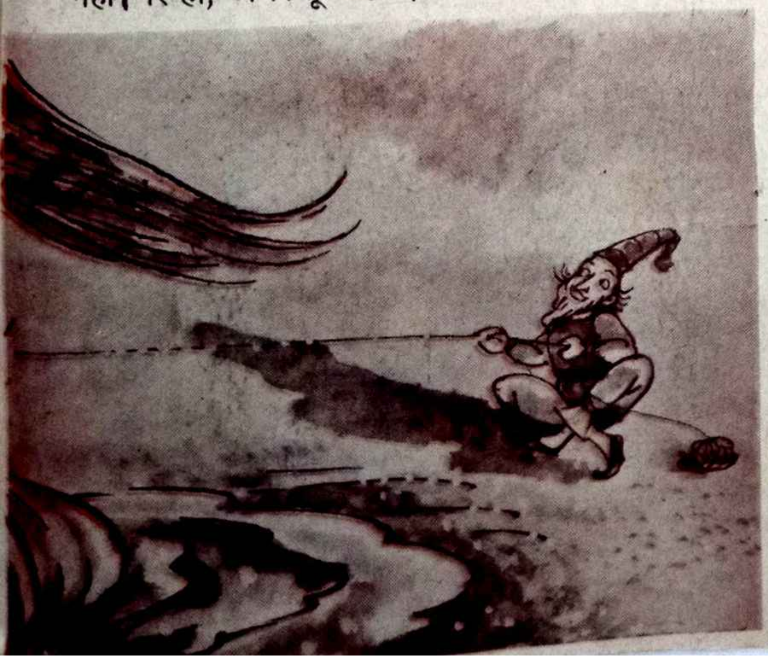
भयंकर आवाज में राक्षसी ने पूछा—"कौन है रे तू ? ...और मेरी इस नगरी में क्यों आया ?"

आवाज क्या थी, जैसे चारों ओर बम फट पड़े हों । लकड़ियों का गट्ठर कमर से फिसलकर जमीन पर आ गिरा । दीनू एक तो थका था, ऊपर से भूखा-प्यासा भी था । इस मुसीबत को देखकर उसकी रही- सही शक्ति भी जाती रही । गिड़गिड़ाते हुए बोला—"माई बाप ! गरीब लकड़हारा हूं । लकड़ी काटने आया हूं ।"

"हमारे जंगल में कोई बाहर का आदमी लकड़ी नहीं काटता ।"—राक्षसी दहाड़ी—"तुझे तो अब खाऊंगी ही ।"

"मेरे घर में छोटे-छोटे बच्चे हैं । मेरी पत्नी है । आप मुझे खा लेंगी, तो उनका क्या होगा ? वे तो भूखों मर जाएंगे ।"—दीनू गिड़गिड़ाया ।

राक्षसी को उसकी गिड़गिड़ाहट में आनंद आ रहा था । वह हंसकर बोली—"वैसे तो मैं तुझे छोड़ूंगी नहीं। पर हां, अगर तू कहीं ऐसी जगह छिप सके, जहां मैं तुझे ढूंढ़ न सकूं, तो बच सकता है । अगर तीसरी बार भी मैंने तुझे खोज लिया, तो तू गया । अब खड़ा क्या है ! जा भाग !" और राक्षसी हंस पड़ी ।



दीनू बिना सोचे-समझे भागा । उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था । सोच रहा था—'मौत के इस खेल से बचने के लिए कहां छिपूं ? ऐसी जगह भला कहां मिलेगी ?'

अचानक उसे अपने सामने वही बौना दिखाई दिया । बौना बोला—"डरो मत । मैं तुझे छिपा दूंगा ।" कहकर उसने घास का एक तिनका तोड़ा । उसको झाड़ा । दीनू को छोटी-सी एक सूई में बदलकर तिनके के अंदर रखा और तिनके को जोड़कर नीचे घनी घास में डाल दिया ।

'अब देखता हूं, राक्षसी इसे कैसे ढूंढ़ती है ?'—बौने ने सोचा ।

तभी सामने से राक्षसी आती दीख पड़ी । उसके हाथों में बड़ी सी दरांती और बड़ी सी छलनी थी ।

"बड़ी मौसी, कहां चलीं ?"—बौने ने ठिठोली की ।

"देखते नहीं, कितनी बड़ी-बड़ी घास उग आई है ? घास काटकर जंगल साफ करने आई हूं ।"—कुटिलता से मुसकराकर राक्षसी ने कहा ।

उसकी दरांती के एक ही वार से जंगल के काफी बड़े हिस्से की घास कट गई । सारी घास को छलनी में रखकर राक्षसी ने छाना । टप्प से घास का एक तिनका नीचे गिर पड़ा । राक्षसी ने मुसकराकर बौने की तरफ देखा, जैसे उसकी खिल्ली उड़ा रही हो । तिनके को खोलकर उसने सूई निकाली, तो वह दीनू बन गया ।

डरते-कांपते दीनू को देखकर राक्षसी का आनंद बढ़ गया—"मैंने तुझे ढूंढ़ लिया । जा भाग ! दूसरी बार अपनी किस्मत आजमा ले ।"

इस दफा बौने ने दीनू को अंगूठे बराबर आकार का बना दिया । फिर एक बड़े से पेड़ के तने की छाल छीलकर अंदर छोटा-सा गड्ढा बनाया । उसमें दीनू को रखकर घास फिर अपनी जगह लगा दी । पेड़ ज्यों का त्यों दिखाई देने लगा ।

'इतने पेड़ों में राक्षसी भला कैसे ढूंढ़ सकेगी

इसे ?' —बौना मन में सोच ही रहा था कि राक्षसी बहुत बड़ी कुल्हाड़ी लिए आती दिखाई दी।'

—"तुम बहुत काम करती हो बड़ी मौसी ! अब कहां चल दीं ?"

"ये पुराने, बूढ़े पेड़ जंगल को घेरे हुए हैं। इन्हें काटूं तो नए पेड़ों को जगह मिले।"—कहकर राक्षसी ने कुल्हाड़ी के एक ही वार से उसी बड़े पेड़ को काट डाला— ठीक उसी जगह से जहां दीनू छिपा हुआ था। एक दफा फिर कांपता दीनू उसके सामने खड़ा था।

"हा-हा-हा ! मैंने तुझे फिर ढूंढ़ लिया। अब अंतिम अवसर है। जा भाग। ढूंढ़ अपने लिए कोई जगह। याद रखना, इस बार मैं तुझे नहीं छोड़ूंगी।"—कहकर राक्षसी झूमती-नाचती चली गई।

दीनू एकदम निराश हो चुका था। मोटे-मोटे आंसू उसकी आंखों से गिरने लगे।

बौने ने वे आंसू देखे, तो उसकी आंखों में चमक आ गई।

"तू फिक्र न कर। देखता जा, अब मैं तुझे कहां छिपाता हूं।"—कहकर बौने ने दीनू को पानी की नन्ही सी बूंद बना दिया। दीनू की आंख से गिरे एक आंसू को खोलकर उसके अंदर वह बूंद रख दी और आंसू को फिर से जोड़ दिया। बौना वह आंसू लेकर समुद्र के पास आया। उसे रेशम के बेहद महीन धागे से बांध, समुद्र में फेंक दिया। समुद्र की विशाल लहरों में वह आंसू कहां खो गया, भला कोई जान सकता था ?

बौना अभी सुस्ताने भी नहीं पाया था कि धरती डोलने लगी। उसने जान लिया कि राक्षसी आ रही है। वह तैयार हो गया।

—"बड़ी मौसी ! कहां जा रही हो ?"

"अरे ! देख नहीं रहा है, समुद्र में एक बूंद कितनी चमक रही है। जरूर कोई कीमती मोती होगा। वही लेने आई हूं।" —कहते हुए वह समुद्र की तरफ बढ़ गई।

उसके आगे जाते ही बौने ने उस महीन धागे का दूसरा सिरा राक्षसी के पांव में फंसा दिया। इतना बड़ा शरीर, महीन धागे का आभास तक उसे नहीं हुआ।

राक्षसी जैसे-जैसे समुद्र में उतरती गई, उसके पैर की गांठ कसती गई। लहरों की उठान पर ज्यों ही आंसू उसे दीखता, वह उसे लेने झपटती। धागा उसके पैरों पर और लिपट जाता।

थोड़ी ही देर में उसका शरीर बुरी तरह धागे में जकड़ा गया। अब उसे महसूस हुआ कि कहीं कोई चीज उसे रोक रही है। गुस्से से उफनते हुए उसने चारों तरफ हाथ-पैर मारे. इस उछल-कूद में वह और जकड़ी गई। दहाडते हुए उसने हाथ ऊपर उठाए कि धागा उसकी गर्दन से लिपट गया।

बौना इसी क्षण का इंतजारकर रहा था। उसने धागे को खींचकर कसना शुरूकर दिया। अब राक्षसी की सांस घुटने लगी। वह छूटने की जितनी कोशिश करती, उतना ही धागे का दबाव बढ़ता जाता।

क्रोध से छटपटाते हुए उसने जोर-जोर से चिंघाड़ना शुरूकर दिया। उसके नथुनों से आग की लपटें निलने लगीं। उसकी चिंघाड़ से समुद्री जीव-जंतु थर्रा उठे। भगदड़ मच गई।

इसी समय उसे दूर एक लहर पर वह आंसू नजर आया। वह उस पर झपटी। इतने में उसका गले का फंदा पूरी तरह कस गया। राक्षसी की सांस बंद होती गई। शरीर शिथिल पड़ गया और बहुत भयंकर हिचकी के साथ वह मर गई।

बौने ने आंसू वाले धागे को खीचकर बाहर निकाल लिया। आंसू को तोड़ा और पानी की बूंद फिर दीनू बन गई।

बौना उसे लेकर राक्षसी के घर आया। वहां एक बक्सा रखा था। बौने ने उसे खोला, तो दीनू की आंखें चौंधिया गई। वह बक्सा सोने से भरा था।

—"यह सब तेरा है। पर सारा एक साथ घर नहीं ले जाना। न किसी को इसके बारे में बताना। जब जितनी जरूरत हो, यहां से निकाल लेना। और हां ! तुमने खुद भूखे रहकर अपना आधा खाना मुझे दिया था। उसके लिए धन्यवाद।" कहते-कहते बौना गायब हो गया। ●

झील में महल

—कुलदीप तलवार

परीलोक में एक परी रहती थी। उसका नाम रूही था। वह बहुत सुंदर थी। लंबे-लंबे बाल थे, गोरा रंग। मोटी-मोटी आंखें।

एक दिन वह अपने एक हाथ में शीशा और दूसरे हाथ में कंघी लिए अपने बाल बना रही थी। साथ-साथ गीत गा रही थी। अचानक शीशा गिर गया। शीशा धरती पर एक झील में आ गिरा। झील के किनारे एक मछेरा जाल डाले बैठा था। उसने देखा कि झील में सुंदर-सुंदर वस्तुएं दिखाई देने लगीं। आलीशान महल, बाग-बगीचे, कोयल तथा बाग में फलों के दरख्त। चारों तरफ फल ही फल। जिधर नजर दौड़ाओ, दिल को मोह लेने वाले दृश्य।

मछेरा इन सुंदर दृश्यों को देखकर बहुत चकित हुआ। वह हैरान था कि यह सब कैसे हुआ? अपना जाल झील में ही छोड़कर, वहां से भागता हुआ अपने घर आया। उसने अपनी पत्नी वसंतो को सारी बात बताई। मछेरे की पत्नी ने इसे मजाक समझा। उसने मछेरे से कहा—"चुपचाप खाना खाओ और आराम करो। ऐसा लगता है कि तुम्हारा दिमाग चल निकला है।" मछेरा अपनी बात फिर दोहराने लगा। उसकी पत्नी ने उसे डांट पिलाई। बेचारा क्या करता, खाना खाकर सो गया।

दूसरी सुबह फिर झील की तरफ गया। उसे फिर वही सुंदर-सुंदर दृश्य दिखाई देने लगे। उसने अपनी आंखों को जोर-जोर से मला। जैसे उसका अपनी आंखों पर यकीन उठ गया हो। वह वहीं बैठकर सुंदर दृश्यों को देखने लगा। वह वहां से उठा ही नहीं, यहां तक कि रात हो गई।

रात में देखा कि एक सुंदर परी आसमान से उतरकर झील में आई। उसके पैरों से घुंघरुओं की आवाज आ रही थी। वह सीधी झील में चली गई। अपना हाथ जल में डाल, शीशे को उठा लिया, लेकिन उसने अपना हाथ बाहर निकालना चाहा, तो हाथ जाल में फंस गया।

घबराकर परी इधर-उधर देखने लगी। नजर मछेरे पर पड़ी। मदद के लिए चिल्लाने लगी। मछेरा दौड़ा-दौड़ा वहां आया। अपनी जेब से चाकू निकालकर उसने जाल काट दिया। हाथ जाल से बाहर निकला देख, परी बहुत खुश हुई। मछेरे को धन्यवाद दे, अपना शीशा लेकर उड़ गई।

तभी मछेरे ने देखा कि झील का पानी गंदा हो गया। महल और बागों के सुंदर-सुंदर दृश्य दिखाई देने बंद हो गए। वह परेशान हो, तुरंत अपने घर लौटा। कहता जा रहा था—"झील का पानी गंदा हो गया—झील का पानी गंदा हो गया।" रात में सोते-सोते भी यही बात दोहराता रहा। सुबह उसकी पत्नी ने उसे बुरा भला कहा। बोली—"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। कभी कहते हो कि झील में सुंदर-सुंदर दृश्य दिखाई देते, महल और बगीचे नजर



आते हैं। घर आने को जी नहीं करता। अब कहते हो कि झील का पानी गंदा हो गया। झील पर जाओ और मछली पकड़ो। घर का गुजारा कैसे चलेगा ?"

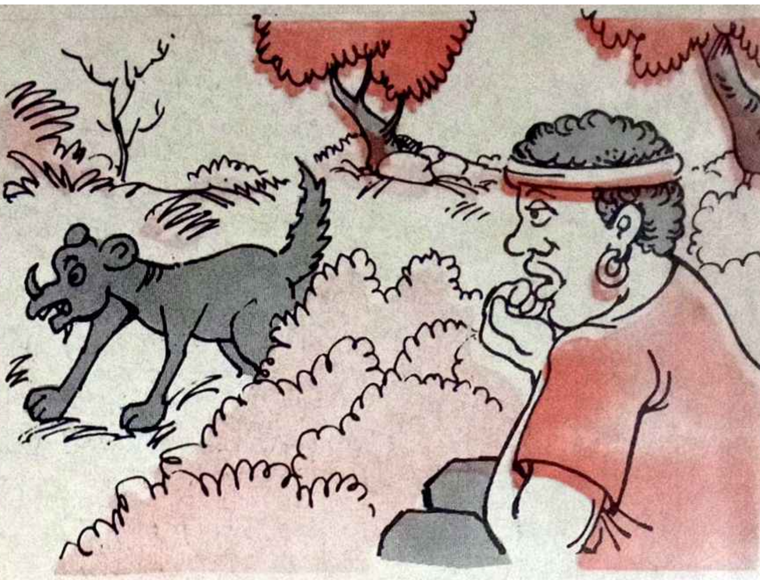
मछेरा बहुत मुश्किल में पड़ा। क्या करे और क्या न करे ? वह अपना सिर लटकाए फिर झील की तरफ चल पड़ा। वहां पहुंचकर देखा कि झील का पानी बहुत गंदा है। सुंदर-सुंदर दृश्य भी दिखाई नहीं दे रहे। वह अपना सिर झुकाए झील के किनारे बैठ गया। उसका मछली पकड़ने में भी मन नहीं लगा। वह उस सुंदर परी की कल्पना में ही खोया रहा। बार-बार सुंदर परी को याद करता। आंखों से आंसू बहते रहते। शाम हो गई। वह अपने घर नहीं लौटा।

उसकी पत्नी बहुत दुखी हुई। वह उसे ढूंढ़ने आई। वहां पहुंचकर देखा कि उसका पति झील के किनारे उदास बैठा है। यह देख, वह स्वयं भी रोने लगी। पति का अगर यही हाल रहा तो घर का गुजारा कैसे चलेगा ? बच्चे भूखे मर जाएंगे।

उनकी यह हालत परी लोक में परी ने भी देखी। परी को उनकी हालत पर रहम आ गया। उसे लगा कि मछेरे की यह बुरी हालत उस के कारण हुई। वह धीरे-धीरे आसमान से धरती पर उतरी। झील के पास पहुंची। उसे देखकर मछेरा बहुत खुश हुआ। परी ने मछेरे से पूछा कि उसे क्या चाहिए ? मछेरा बोला कि वह परी के साथ परी लोक जाना चाहता है। यह सुनकर परी हंसने लगी। वह जानती थी कि ऐसा नहीं हो सकता। परी ने मछेरे की पत्नी से पूछा।

मछेरे की पत्नी रोने लगी। बोली—"मेरा पति हर समय तुम्हारे ख्याल में खोया रहता है। इन्हें अपने साथ परी लोक न ले जाना। अगर ले गईं तो मेरे बच्चों को कौन देखेगा ?" मछेरे की पत्नी की बात सुन, परी मुसकराई। कहा— "तुम दोनों हमेशा सुखी रहोगे। कभी कोई कमी नहीं होगी।" कहकर परी उड़ गई।

अचानक मछेरा पुरानी सारी बातें भूल गया। उसे यह भी याद नहीं रहा कि उसने सुंदर-सुंदर महल और बागों के दृश्य देखे थे। वह परी को भी भूल गया। वह फिर से झील में मछली पकड़ने लगा। ●



पीछे गया समय

—चंद्रेश्वर प्रसाद

बात पुराने जमाने की है। अफ्रीका में घने जंगल के किनारे एक गांव था। वहां उसामा नामक एक किसान रहता था। उसामा बहुत बहादुर तथा साहसी शिकारी था। गांव में लोग उसकी बहुत इज्जत करते थे। गांव वाले अपने खेतों में अनाज और सब्जियां उगाया करते थे। सबके दिन सुख से बीत रहे थे।

एक दिन गांव में विचित्र घटना घटी। न जाने किसने उसामा के सब्जी के खेत का एक हिस्सा उजाड़ दिया। किसने यह काम किया, इसका पता नहीं चला। दूसरे दिन भी वैसा ही हुआ। ठीक इसी तरह की घटना तीसरी रात भी घटी। अब तो उसामा ने मन में ठान लिया कि वह रात में स्वयं जागकर पहरा देगा। वह भाला लेकर खेत की रखवाली करने के लिए पहुंच गया।

उसामा एक झाड़ी में छिपकर बैठ गया। ठीक आधी रात के समय उसामा को एक विचित्र जानवर नजर आया। ऐसा जानवर उसने पहले कभी देखा नहीं था। फिर भी वह डरा नहीं। उसने सोचा—'यदि यह जानवर आज खेत उजाड़ने लगेगा, तो इसे पकड़ लूंगा या भाले से मार डालूंगा।' लेकिन पशु को उसके सांस लेने की आहट मिल गई। वह मुड़कर वापस भागा।

उसामा ने भी हवा की तेजी से उसका पीछा किया। जानवर नदी की ओर दौड़ा और नदी किनारे एक बड़े गड्ढे में घुसकर गायब हो गया। उसामा भी

उसके पीछे-पीछे उस गड्ढे में घुस गया। अंदर जानवर तो नजर नहीं आया, पर विचित्र रूप वाले बौने अवश्य नजर आए।

बौने उसामा को देखकर शोर मचाने लगे। उस पर तीर चलाने लगे। उसे जान बचाने के लिए भागना पड़ा। उसामा उसी रास्ते से बाहर आ गया। फिर जल्दी-जल्दी अपने गांव में जा पहुंचा।

उसे पूरा गांव बदला हुआ नजर आया। कोई परिचित व्यक्ति नहीं दिखाई दिया। उसामा आश्चर्यचकित था। अंत में उसने एक नौजवान से अपने घर के बारे में, अपनी पत्नी और पुत्र के बारे में पूछा।

उस नौजवान ने बताया—"हां, कोई पचास वर्ष पहले उसामा नाम का एक व्यक्ति रहस्यमय ढंग से गायब हो गया था।" फिर उसने उसामा को उसके घर पहुंचा दिया। वह देखकर हैरान रह गया कि उसकी पत्नी बहुत बुढ़िया हो गई थी। उसका बेटा भी प्रौढ़ नजर आ रहा था।

उसामा हैरान था कि ऐसा कैसे हो गया ! वह उस गड्ढे में आधा घंटा ही रहा होगा। लेकिन ऊपर इतनी ही देर में पचास से भी अधिक वर्ष बीत गए।

इस बीच उसामा के लौटने की खबर गांव में बिजली की भांति फैल गई। उसके कुछ मित्र मिलने आए।

उसामा ने उन्हें पूरी घटना बता दी। इस बात पर सभी एकमत थे कि उसामा के साथ अन्याय हुआ है। पर अब क्या किया जाए ? लोगों की राय हुई कि उसामा, पत्नी तथा गांव के दो-चार बूढ़े व्यक्तियों को लेकर पुनः उसी गड्ढे में जाए और वहां फरियाद करे।

दूसरे दिन उसामा अपनी पत्नी, बेटे और गांव के दो-चार बूढ़े व्यक्तियों के साथ बौनों के देश में उसी रास्ते से गया। वहां के राजा से न्याय मांगा। बौनों के राजा ने उसकी फरियाद सुनी। फिर फैसला किया कि सचमुच उसामा की कोई गलती नहीं है, बल्कि यह सब बौनों के कारण हुआ।

बौनों के राजा ने उसामा तथा दूसरे लोगों को एक विशेष रस पीने को दिया। उसे पीते ही वे सब पहले जैसे हो गए।

उसामा ने बौनों के राजा से कहा—"आपने हमें तो ठीक कर दिया। पर बाकी गांव वालों का क्या होगा ?"

यह सुनकर बौनों का राजा हंसने लगा। उसने कहा—"जब तुम ऊपर जाओगे तो बौनों के जादू का चमत्कार देखोगे। और हां, आगे हमारे देश का कोई भी प्राणी तुम लोगों को परेशान नहीं करेगा।"

बौनों के राजा को धन्यवाद देकर उसामा तथा दूसरे लोग बाहर चले आए। बौनों के राजा ने ठीक ही कहा था—उसामा का गांव, वहां के सब लोग पहले जैसे ही हो गए थे।



आज आपके प्यार का यह उपहार,
कल उसको देगा खुशियां अपार.



नाज नखरों से पली, आपकी नन्ही सी लाड़ली. आपके गौरव का आधार, आपकी खुशियों का भण्डार. आज की प्यारी सी बालिका, कल की एक सुकोमल, सहृदय, स्नेहमयी नारी. आप चाहा करते हैं यही, कि उसकी मुस्कान सदा खिली रहे यूँ ही.

तो उसके आने वाले दिनों की सोचिए. कल के उसके सपनों को पूरा करने की सोचिए. और उसके भविष्य को सुरक्षित कीजिए. उसे यूनिट ट्रस्ट की राजलक्ष्मी उपहार में दीजिए उसके अगले जन्मदिन पर और 5 साल की हो जाने तक उसके हर जन्मदिन पर, या फिर रक्षाबंधन, भैया दूज या आनन्द उल्लास से भरे अन्य किसी भी अवसर पर.

राज लक्ष्मी
उसके सुनहरे भविष्य के लिए

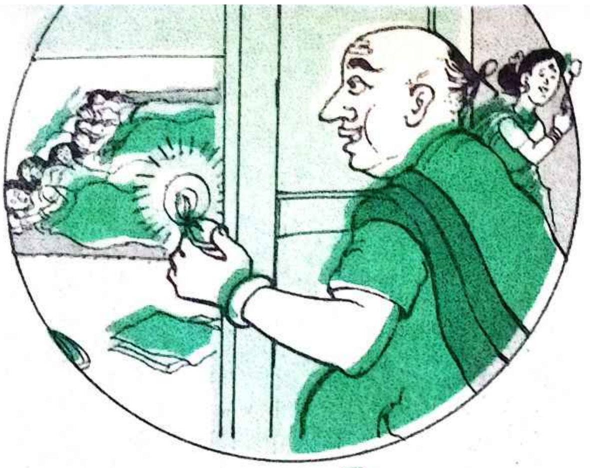
भारतीय यूनिट ट्रस्ट

ADROIT-128HIN

राजलक्ष्मी, पांच साल तक की बालिका के लिए एक विशिष्ट योजना, जिसमें उसकी पूंजी हो सकती है 20 वर्षों में 21 गुना.

विशेषताएं: ☐ जब चाहे योजना में भाग ले सकते हैं. ☐ न्यूनतम निवेश रु. 1,000/-. कोई ऊपरी सीमा नहीं. ☐ कोई भी व्यक्ति, राज्य/केन्द्रीय सरकार, ट्रस्ट, सोसायटी, निगम निकाय या कम्पनी 5 वर्ष तक की आयु वाली बालिका के लिए निवेश कर सकते हैं. ☐ बालिका के जन्मदिन पर किया गया रु. 1,000/- का निवेश 20 वर्षों में 21 गुना हो जाएगा. वृद्धि की मात्रा योजना में भाग लेने के समय बालिका की आयु पर निर्भर. ☐ परिपक्वता तिथि की गणना आवेदन पत्र की स्वीकृति की तिथि से की जाएगी. ☐ समय समय पर बोनस की घोषणा, परिपक्वता पर देय.

सभी सिक्यूरिटीज निवेशों में जोखिम होते हैं. निवेश से पहले अपने सलाहकार या एजेण्ट से परामर्श कर लें.



कुगसड़ी

—उषा महाजन

बहुत दिन हुए, किसी गांव में एक गरीब ब्राह्मण अपनी पत्नी और सात बेटियों के साथ रहता था। आमदनी तो कुछ खास थी नहीं। कथा बांचने और लोगों के घर पूजा-पाठ कर पुरोहिती से जो दान-दक्षिणा मिलती, उसी से परिवार का गुजारा चला रहा था। बेचारी ब्राह्मणी के लिए नौ प्राणियों को दो जून भरपेट भोजन कराना कठिन था। ऊपर से ब्राह्मण इतने चटोरे स्वभाव का था कि नित्य ही उसे स्वादिष्ट और बढ़िया पकवान खाने की इच्छा हुआ करती। ब्राह्मणी लोगों के यहां फूल आदि चुनकर देने या माला गूंथने जैसे छोटे-मोटे काम कर, कभी कहीं से सूजी या बेसन मांग लाती, कभी मूंग या उड़द की दाल। सातों लड़कियों के गहरी नींद में सो जाने के बाद पति को हलवा, पूड़ी, पकौड़ी या दही-भल्ले जैसे उसके मनपसंद व्यंजन बनाकर खिलाती।

लेकिन उनकी सबसे बड़ी बेटी कुगसड़ी बहुत चतुर थी। देखने में एकदम कुरूप और बुद्धि की उतनी ही तेज।

एक दिन ब्राह्मणी ने बेटियों से छिपाकर उड़द की दाल की पीठी तैयार की। दही-भल्ले बनाने के लिए उनके सोने का इंतजार कर रही थी। ब्राह्मण हाथ में दीपक लेकर बगल की कोठरी में झांक आया था। सातों बहनें एक-दूसरे पर लुढ़की गहरी नींद में सो रही थीं। उसने चैन की सांस ली और पत्नी से कहा—"अब जल्दी से मेरे लिए गरमागरम करारे भल्ले तलने शुरू कर दो।"

कड़ाही में तेल गरम होने पर जैसे ही ब्राह्मणी ने उसमें छुन्न से पहला भल्ला छोड़ा, उसका हाथ कांपकर वहीं रुक गया। देखती क्या है कि चौके की देहरी पर कुगसड़ी खड़ी उसकी ओर हाथ पसार रही है। कह रही थी—"छुन्नन मां, मुझे भल्ला दे।"

उसने कुगसड़ी को पहला भल्ला थमाते हुए पुचकार कर समझाया—"चुपचाप खाकर सो रहो और बाकी की बहनों को न बताना।" पर बहनें तो पहले ही कतार बांधे चौके के बाहर खड़ी थीं। ब्राह्मणी को सारे भल्ले तलकर बेटियों को ही खिला देने पड़े। ब्राह्मण के लिए कुछ बचा ही नहीं। भूख और क्रोध के मारे उसका बुरा हाल हो गया। जीभ के चटोरेपन के आगे वह संतान के मोह को भी भूल बैठा। कुगसड़ी से किसी न किसी प्रकार छुटकारा पाने का उपाय सोचने लगा, क्योंकि अपने साथ वह बाकी लड़कियों को भी बहका रही थी।

ब्राह्मण को एक उपाय सूझा। कुगसड़ी को बुलाकर उसने कहा—"बेटी, मुझे एक दूसरे गांव से कथा बांचने का बुलावा आया है। तू ही मेरी सबसे अक्लमंद बेटी है। रास्ते में अगर कहीं कोई डाकू-लुटेरे मिल गए, तो अपनी बुद्धि से उनसे बचाव का कोई न कोई उपाय निकाल ही लेगी। इसलिए तू भी मेरे साथ चल।"

कुगसड़ी पिता के साथ चल पड़ी। चलते-चलते वे एक घने जंगल में पहुंच गए। इतने में ही रात घिर आई। वन के कंद-मूल, फल खाकर वे दोनों साथ लाई अपनी-अपनी चादरें ओढ़, वहीं सो गए। सुबह जब पिता को जगाने के लिए कुगसड़ी ने उसकी चादर हटाई, तो वह हैरान रह गई। चादर के नीचे किसी पेड़ की मोटी सी, सूखी टहनी पड़ी थी, पिता तो था ही नहीं। चतुर लड़की को समझते देर न लगी कि उसे उस घने जंगल में अकेली छोड़, उसका पिता घर वापस लौट गया था।

कुगसड़ी केवल चतुर ही नहीं थी, बहादुर और हिम्मत वाली भी थी। उसने समझ लिया कि अब तो यहीं रहना है। क्यों न अपने अच्छी तरह रहने की

व्यवस्था शुरू कर दे ? उसने सबसे पहले अपने लिए एक झोंपड़ी बनाने की सोची। पेड़ की एक डंडी लेकर नींव खोदने लगी। अभी उसने बित्ता भर जमीन ही खोदी थी कि मिट्टी के नीचे उसे कोई सुनहरे पंख सरीखी चीज हिलती नजर आई। उसने धीरे-धीरे बड़े जतन से उस स्थान से और मिट्टी हटाई, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसके देखते-देखते ही अपने सुनहरे पंखों से मिट्टी झाड़ती, एक बेहद खूबसूरत परी उसके सामने आ खड़ी हुई। कुगसड़ी चकित होकर उसे देखती ही रह गई।

सुनहरी परी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"मैं किसी शाप के कारण यहां बरसों से दबी पड़ी थी। तुमने मुझे शाप मुक्त किया है। इसके बदले मैं तुम्हें अपनी एक अंगूठी दूंगी। तुम जब तक इसे पहने रहोगी, बीमारी और बुढ़ापा तुम्हारे पास भी नहीं फटकेगा। साथ ही यह तुम्हारी सभी मनचाही इच्छाएं पूरी करेगी। किंतु अगर कभी तुम इसे उतार दोगी, तो मैं तुमसे नाराज हो जाऊंगी।"

इतना कह, परी ने अपनी अंगूठी उसकी अंगुली में पहनाई और तुरंत गायब हो गई।

अंगूठी वाली अंगुली को चूमते हुए कुगसड़ी मन ही मन बुदबुदाई—'काश, मुझे किसी राजकुमारी का सा रूप-यौवन मिल जाए।' पलक झपकते ही कुगसड़ी तो सचमुच किसी खूबसूरत राजकन्या-सी दिखने लगी। उसने अपने लिए घोड़ा भी मांग लिया।

घोड़ा दौड़ाती वह अपने घर के पास पहुंच गई। बाहर से ही उसने देखा कि उसकी छहों बहनें तथा मां उसका नाम ले-लेकर विलाप कर रही थीं। पिता शर्म से सिर झुकाए बैठा था।

राजकुमारी का वेश धरे कुगसड़ी की आंखों से भी झर-झर आंसू बहने लगे। पर उसने माता-पिता और बहनों के सामने अपनी असलियत प्रकट करना ठीक नहीं समझा।

अंगूठी के जादू से उसने अपने लिए पास ही एक मड़ैया बनवाई और वहां रहने लगी। वह अपनी बहनों को नित्य ही अपने पास बुलवा लेती और उन्हें तरह-तरह के स्वादिष्ट पकवान खिलाती।

एक दिन उसका पिता दौड़ा-दौड़ा, उसके पास आया और कहने लगा—"राजकुमारी जी, मेरी पत्नी की हालत बहुत खराब है। उसे बहुत तेज बुखार है। आप एक बार चलकर उसे देख लीजिए। आपने हमारे परिवार के लिए इतना कुछ किया। शायद आपके हाथों के स्पर्श से वह बच जाए...."

राजकुमारी बनी कुगसड़ी मां को देखने दौड़ पड़ी। ब्राह्मणी सचमुच ही बहुत बीमार थी। उसे देखते ही फूट-फूटकर रोने लगी और बोली—"राजकुमारी जी, मुझे मरने की चिंता नहीं, पर मृत्यु से पहले काश, एक बार अपनी खोई हुई बेटी कुगसड़ी को देख लेती!"

"नहीं-नहीं, ऐसा मत सोचिए। आप जल्दी ही ठीक हो जाएंगी।"—राजकुमारी कुगसड़ी ने मां से कहा। वह मन ही मन मां को ठीक करने के उपाय सोचने लगी। तभी उसे अंगूठी की शक्ति की याद आई। मां को ठीक करने की चिंता में वह परी की चेतावनी तक भूल गई। उसने आव देखा न ताव, अपनी अंगुली से उतारकर अंगूठी झटपट मां को पहना दी।

अरे, यह क्या ? अंगूठी के अंगुली से निकलते ही कुगसड़ी अपने असली रूप में आ गई। बेचारी अपने दोनों हाथों से मुंह को छिपाने लगी, पर माता-पिता ने तो झट अपनी खोई हुई बेटी को पहचान लिया। मां की बीमारी उसे देखते ही हवा हो गई।

राजकुमारी से फिर अपने असली रूप में आने और अंगूठी की शक्ति खोने का कुगसड़ी को जरा भी दुःख नहीं था। जीवन में पहली बार अपने माता-पिता का स्नेह पाकर वह खुशी से फूली नहीं समा रही थी।●




चीटू-नीटू
पापा डांट रहे थे, अब तो पढ़ाई ...
उन्होंने यह टाइम-टेबल दिया है। अब हर विषय पर पूरा ध्यान...
हिसाब में कुछ गड़बड़ है, धोबी मां से झगड़ रहा है..
चलो, अभी ठीक कर देते हैं, टाइम-टेबल में हिसाब ही करना है इस समय
मौसी कानपुर जाना चाहती हैं। वहां से लखनऊ की दूरी पूछ रही हैं
यह रहा नक्शा, अभी मौसी को समझा देते हैं। इस समय भूगोल ही पढ़ना था
राजू नदी पर नहाने जा रहा है, क्यों न हम भी...
चलो, नहाना तो सामाजिक-विज्ञान है। एक काम और पूरा...
मजमे वाला राजा-रानी की कहानी सुना रहा है...
इसे इतिहास के खाते में डाल देंगे
चीटू, पापा बुला रहे हैं। मैंने उन्हें आजकी दिनचर्या बताई, तो गुस्सा हो गए
अब आधा घण्टा मुर्गा बनो। इसे पी.टी. के खाते में ....



शीर्षक बताइए

क्या परियां ऐसी होती हैं— इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई छोटा-सा सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ जुलाई' ९३ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस १८-२० कस्तूरबा** गांधी मार्ग, नई दिल्ली-२ के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : सितंबर' ९३ अंक

चित्र : ज्ञान दीक्षित

पुरस्कृत चित्र

अंशुल सक्सैना, आयु १० वर्ष, द्वारा श्री आलोक सक्सैना, ३३ कैन्ट, सागर (म.प्र.)

इनके चित्र भी पसंद आए— सोनिया कोचर, दिल्ली; वरुण वर्मा, कठुआ (ज.क.); बसंत, कलकत्ता; मनोज सागर, देहरादून; कौशल कुमार, अजमेर; दरखशां अंजुम, हजारीबाग (बिहार)





कीर्ति सूरज सवेरा नजमी गौरव

पत्र मिला

□ मई अंक बहुत ही रोचक और मनोरंजक लगा। 'आसमान में एक सितारा', 'हिमालय की भूल', 'छोटा बेटा' कहानियां पसंद आईं। इनका चित्रांकन भी बहुत अच्छा है। चुटकुलों ने मुझे खूब हंसाया। अगला अंक भी ऐसा ही निकले।
— धनसिंहराजपूत, बंगलूर

□ प्राचीन कथा विशेषांक बहुत भाया। तीन वर्ष से इस पत्रिका को लगातार पढ़ती आ रही हूं। 'तेनालीराम' बहुत मजेदार लगा। 'सपने में सुना' और 'चोर के पीछे' कहानियां अच्छी लगीं।
— बेबी जिंदल, सिलिगुड़ी

□ 'नंदन' की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है। इसकी हर एक कहानी शिक्षाप्रद होती है। यह बच्चों और बड़ों दोनों के लिए लाभदायक है। हर अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है।
— प्रांजल जोशी, नई दिल्ली

□ इस अंक में सबसे अच्छी लगीं चित्र-कथाएं—'दूसरा भतीजा' और 'नमन का धन।' 'गायब होने वाली दवा', 'चुटकी भर', 'हरि बोल', 'उड़ा नागराज' और 'चोर के पीछे' कहानियां अनोखी थीं।
— भूपेश खत्री, बुढ़लाडा (पंजाब)

□ प्राचीन कथा विशेषांक 'नंदन' का गौरव है। स्वामी निश्चलानंद सरस्वतीकी कहानी 'हरिबोल' सौर अमरनाथ शुक्ल की 'शाप का ताप' बहुत भाई। 'चीटू-नीटू' और 'चित्र-कथाएं' मजेदार लगीं।
— राधारमण दीक्षित, इटावा

□ नया अंक आया। 'चीटू-नीटू' ने अपना काम जारी रखा। 'नंदन बाल समाचार' से ज्ञान और मनोरंजन का अद्भुत खजाना मिलता है। सामान्य ज्ञान की कुछ बातें भी छापा करें।
— जसविंदर सिंह अरोरा, जालंधर

□ मैं छह वर्षों से 'नंदन' का पाठक हूं। यह एक मनोरंजक और ज्ञान से भरी पत्रिका है। इसे हम लोगों के दादा जी भी पढ़ा करते हैं। दादा जी के पास पैंतालीस और सत्तर पैसे की 'नंदन' भी उपलब्ध है। पत्रिका 'गागर में सागर' वाली कहावत को पूरी तरह चरितार्थ करती है।
— प्रशांतकुमार सिन्हा, मधेपुरा

□ दांतों की जानकारी-सम्बंधित लेख बहुत बढ़िया था। भविष्य में भी ऐसे जानकारीपूर्ण लेख छापा करें।
— फजलदीन कुरेशी, साहवा (राज.)

□ 'नंदन' की प्रतियोगिताओं में भाग लेना अच्छा लगता है। 'आप कितने बुद्धिमान हैं' और 'ज्ञान पहेली' खूब ही रोचक होती है।
— विनोद वत्स, कैथल

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : खूबानी, जबलपुर; शौकत अली, नई दिल्ली; प्रकाशकुमार, छपरा।

आगामी अंक

रिमझिम बरसे पानी : नंदन कहे कहानी

- **कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर : भगवान श्रीकृष्ण—एलबम में।**
- देश-देश के बच्चे, उनके नाम भी : दो पृष्ठों में मनोहारी झांकी
- **दो चित्र कथाएं—दिलचस्प और गुदगुदाने वाली**
- तेनालीराम ने बताए भूत। राजा ने पकड़े। कैसे थे वे?
- **समुद्री तूफान उसे अनजान द्वीप पर ले गया। वहां देवी ने दिया एक अनोखा बाजा और फिर... जापानी कृति उत्सुओ मोनोगतारी का सार-संक्षेप—विश्व की महान कृतियों में**

अपना देश प्रतियोगिता

जीतिए ५० इनाम

प्रत्येक को ५० रुपए की पुस्तकें

आवश्यक सूचना

□ प्रत्येक प्रश्न के आगे कोष्ठक में तीन उत्तर दिए हैं। जो सही हो, उस पर √ निशान लगाएं।

□ सही हल इसी फार्म पर भेजें।

□ अंतिम तिथि— ३१ जुलाई, १९९३।

□ पता— अपना देश प्रतियोगिता, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१।

□ संस्कृत में निर्मित किस फिल्म को इस वर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया है?
(महाभारत/भगवद्गीता/रामायण)

□ भारत के किस नगर में ऐसा मंदिर बन रहा है, जिसमें देवी-देवताओं के स्थान पर विश्व की भाषाएं होंगी? **(जयपुर/पटना/लखनऊ)**

□ हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि नरेश मेहता को हाल में किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है?
(कालिदास/ज्ञानपीठ/व्यास सम्मान)

□ भारत में बनाए गए सुपर कंप्यूटर का नाम।
(परम/एप्पल/सिनक्लेअर)

□ हिमालय की चोटी पर चढ़ने वाली सबसे छोटी उम्र की पर्वतारोही महिला का क्या नाम है?
(संतोष यादव/डिकी डोल्मा/कुंगा भूटिया)

□ भारत का सबसे ऊंचा पर्वत शिखर है —
(कंचनजंघा/नंदादेवी/नीलगिरि)

□ भागीरथी और अलकनंदा नदियों का संगम होने के बाद यह नदी किस नाम से जानी जाती है?
(महानदी/गंगा/यमुना)

□ प्रमुख गणितज्ञ और ज्योतिषी आर्यभट्ट किस राजा के समय में हुआ था?
(चंद्रगुप्त मौर्य/अशोक/चंद्रगुप्त द्वितीय)

□ पशु-पक्षियों की कहानियों की सबसे प्राचीन पुस्तक कौन-सी है?
(जंगल बुक/पंचतंत्र/जातक)

□ खजुराहो के मंदिर किन राजाओं ने बनवाए थे?
(चोल/चंदेल/पल्लव)

□ काली मिट्टी किस उपज के लिए सबसे अधिक सहायक होती है?
(कपास/चावल/जूट)

□ सौर परिवार का सबसे छोटा ग्रह?
(प्लूटो/बुध/शनि)

□ शास्त्रीय गायन के लिए इन्हें तानसेन पुरस्कार से सम्मानित किया गया?
(हरिप्रसाद चौरसिया/भीमसेन जोशी/भूपेन हजारिका)

□ भारत में प्रथम दूरदर्शन केंद्र कहां स्थापित किया गया था? **(दिल्ली/बम्बई/लखनऊ)**

□ खेलों का नेताजी सुभाष राष्ट्रीय संस्थान यहां है।
(ग्वालियर/पटियाला/चंडीगढ़)

□ भारत का कौन-सा राज्य नदियों का राज्य कहलाता है? **(मध्य प्रदेश/आंध्र प्रदेश/महाराष्ट्र)**

अधिक से अधिक दस शब्दों में वाक्य पूरा कीजिए—
मैं अपने जन्म-दिन पर इस तरह की पुस्तकें पाना चाहूंगा, जो ....

अपना देश प्रतियोगिता

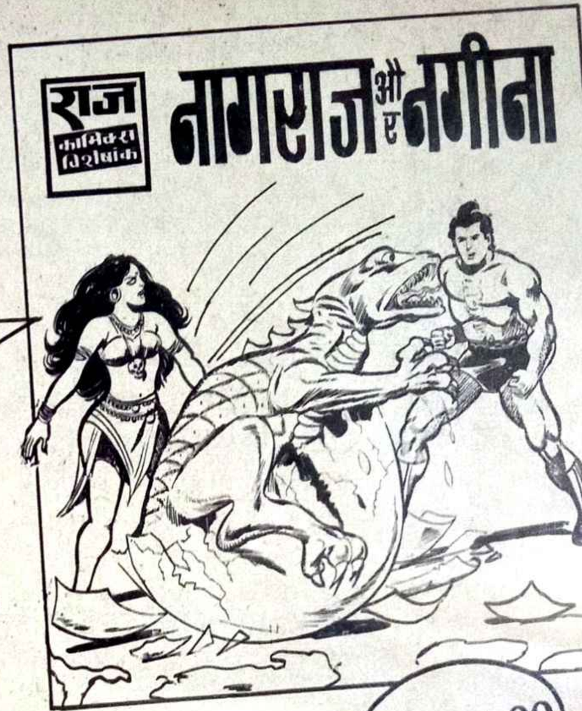
नाम ------------ उम्र ---

पता ----------------

राज कॉमिक्स प्रस्तुत करते हैं

नागराज का नया सनसनीखेज कॉमिक्स विशेषांक

नागराज और नगीना



इस कॉमिक्स के साथ नागराज का एक मैगनेट स्टीकर मुफ्त

मूल्य 15.00

17.6.93 को प्रकाशित हो रहा है।

इसी सैट के अन्य कॉमिक्स

- ☐ गोजिला का महासंग्राम (गोजो)
- ☐ बांकेलाल और खुजालराज (बांकेलाल)
  इस कॉमिक्स के साथ बांकेलाल का एक स्टीकर मुफ्त
- ☐ तिलिस्मदेव और तिलिस्मदेव (तिलिस्मदेव)
- ☐ खुर्रा (थ्रिल हॉरर सस्पेंस)
- ☐ शुक्राल और कालूंगा (शुक्राल)
- ☐ पिद्दी पहलवान और आगरे की सैर

नागराज का एक और रोमांचक कॉमिक्स

थोडांगा की मौत



मूल्य 7.00

इस कॉमिक्स के साथ नागराज का एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त

22.6.93 को प्रकाशित हो रहा है।

इसी सैट के अन्य कॉमिक्स

- ☐ भन्जा (थ्रिल हॉरर सस्पेंस) विशेषांक) भयानक मुखौटा मुफ्त
- ☐ तीन चुड़ैलें (भोकाल) भोकाल का एक स्टीकर मुफ्त
- ☐ अश्वराज और तूताबूता (अश्वराज)
  इस कॉमिक्स के साथ अश्वराज का स्टीकर मुफ्त।
- ☐ बांकेलाल और चोर खोपड़ी (बांकेलाल)
  इस कॉमिक्स के साथ बांकेलाल का एक स्टीकर मुफ्त
- ☐ शुक्राल और काला शासन (शुक्राल)
- ☐ टोपीचंद और हिंसा की जड़

प्रकाशक : राजा पॉकेट बुक्स
330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110009



पुरस्कृत कथाएं

सपने में

बहुत साल पहले की बात है। कर्नाटक के एक गांव में बिल्लू नाम का एक लड़का रहता था। वह भूत-प्रेतों से बहुत डरता था। एक बार बिल्लू की मां ने पोंगल बनाया। उससे कहा कि नानी के घर जाकर पोंगल दे आए। बिल्लू तो था ही आलसी और डरपोक, इसलिए उसने जाने से इंकार कर दिया। उसकी नानी के घर का रास्ता जंगल से गुजरता था।

आखिर मां के बहुत कहने पर, वह जाने को तैयार हो गया। चलते-चलते शाम होने को आई। तभी बीच जंगल में उसे एक घर दिखाई दिया। उसने सोचा रात यहीं पर गुजार लेता हूं। कल सुबह चला जाऊंगा।' बिल्लू ने वहां जाकर घर का दरवाजा खटखटाया। एक बूढ़ी औरत ने दरवाजा खोला। बिल्लू उसकी भयानक सूरत देखकर डर के मारे कांपने लगा। तभी उस बूढ़ी औरत ने पूछा— "क्या बात है बेटा ?" बिल्लू ने कहा— "कुछ नहीं। मुझे अपनी नानी के घर जाना है। सोचा, रात यहीं बिता लूं।"

"हां हां, क्यों नहीं।"— उस बूढ़ी औरत ने कहा। वह बिल्लू को अपने एक कमरे में ले गई। कहा— "इस बिस्तर पर तुम सो जाना। अगर तुम्हें प्यास लगे, तो वहां पर एक मटका रखा है। पानी पी लेना।" यह कहकर बुढ़िया चली गई।

आधी रात को बिल्लू को प्यास लगी। वह पानी पीने के लिए बिस्तर से उठा। अचानक बिल्लू ने देखा कि उस घर की सारी चीजें उड़ने लगीं। वह डर के मारे कांपने लगा। जोर-जोर से चिल्लाने लगा— "मां, मां मु . . . मुझे बचाओ।" बिल्लू बिस्तर से नीचे गिर पड़ा था। तब उसे मालूम पड़ा कि जो भी उसके साथ हुआ, वह तो सिर्फ एक सपना था।

—ललिता डागा, मैसूर

सोमू बदला

सोनपुर नामक गांव में एक जमींदार रहता था। उसका नाम उमाशंकर चौधरी था। वह बड़ा ही नेक और दयालु था। सबकी मदद करता था। मगर उसकी बीवी गायत्री और बेटा सोमू बहुत घमंडी थे। गांव वाले कहते कि जमींदार और उसकी बीवी, बेटे में जमीन-आसमान का फर्क है। सोमू बड़ा ही जिद्दी था। बड़ों का सम्मान करना तो उसने सीखा ही नहीं था। जब घर में उसकी बात नहीं मानी जाती थी, तो वह घर की चीजों को उलटने-पलटने लगता था। इकलौता बेटा होने के कारण मां उससे कुछ न कहती। एक दिन, जमींदार के घर में कुछ गरीब बच्चे आए। जमींदार ने उन्हें पैसे दिए। सोमू के कुछ खिलौने और कपड़े भी उन्हें दे दिए। सोमू को जब यह पता चला, तो वह बहुत नाराज हुआ।

जमींदार को यह पता चला, तो उसे बहुत गुस्सा आया। लेकिन उसे लगा कि गुस्से से शायद वह सोमू को न समझा सके। इसलिए उसने उसे प्यार से बुलाया। कहा— "देखो, इस दुनिया में सबको जीने का हक है। आदमी तो क्या ! पशु-पक्षी, पेड़-पौधे सभी को।"

"लेकिन आपने मेरे खिलौने क्यों दिए ?" —सोमू बोला।

"इसलिए कि जो देना जानता है, उसे ही सब कुछ मिलता है। धरती हमारी मां है। सबको कितना कुछ देती है। ईश्वर सबका पिता है, मगर सब कुछ देकर कुछ नहीं मांगता। उसी ईश्वर ने मुझे पैसे दिए। उसी से तुम्हारे खिलौने-कपड़े आए। यदि गरीबों की मदद की जाए, उनके बच्चों को भी खिलौने-कपड़े मिलें, तो कितना अच्छा हो।" पिता की बात का सोमू पर बहुत प्रभाव पड़ा। उस दिन से वह बिलकुल बदल गया। अब वह भी गरीबों पर दया करने लगा था।

—सुमिता भट्टाचार्य, नाहरलगुन (आ. प्र.)

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : कुलजीत कटोच, चंडीगढ़; पूनम जोशी, शिमला; सीमा सहाय, जयनगर (बिहार); अर्चना यादव, दिल्ली।



AKA/590-HN

*स्टॉक खत्म होने तक

नई पुस्तकें

सिद्ध का प्रसाद— लेखक : लक्ष्मीनिवास बिड़ला; प्रकाशक-सस्ता साहित्य मंडल; एन-९९, कनाट सर्कस, नई दिल्ली; मूल्य : दस रुपए।

श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला ने राजस्थान के लोक-साहित्य का गहराई से अध्ययन किया है। अनेक लोक-कथाएं बड़ी रोचक शैली में उन्होंने लिखी हैं। 'नंदन' के पाठक भी उनकी कथाएं पढ़ते रहे हैं। पुस्तक में ग्यारह सरस लोक-कथाएं हैं।

ये कथाएं हल्की-फुल्की और मनोरंजक हैं। राजस्थान की वीरता, धीरता, चतुराई, राजा-रानी, राजकुमार, दैत्य और जादुई करतब इन कहानियों में खूब हैं। पाठक एक बार पढ़ना शुरू कर दे, तो बीच में छोड़ नहीं पाता। 'सिद्ध का प्रसाद' कहानी में राजकुमार अमृत की खोज में जाता है और कठिनाइयों के बाद अमृत लाने में सफल हो जाता है। यह सचित्र पुस्तक बच्चे ही नहीं, बड़े भी रुचि से पढ़ेंगे।

जंगल टापू— लेखक : जसवीर भुल्लर; अनुवाद-शांता ग्रोवर; प्रकाशक— साहित्य अकादमी रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली-१; मूल्य : चालीस रुपए।

पेड़-पौधे, बंदर, खरगोश, कछुए, कौवे, चील-गिद्ध, शेर, भालू, चूहे और चींटियां, फूल और तितलियों की अनोखी एक दुनिया है। इस दुनिया में एक बालक आ जाता है। बच्चा इन जीव-जंतुओं के साथ पलने-बढ़ने लगता है। नित-नए हंगामे वहां जंगल टापू में होने लगते हैं। इस पुस्तक में उन कारनामों की बारह कहानियां हैं। पंजाबी के प्रमुख लेखक ने इन्हें लिखा है।

अलग तरह की ये कहानियां पाठक को बांध लेती हैं। अनुवाद भी अच्छा है।

पत्र-मित्र

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. अलंकार शर्मा, ९ वर्ष, डी-२८ मंदिर साइड, दक्षिण २४ परगना (प. बं.); २. आराधना वर्मा, १३, २३०/ए रेलवे आवास, दिउलिया, नरकटियागंज, प. चम्पारण; ३. असरार अहमद, १६, मुख्तार अहमद, मुहल्ला नयापुरा नैकाना, महोबा, हमीरपुर; ४. संजयकुमार, १३, सिद्धेश्वर पंडित, ग्रा. सिरवारी चक, पो. मोकामा, पटना; ५. वीनू, १५, ३७८८ नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली; ६. ऋचा गुप्ता, १६, बाबूराम गुप्ता, मु. गढ़ैया १९९, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद; ७. अविनाश केडिया, १६, केडिया स्टोर्स, दिन बाजार, पो. जलपाईगुड़ी (प. बं.); ८. मनोज लाहोटी, १२, रामावतार लाहोटी, २ महावीर उद्योगनगर, पाली-मारवाड़; ९. अंकन, ९, नरेशकुमार कानूनगो, २७ रज्जब अली खां मार्ग, देवास (म.प्र.); १०. दिव्यांशु पांडेय, १३, बी. सी. पांडेय, करकट्टा कालियरी, पो. खेलारी, रांची; ११. सतीश देशबंधु, १५, कपिलदेव प्रसाद, न्यू कालोनी, छोटकी डेल्हा, गया; १२. मनोज शर्मा, १६ मोतीलाल शर्मा, प्रा. लि., एस. एन. नगर, हरिद्वार; १३. मनीषकुमार जैन, १६, २३२ गांधीनगर, निकट-पुलिस चौकी, ललितपुर; १४. नमितकुमार, १२, एफ २३-बी. ए. सी. सी. कालोनी, सिंदरी, धनबाद; १५. अनुराग गोस्वामी, १६, २८९ जी. टी. रोड, एटा; १६. रीता श्रीवास्तव, १५, मदनगोपाल, ए/५ गांधीनगर पड़ाव, ग्वालियर; १७. अनुराग सिन्हा, ११, के. के. वर्मा, रेंटल फ्लैट-२९५ कंकड़बाग, पटना; १८. रत्नेशचंद्र, १२, १० कावेरीपुरम्, दयालबाग, आगरा; १९. मनीष जैन, १३, के. सी. जैन, गोकुल जी का मकान (नरसिंह वार्ड), नरसिंहपुर (म.प्र.); २०. मुदित गुप्ता, १०, ८२१ सैक्टर, २९ अरुण विहार, नौएडा; २१. दीपक गोयल, १६, १/५०९७ए, गली नं. ४, बलवीरनगर, शाहदरा, दिल्ली; २२. ओम्प्रकाश, १५, पी. एन. टी १३/९, बोकारो स्टील सिटी, धनबाद; २३. देवेंद्रकुमार जिंदल, १६, महेशचंद्र-रमेशचंद्र, नई सब्जी मंडी, सबलगढ़, मुरैना; २४. धनराज जैन, १४, नाथू लाल जैन, हास्पिटल रोड, टोंक (राज.); २५. मंजीतश्री गुप्ता, १०, इंद्रजीतकुमार गुप्ता, १४/४८८ एल. आई. जी. हनुमान नगर, पटना; २६. रामगोपाल अग्रवाल, १५, १८ अतींद्र मुखर्जी लेन, हावड़ा; २७. प्रशांत तिवारी, ९, सुरेंद्र तिवारी, हिंदी भवन, छोटा बाजार, दतिया (म.प्र.); २८. अभिषेक कासलीवाल, १६, रतनलाल-रमेशचंद्र जैन, सवाई माधोपुर; २९. नजराना साहीन, १४, मो. अशरफ, गौरी बाजार, देवरिया; ३०. मनीष अग्रवाल, १६, राजकुमार अग्रवाल, तिवरावी टोला, मिर्जापुर।

संगीत, खेल और चित्रकला में रुचि :

१. पंकजकुमार, १२ वर्ष, आर. एन. त्रिवेदी, बैंक आफ इंडिया, मसौढ़ी, पटना; २. कपिल सोनी, ११, २६ स्वर्णकार कालोनी, उमाहर सदन, विदिशा; ३. ललितकुमार स्वामी, १२, चोरुलाल स्वामी, स्टेट बैंक, पो. नोहर, श्रीगंगानगर; ४. बब्लू, १६, डा. हैदर रजा, स्टेशन रोड, कुंदरकी, मुरादाबाद; ५. स्वाति, १६, उपेंद्र झा, प्रोफेसर कालोनी, बेलवनवा, मोतिहारी; ६. अभय मिश्र, १६, १२५ वसंत विहार, नौबस्ता, कानपुर; ७. पंकजकुमार, १५, सीताराम मंडल, माधोपुर, वासुदेवपुर, मुंगेर; ८. अंकित गोयल, १४, शेषाद्रि कालोनी, किला मैदान, इंदौर।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर टंगे ग्राफ में एक रेखा अधिक है।
२. उसके आगे रखे कप का एक हैंडिल गायब है।
३. गेंद गोल्फ-बल्ले के अधिक पास है।
४ उसके पास खड़ी झंडी पतली है।
५. दाईं ओर मेज पर ट्रे में रखे कागजों के ऊपरी कागज पर अधिक लिखा हुआ है।
६. ट्रे के पास रखा कलम नहीं है।
७. दाईं खिड़की का पैलमेट अधिक चौड़ा है।
८. हैंगर स्टैंड का ऊपर का गोल लट्टू नहीं है।
९. सामने दरवाजे में खड़े व्यक्ति के कोट की ऊपरी जेब में रूमाल है।
१०. दरवाजे की चौखट के ऊपरी सिरे की बनावट में अंतर है।

शीर्षक बताइए

परिणाम



नंदन मई '९३ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

आज है जन्मदिन मेरा यार,
कपड़े पहन मैं हूं तैयार।

—पिंकी कुमारी, द्वारिकाप्रसाद, न्यू बहादुरपुर, राजेंद्रनगर, पटना।

हमने टोपी पहनी है, हम देश के प्रहरी हैं।

—कुणाल अग्रवाल, बी-३५ सन-मून सोसायटी, ओल्ड पादरा रोड, आकोटा, बड़ौदा (गुज.)।

टोपी पहन मैं लगता प्यारा,
बच्चों में, मैं सबसे प्यारा।

—मोनिका बगड़िया, डा. मुरारीलाल बगड़िया, बगड़िया अस्पताल, चिड़ावा (राज.)।

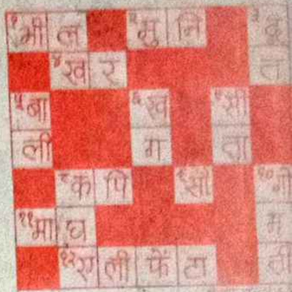
टोपी पहने आप जनाब, लगते हैं पूरे नवाब।

—तनय मठपाल, बी. एन. मठपाल, पंजाब नेशनल बैंक, अल्मोड़ा (उ.प्र.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए: राजेंद्रकुमार लाड़ेकर, राऊरकेला (उड़ीसा); केशवकुमार लाल, शास्त्रीनगर, पटना; सुनील सर्राफ, दमोह (म.प्र.); राजुल जायसवाल, शाहजहांपुर (उ.प्र.)।

नंदन ज्ञान पहेली : २९३

परिणाम



पहेली हल करने में पाठकों ने खूब दिमाग लगाया, लेकिन सर्वश्रेष्ठ हल कोई नहीं आया। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है :

एक गलती : पचीस : प्रत्येक को चालीस रुपए

१. आरती, दिल्ली; २. श्रुति सिन्हा, देवघर; ३. वैभव मालवीय, वाराणसी; ४. रजनीश कुमार, बोकारो; ५. विभाषरंजन, औरंगाबाद; ६. इंद्रप्रकाश वाजपेयी, बांसी (सिद्धार्थनगर); ७. संजयकुमार सिंह, महेशवाड़ा; ८. नवीन गुप्ता, दिल्ली; ९. कुंदनकुमार, डालमियानगर; १०. कवींद्रकुमार, सूर्यपुरा (रोहतास); ११. अर्पिता भटनागर, गोरखपुर; १२. कंचन मेहता, पारसनगर (जमशेदपुर); १३. ईशु कपूर, मुरादाबाद; १४. विकासकुमार, नालंदा; १५. राजेशकुमार, मुजफ्फरपुर; १६. अंकितकुमार, एटा; १७. अरविंदकुमार, गया; १८. असद इमाम, बांका; १९. विवेक हर्षे, लश्कर; २०. कुमार शशिकांत, सुल्तानगंज; २१. अपूर्व सक्सेना, मुरादाबाद; २२. सूर्येशकुमार प्रसाद, छपरा; २३. आनंदकुमार अग्रवाल, साहिबगंज; २४. टुन्ना, पलामू; २५. अनिलकुमार, जंगलरानी (गोरखपुर)।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

 रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९३ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

मनोज कॉमिक्स का

फ्री लक्की बम्पर ड्रा

रुपये

3,00,000.00

निम्न 24 कॉमिक्स पढ़िये और जीतिए

तीन लाख रुपये के आकर्षक इनाम

- प्रथम (एक) पुरस्कार मारुति कार 800 सी. सी. साधारण
- द्वितीय (एक) पुरस्कार हीरो होण्डा
- तृतीय (एक) पुरस्कार कलर टी.वी. 20"
- चतुर्थ (एक) पुरस्कार दिल्ली से नेपाल की यात्रा के दो रिटर्न एयर टिकट
- पंचम (पचास) पुरस्कार स्पोर्ट्स साइकिल



जादूगर कोबरा	देवता का प्याला	विनाशदूत करकेंटा	अजगर दी ग्रेट	आंख से टपका खून	आकाश का जादूगर	शैतान का टोप	इच्छा[illegible]री राम
फिर आया ड्रा्क्युला	यम की तलवार	ड्राक्युला का प्रेतजाल	कुबड़ा शैतान	मुर्दा नं. 402	कंकाला जादूगरनी	हम शैतान हैं	कब्रिस्तान की घड़ी
त्रिकालदेव और गजालू का चक्रव्यूह	त्रिकालदेव और काली खोपड़ी	त्रिकालदेव और पिशाचराज	चार सिर शैतान के	खूनी दानव की वापसी	ड्राक्युला आया मौत लाया	हवलदार बहादुर और नौ अजूबे	हवलदार बहादुर और साठ लाख का बकरा

आवश्यक नोट

उपरोक्त चौबीस कॉमिक्स की बैक पर "फ्री लक्की ड्रा कूपन" छपा है। जब आप चौबीस कॉमिक्स पढ़ लें तो चौबीस कूपन एक साथ इकट्ठे करके भेजें। उन चौबीस कूपनों को एक साथ ड्रा में शामिल करके ड्रा निकाला जाएगा। कृपया अलग-अलग कूपन न भेजें।

इनाम कैसे प्राप्त करें

1. उपरोक्त चौबीस कॉमिक्स के टाइटल की बैक पर लक्की ड्रा कूपन छापा गया है। इन चौबीस कॉमिक्स के कूपन काटकर व उनकी बैक पर साफ-साफ शब्दों में अपना नाम व पूरा पता लिखकर भेजें।
2. आपके चौबीस लक्की ड्रा कूपन हम तक 30 जुलाई 1993 तक अवश्य पहुंच जाने चाहिए।
3. ड्रा 15 अगस्त 1993 को निकाला जाएगा।
4. 30 जुलाई के बाद प्राप्त होने वाले कूपनों को ड्रा में शामिल नहीं किया जाएगा।
5. चौबीस कूपन एक साथ भेजने वालों को ही इस लक्की ड्रा में शामिल किया जाएगा।
6. लक्की ड्रा के विजेताओं को उनके पुरस्कार 30 सितम्बर 1993 तक भेज दिये जायेंगे।
7. लक्की ड्रा के कूपन "मनोज पॉकेट बुक्स" 5/17 बी, रूपनगर, दिल्ली 110007 के पते पर भेजें।
8. अपने लक्की ड्रा कूपन साधारण डाक द्वारा ही भेजें।
9. मनोज पॉकेट बुक्स के कर्मचारी अथवा उनके परिवार के सदस्यों को छोड़कर, सभी भारतीय निवासी इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।
10. प्रथम चार विजेताओं के नाम व फोटो अक्टूबर माह में प्रकाशित राम-रहीम के नये कॉमिक्स 'शेष नाग का खजाना' में प्रकाशित किये जायेंगे और पाँचवें पुरस्कार के पचास विजेताओं के नाम भी इसी कॉमिक्स में छापे जायेंगे।